गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका **अप्रैल-2019**

गुरुत्व ज्योतिष

चैत्र नवरात्र विशेष

NOT FOR SALE



Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
मासिक ई-पत्रिका
अप्रैल 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय
92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

सर्वमंगल-मांगल्ये शिवेसर्वार्थसाधिके ।

शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।

गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते॥

अर्थात: हे देवी नारायणी आप सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याण दायिनी शिवा हो। सब पुरूषार्थो को सिद्ध करने वाली शरणा गतवत्सला तीन नेत्रों वाली गौरी हो, आपको नमस्कार हैं। आप सृष्टि का पालन और संहार करने वाली शक्तिभूता सनातनी देवी, आप गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।

इस मंत्र के जप से माँ कि शरणागती प्राप्त होती हैं। जिस्से मनुष्य के जन्म-जन्म के पापों का नाश होता है। मां जननी सृष्टि कि आदि, अंत और मध्य हैं।

देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।

पसीद विश्वेतरि पाहि विश्वं त्वमीश्चरी देवी चराचरस्य।

अर्थात: शरणागत कि पीड़ा दूर करने वाली देवी आप हम पर प्रसन्न हों। संपूर्ण जगत माता प्रसन्न हों। विश्वेश्वरी देवी विश्व कि रक्षा करो। देवी आप हि एक मात्र चराचर जगत कि अधिश्वरी हो।

नवरात्र के नौ दिनों में तीन देवियों क्रमशः पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती और देवी के नौ रुपों का कमशः शैलपुत्री, ब्रह्माचारिणी, चंद्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री का पूजन किया जाता हैं। नवरात्रे के प्रथम तीन दिन पार्वती के तीन स्वरुपों का पूजन किया जाता हैं, अगले तीन दिन माँ लक्ष्मी के स्वरुपों का पूजन किया जाता हैं और आखिरी के तीन दिन सरस्वती माता के स्वरुपों की पूजा की जाती हैं। उसी प्रकार नौ देवीयों को क्रमशः प्रथम दिन शैलपुत्री, द्वितीय दिन ब्रह्माचारिणी, तृतीय दिन चन्द्रघण्टा, चतुर्थ दिन कुष्माण्डा, पंचम् दिन स्कन्द माता, षष्ठम् दिन कात्यायिनी, साप्तम् दिन कालरात्रि, अष्टम् दिन महागौरी और नौवें दिन सिद्धिदात्री के रुप का पूजन किया जाता हैं।

नवरात्र अर्थात माँ दुर्गा की उपासना में समर्पित नौ रात। **दुर्गा का अर्थ हैं,** दुर्गति नाशिनी हैं, जगत्‌की उत्पत्ति, पालन एवं संचालन तीनों व्यवस्थाएं जिस शक्ति के आधीन सम्पादित होती है वह जगत जननी माँ आदिशक्ति भगवती हैं। माँ दुर्गा के रुप अनंत हैं, लेकिन देवी को प्रधान नौ रूपों में नवदुर्गा के नाम से जाना जाता हैं। आदि शक्ति माँ दुर्गा समग्र लोक में अपनी कृपा और करूणा वर्षाती है, माँ दुर्गा अपने भक्तों में सद्द गुणों का विकास करके उनमें अपनी शक्ति का संचार करते हुवे संसार के समग्र प्राणियों का संचालन करती है।

आज भौतिकता में रत मनुष्य को असंखय उपाय, पूजन, हवन, जप-तप के बाद भी मन की शांति नहीं मिलती। ऐसे में हर तरह से निराश और हारा चुका मनुष्य यदि मां दुर्गा की शरण लेता है जो निश्चित ही माँ दुर्गा उसकी दुर्गति का निवारण करती ही है।

क्योकि, माँ आद्यशक्ति की कृपा से मनुष्य में आत्मबल, दृढ़ विश्वास, दया, प्रेम, भक्ति जैसे सद्‌गुणों का विकास होता हैं। जीवन के इन्हीं मूल्यों को समझ कर मनुष्य जीवन में सच्चा सुख-शांति, वैभव, धन संपदा को

प्राप्त करता है। अन्यथा इस संसार के दलदल से निकलना उसके लिए संभव नहीं है। इसलिए मनुष्य को असंभव को भी संभव कर दिखाने की शक्ति देवी कृपा से ही प्राप्त होती हैं।

मां दुर्गा का पूजन हिन्दू संस्कृती में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं यहीं कारण हैं की सैकड़ों वर्षो से देवी दुर्गा का पूजन छोटे-बड़े सभी प्रादेशिक क्षेत्रों में सर्वाधिक प्रचलित रहा हैं। देवी दुर्गा को आद्य शक्ति भगवती का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। देवी दुर्गा की महिमा अपरंपार हैं, जो अपने भक्तों के दुःखों का नाश करने वाली, दुष्टों से रक्षा करने वाली एवं अपने भक्तों के सकल मनोरथ को सिद्ध करने वाली साक्षात देवी हैं।

नवरात्र के दौरान दस महाविद्या का पूजन भी विशेष महत्वपूर्ण माना गया हैं क्योकी इन को देवी दुर्गा के ही दस रूप माने जाते हैं। दसों महाविद्या में हर महाविद्या अपनी अद्वितीय शक्ति से मनुष्य के समस्त संकटों को दूर करने वाली हैं। इन दस महाविद्याओं के महत्व को विभिन्न धर्मशास्त्रों में अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण माना गया हैं।

नवरात्री के दौरान ग्रह शांति के उपायो को कर के मनुष्य सभी अशुभ ग्रह जनित बाधाऔ को सरलता से दूर कर सकता हैं। नवरात्र का समय ग्रहों को शांत करने हेतु सर्वोत्तम समय माना जाता हैं। क्योकि नवरात्री के दौरान प्रकृति में होने वाले परिवर्तन एवं सामाजिक परिवेश के कारण मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति एवं उसकी संयम शक्ति का अत्याधिक उच्च स्तर की होती हैं। यहि कारण हैं की इस दौरान कि जाने वाली सभी पूजा, उपासना, साधना आदि अत्याधिक लाभप्रद मानी गई हैं। यदि मनुष्य किसी ग्रहों से पीड़ित हो, तो वह इन नौ दिनों में देवी दुर्गा के पूजन के साथ में यदि ग्रह शांति के उपायो को करके शीघ्र लाभ प्राप्त कर सकते हैं, नवरात्र ग्रह शांति के लिए भी उत्तम समय होता है।

विद्वानों का कथन हैं की देवी दुर्गा ही सभी प्रकार के मंत्र, यंत्र और तंत्र का मुख्य आधार हैं। धर्म शास्त्रों में समस्त मंत्र, यंत्र और तंत्र का उद्गम देवी आद्यशक्ति भगवती से माना गया हैं। यदि जन्म कुंडली (जातक/ जन्म पत्री) में कोई ग्रह कमजोर है या अशुभ भाव का स्वामी हो एवं अन्य भाव को देख कर अपना अशुभ प्रभाव दे रहा हो तो जातक के लिए उस ग्रह को शांत करना आवश्यक होता हैं जिस्से ग्रह अपना प्रतिकूल प्रभाव के स्थान पर अनुकूल प्रभाव प्रदान करें।किसी भी ग्रह के प्रभाव को अनुकूल बनाने का उत्तम समय नवरात्र हैं, नवरात्र के दौरान ग्रह शांति के उपायो द्वारा ग्रह के अशुभ प्रभाव को शीघ्र एवं अति सरलता से कम किया जा सकता हैं।

आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से विक्रम संवत 2076 की शुभकामनाएं..

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो मां भगवती की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। मां भगवती से यही प्राथना हैं... चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

चैत्र नवरात्र में देवी आराधना विशेष फलदायी होती है।

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥

अर्थातः देवी को नमस्कार हैं, महादेवी को नमस्कार हैं। महादेवी शिवा को सर्वदा नमस्कार हैं। प्रकृति एवं भद्रा को मेरा प्रणाम हैं। हम लोग नियमपूर्वक देवी जगदम्बा को नमस्कार करते हैं।

उपरोक्त मंत्र से देवी दुर्गा का स्मरण कर प्रार्थना करने मात्र से देवी प्रसन्न होकर अपने भक्तों की इच्छा पूर्ण करती हैं। समस्त देव गण जिनकी स्तुति प्राथना करते हैं। माँ दुर्गा अपने भक्तो की रक्षा कर उन पर कृपा द्रष्टी वर्षाती हैं और उसको उन्नती के शिखर पर जाने का मार्ग प्रसस्त करती हैं। इस लिये ईश्वर में श्रद्धा विश्वार रखने वाले सभी मनुष्य को देवी की शरण में जाकर देवी से निर्मल हृदय से प्रार्थना करनी चाहिये।

देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
पसीद विश्वेतरि पाहि विश्वं त्वमीश्चरी देवी चराचरस्य।

अर्थातः शरणागत कि पीड़ा दूर करने वाली देवी आप हम पर प्रसन्न हों। संपूर्ण जगत माता प्रसन्न हों। विश्वेश्वरी देवी विश्व कि रक्षा करो। देवी आप हि एक मात्र चराचर जगत कि अधिश्वरी हो।

सर्वमंगल-मांगल्ये शिवेसर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते॥

अर्थातः हे देवी नारायणी आप सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याण दायिनी शिवा हो। सब पुरूषार्थो को सिद्ध करने वाली शरणा गतवत्सला तीन नेत्रों वाली गौरी हो, आपको नमस्कार हैं। आप सृष्टि का पालन और संहार करने वाली शक्तिभूता सनातनी देवी, आप गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।

इस मंत्र के जप से माँ कि शरणागती प्राप्त होती हैं। जिस्से मनुष्य के जन्म-जन्म के पापों का नाश होता है। मां जननी सृष्टि कि आदि, अंत और मध्य हैं।

देवी से प्रार्थना करें –

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

अर्थातः शरण में आए हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सब कि पीड़ा दूर करने वाली नारायणी देवी आपको नमस्कार है।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रूष्टा तु कामान सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता हाश्रयतां प्रयान्ति।

अर्थातः देवी आप प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके है। उनको विपत्ति आती ही नहीं। तुम्हारी शरण में गए हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं।

सर्वबाधाप्रशमनं त्रेलोक्यस्याखिलेश्वरी।
एवमेव त्वया कार्यमस्यध्दैरिविनाशनम्।

अर्थातः हे सर्वेश्वरी आप तीनों लोकों कि समस्त बाधाओं को शांत करो और हमारे सभी शत्रुओं का नाश करती रहो।

शांतिकर्मणि सर्वत्र तथा दुः स्वप्रदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु महात्मयं शणुयात्मम।

अर्थातः सर्वत्र शांति कर्म में, बुरे स्वप्न दिखाई देने पर तथा ग्रह जनित पीड़ा उपस्थित होने पर माहात्म्य श्रवण करना चाहिए। इससे सब पीड़ाएँ शांत और दूर हो जाती हैं।

यहि कारण हैं सहस्त्रयुगों से मां भगवती जगतजननी दुर्गा की उपासना प्रति वर्ष वसंत, आश्विन एवं गुप्त नवरात्री में विशेष रुप से करने का विधान हिन्दु धर्म ग्रंथो में हैं।

***

चैत्र नवरात्र व्रत विशेष लाभदायी होता हैं।

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दु संस्कृति के अनुशार नववर्ष का शुभारंभ चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि से होता है। इस दिन से वसंतकालीन नवरात्र की शुरुआत होती हैं। विद्वानो के मतानुशार चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की समाप्ति के साथ भूलोक के परिवेश में एक विशेष परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगता हैं जिसके अनेक स्तर और स्वरूप होते हैं।

इस दौरान ऋतुओं के परिवर्तन के साथ नवरात्रों का तौहार मनुष्य के जीवन में बाह्य और आंतरिक परिवर्तन में एक विशेष संतुलन स्थापित करने में सहायक होता हैं। जिस तरह बाह्य जगत में परिवर्तन होता है उसी प्रकार मनुष्य के शरीर में भी परिवर्तन होता है। इस लिये नवरात्र उत्सव को आयोजित करने का उद्देश्य होता हैं की मनुष्य के भीतर में उपयुक्त परिवर्तन कर उसे बाह्य परिवर्तन के अनुकूल बनाकर उसे स्वयं के और प्रकृति के बीच में संतुलन बनाये रखना हैं।



नवरात्रों के दौरान किए जाने वाली पूजा-अर्चना, व्रत इत्यादि से पर्यावरण की शुद्धि होती हैं। उसीके साथ-साथ मनुष्य के शरीर और भावना की भी शुद्धि हो जाती हैं। क्योकि व्रत-उपवास शरीर को शुद्ध करने का पारंपरिक तरीका हैं जो प्राकृतिक-चिकित्सा का भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। यही कारण हैं की विश्व के प्रायः सभी प्रमुख धर्मों में व्रत का महत्व हैं। इसी लिए हिन्दू संस्कृति में युगो-युगो से नवरात्रों के दौरान व्रत करने का विधान हैं। क्योकी व्रत के माध्यम से प्रथम मनुष्य का शरीर शुद्ध होता हैं, शरीर शुद्ध होतो मन एवं भावनाएं शुद्ध होती हैं। शरीर की शुद्धि के बिना मन व भाव की शुद्धि संभव नहीं हैं। चैत्र नवरात्रों के दौरान सभी प्रकार के व्रत-उपवास शरीर और मन की शुद्धि में सहायक होते हैं।

नवरात्रों में किये गये व्रत-उपवास का सीधा असर हमारे अच्छे स्वास्थ्य और रोगमुक्ति के लिये भी सहायक होता हैं। बड़ी धूम-धाम से किया गया नवरात्रों का आयोजन हमें सुखानुभूति एवं आनंदानुभूति प्रदान करता हैं।

मनुष्य के लिए आनंद की अवस्था सबसे अच्छी अवस्था हैं। जब व्यक्ति आनंद की अवस्था में होता हैं तो उसके शरीर में तनाव उत्पन्न करने वाले सूक्ष्म कोष समाप्त हो जाते हैं और जो सूक्ष्म कोष उत्सजिर्त होते हैं वे हमारे शरीर के लिए अत्यंत लाभदायक होते हैं। जो हमें नई व्याधियों से बचाने के साथ ही रोग होने की दशा में शीघ्र रोगमुक्ति प्रदान करने में भी सहायक होते हैं।

नवरात्र में दुर्गासप्तशती को पढने या सुनने से देवी अत्यन्त प्रसन्न होती हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। सप्तशती का पाठ उसकी मूल भाषा संस्कृत में करने पर ही पूर्ण प्रभावी होता हैं।

व्यक्ति को श्रीदुर्गासप्तशती को भगवती दुर्गा का ही स्वरूप समझना चाहिए। पाठ करने से पूर्व श्रीदुर्गासप्तशती कि पुस्तक का इस मंत्र से पंचोपचारपूजन करें-

नमोदेव्यैमहादेव्यैशिवायैसततंनमः। नमः प्रकृत्यैभद्रायैनियताः प्रणताः स्मताम्॥

जो व्यक्ति दुर्गासप्तशतीके मूल संस्कृत में पाठ करने में असमर्थ हों तो उस व्यक्ति को सप्तश्लोकी दुर्गा को पढने से लाभ प्राप्त होता हैं। क्योकि सात श्लोकों वाले इस स्तोत्र में श्रीदुर्गासप्तशती का सार समाया हुवा हैं।

जो व्यक्ति सप्तश्लोकी दुर्गा का भी न कर सके वह केवल नर्वाण मंत्र का अधिकाधिक जप करें।

देवी के पूजन के समय इस मंत्र का जप करे।

जयन्ती मङ्गलाकाली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधानमोऽस्तुते॥

देवी से प्रार्थना करें-

विधेहिदेविकल्याणंविधेहिपरमांश्रियम्। रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि॥

अर्थातः हे देवि! आप मेरा कल्याण करो। मुझे श्रेष्ठ सम्पत्ति प्रदान करो। मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध इत्यादि शत्रुओं का नाश करो।

विद्वानो के अनुशार सम्पूर्ण नवरात्रव्रत के पालन में जो लोगों असमर्थ हो वह नवरात्र के सात रात्री,पांच रात्री, दों रात्री और एक रात्री का व्रत भी करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं। नवरात्र में नवदुर्गा की उपासना करने से नवग्रहों का प्रकोप शांत होता हैं।

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

क्या किसी के शरीर में देवी-देवता आ सकते हैं ?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

क्या इस आधुनिक युग में किसी मानव शरीर में देवी-देवता आ सकते हैं?

क्या देवी-देवता के मानव शरीर में प्रवेश से स्त्री-पुरुष का अंगारों पर चलना, उपलते दूध या तेल में हाथ डालना, अपने शारीर में कील या नुकीली चीजे फ़साना, इत्यादि अनेको उदाहरण हमें आए दिन देखने को मिल जाते हैं।

क्या देवी-देवता मानव शरीर में प्रवेश कर अजीब तरीके से व्यवहार करते हैं।

इस संसार में एसे लोग हैं जो मानते है या जिनका दावा हैं कि किसी व्यक्ति विशेष के शरीर में किसी एक निश्चित समय, वार, तिथि अथवा व्यक्ति के बुलाने पर उसके शरीर में देवी-देवता प्रवेश करेते हैं, और लोगों के दुःख, दर्द, बीमारी इत्यादी को दूर करते हैं। जिसमे कुछ का मानना हैं देवी-देवता पीड़ित व्यक्ति के मन के सवालों या अथवा उनकी समस्याओं को जान लेते हैं और उनके द्वारा उसके सवाल पुछने से पहले हैं देवी-देवता उसके प्रश्नों का हल बता देते है ?



कुछ जानकारों का यह मानना हैं कि जो लोग अपने शरीर में देवी-देवता आने का दावा करते हैं, और जब उनके शरीर में देवी-देवता का प्रवेश होता हैं या शरीर में होते हैं तब वह लोग स्वयं देवी-देवता की आराधना करते हैं और वहां पर उपस्थित भक्त गणों को देवी-देवता के रुपमें आशीर्वाद भी प्रदान करते हैं। यदि उसके शरीर में स्वयं देवी-देवता का प्रवेश होता हैं तो वह देवी-देवता अपने चित्र या मूर्ति या स्वयं की आराधना या उपासना क्यों करते हैं ?

क्या यह संभब हैं कोई देवे-देवता स्वयं की आराधना या उपासना करते हो?

हमारे देश में कुछ एसी जगहें हैं जहा लोगों का मानना हैं की किसी निश्चित समय, दिन, तिथि को किसी विशेष एक देवी-देवता प्रवेश किसी शरीर में अथवा एक से अधिक देवी-देवता का एक साथ में एकाधिक शरीर में प्रवेश होता हैं?

कुछ का कहना हैं की जब एकाधिक शरीर में देवी-देवता का प्रवेश होता हैं तो वह सब देवी-देवता मिलकर नृत्य करने लगते है?, खेलने लगते हैं?, अंगारों पर नंगे पैर चलने लगते है?, अजीब तरीके की हरकते करने लगते हैं? क्या यह संभव हैं?

कुछ जानकार विद्वानों एवं शोध कर्ता की माने तो यह संभव नहीं हैं, जो लोग यह दावा करते हैं की उनके शरीर में देवी-देवता का प्रवेश होता हैं उन लोगों का उद्देश केवल अन्य लोगों को अपनी और आकर्षित करना या पैसे निकालना अथवा अपना उल्लू सीधा करना ही होता हैं।

अधिकतर विद्वान साधकों के मतानुशार देवी-देवता यदि किसी मनुष्य के समक्ष भी हो तो केवल

मनुष्य को अनुभूति होती हैं। जैसे उस शक्ति की उपस्थिती से वातावरण में आकस्मिक परिवर्तन होना, उनके उपस्थित होने से किसी दिव्य तेज अथवा शक्ति पूंज, वातावरण में सुगंध का फैलना इत्यादि का आभास होता हैं एवं देवी-देवता किसी मनुष्य देह में प्रवेश नहीं करते या वह किसी भी तरह के भौतिक चिह्न नहीं छोड़ते!

कुछ विद्वानों का कथ हैं की देवी-देवता के दर्शन साधक को तब होता है, जब उसके अंतर मन के भाव गहन होते हैं, तब साधना के दौरान एक समय आता हैं जब साधक को यह अनुभव होता हैं की देवी-देवता उसके सामने प्रकट हो गये हैं या उन्हें दर्शन दे रहे हैं, उसी रुप में या आकृति मे होते हैं जो आकृति साधक के अंतर मन में अंकित होती हैं। साधक को अनुभूति होती हैं की वह देवी-देवता उनसे बाते कर रहा हैं, यह साधक की कल्पना का साकार होना है। वह देवी-देवता वास्तव में साधक से बात करती हैं उसके प्रश्नो का उत्तर देती है या उसे आशीर्वाद देकर दर्शन देती हैं। यह सब केवल साधक को ही अनुभूत होती हैं, वहां कोई और अन्य व्यक्ति भी हो तो साधक के अलावा किसी दूसरे को उसकी अनुभूति या दर्शन नहीं होता।

यह सब साधक के गहन भाव के अनुरुप ही प्रकट होती हैं लेकिन किसी दूसरे मनुष्य के शरीर में प्रवेश नहीं करती!

विशेष सूचना: यहा वर्णित लेख केवल लेखक के शोध एवं अनुभवों के आधार पर लिखा गया हैं। इस लेख का उद्देश्य केवल पाठको का मार्गदर्शन मात्र हैं, किसी सी भी व्यक्ति विशेष की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं हैं। इस विषय में भिन्न-भिन्न लोगों के विचार भिन्न हो सकते हैं।

***

पूजा में कलश स्थापन का महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

कलश सरल अर्थ है जल से भरा हुवा सुशोभित पात्र है। हिंदू धर्म में सभी मांगलिक कार्यों में कलश स्थापित करने का विशेष महत्व माना गया हैं।

हिंदू संस्कृति में कलश को एक विशेष आकार के पात्र को कहा जाता हैं, धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कलश के ऊपरी भाग में भगवान विष्णु, मध्य में भगवान शिव और मूल में ब्रह्माजी का निवास होता है। इसलिए पूजन में कलश को देवी-देवता की शक्ति, तीर्थस्थान आदि का प्रतीक मानकर कलश स्थापित किया जाता है। हिंदू धर्म में कलश को सुख-समृद्धि, ऐश्वर्य और मंगल कामनाओं का प्रतीक माना जाता है। इसलिए विभिन्न धार्मिक कार्यों एवं गृहप्रवेश इत्यादि शुभ कार्यों में कार्य की शुभता में वृद्धि एवं मंगल कामनाके उद्देश्य से पूजन के दोरान कलश स्थापित किया जाता है।

कलश में प्रयुक्त होने वाली सामग्री

हिंदू शास्त्रों में उल्लेख हैं की कलश को बिना जल के स्थापित करना अशुभ होता है। इसीलिए कलश को हमेशा पानी इत्यादि सामग्री से भर कर रखना चाहिए। प्राय कलश में जल, पान के पत्ते, अक्षत, कुमकुम, केसर, दुर्वा-कुश, सुपारी, पुष्प, सूत, श्रीफल, अनाज इत्यादि का उपयोग पूजन हेतु किया जाता हैं। विभिन्न पूजन हेतु जल के साथ भिन्न सामग्रीयों का प्रयोग किया जाता है।

कलश का पवित्र जल मनुष्य के मन को स्वच्छ, निर्मल एवं शीतल बनाएं रखने का प्रतिक माना गया हैं। कलश पर स्वस्तिक चिहन बनाने का प्रतिक को शास्त्रों में स्वस्तिक ब्रहमांड का प्रतीक माना गया है। स्वस्तिक को भगवान श्री गणेश का साकार रूप है। मान्त्यता हैं, कि स्वस्तिक के मध्य भाग को भगवान विष्णु की नाभि, चारों रेखाओं को ब्रह्माजी के चार मुख, चार हाथ और चार वेदों के रूप में प्रकट करने की भावना मानी जाती हैं।

कलश के ऊपर श्रीफल स्थापित करना भगवान श्री गणेश का प्रतीक माना जाता है। कलश में सुपारी, पुष्प, दुर्वा इत्यादि आदि सामग्री मनुष्य की जीवन शक्ति का प्रतिक माना जाता हैं।

यहि कारण हैं की हिंदू संस्कृति में सभी प्रकार के धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में कलश स्थापित करने का विशेष महत्व पौराणिक काल से ही रहा हैं।

शुभ कार्यों में श्रीफल चढ़ाने का महत्व?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नारियल शुभता का सूचक होने के कारण ही इसे "श्रीफल" कहा जाता हैं। श्रीफल का महत्व अत्याधिक एवं सर्वत्र रहा हैं। श्रीफल को हिंदी में नारियल, खोपरा, गरी, गोला आदि नाम से जाना जाता हैं, इस मराठी में नारळ, गुजराती में नारियर, श्रीफल, नारियेळ, बंगाली में, नारिकेल, डाबेर नारकेल, पयोधर, कन्नड में तेंगिनकायि, तेंगिन, कॊब्बरि, तेंगिनकायिय मलयालम में नाळिकेरं, वेळिच्चॊण्ण, तेण्णा, नेपालि में नरिवल, नरिवलको तमिल में तेंकाय, तेन्नै, तेनकु, तेलुगु कोब्बरि, आदि नामों से जाना जाता हैं।

नारियल को संस्कृत में श्रीफल कहा जाता हैं। हिंदू धर्म में सभी प्रकार के धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में श्रीफल अर्थात नारियल का विशेष महत्व पौराणिक काल से ही रहा है। हिंदू धर्म की परंपराओं के अनुशार जब किसी नये कार्या या शुभ कार्य का प्रारंभ या शुभारंभ करना हो तो देवी-देवता के सम्मुख श्रीफल अर्पण करने और उसे फोड़ने का विशेष महत्व रहा है।

यहि कारण हैं की सभी प्रकार के धार्मिक कार्यों में अन्य पूजन सामग्रीयों के साथ में श्रीफल भी विशेष रुप से होता हैं। धार्मिक मान्यता के अनुशार श्रीफल का उपयोग बलि कर्म के प्रतिक के रुप में भी किया जाता हैं। बलि कर्म अर्थात उपहार अथवा नैवेद्य की वस्तु। देवी-देवताओंको बलि अर्पण करने का तत्पर्य होता हैं उनकी विशेष कृपा प्राप्त करना या उनकी द्वारा प्राप्त हुई कृपा के प्रति कृतज्ञता अर्थात आभार व्यक्त करना।

श्रीफल फोड़ने की परंपरा

मान्यता हैं की पुरातन काल में हिंदू धर्म में मनुष्य और जानवरों की बलि देने कि परंपरा एक सामान्य प्रथा थी। विद्वानों के मतानुशार जगदगुरु आदि शंकराचार्य जी ने इस बलि परंपरा को तोड़ा और मनुष्य-जानवरों के स्थान पर श्रीफल चढ़ाने की परंपरा शुरु हुई।

श्रीफल को मनुष्य के मस्तक का प्रतिक मान कर बलि स्वरुप चढ़ाया जाता हैं। श्रीफल की जटा को मनुष्य के बाल, श्रीफल की जटा के निकट दिखने वाले तीन गोलाकार चिह्नों को को मनुष्य की आंखों एवं नाक, श्रीफल के कठोर कवच को मनुष्य की खोपड़ी, श्रीफल के पानी को मनुष्य के खून, श्रीफल के गूदे को मनुष्य का दिमाग माना जाता है।

श्रीफल फोड़ने का महत्व

श्रीफल फोड़ने मुख्य उद्देश्य मनुष्य के अहंकार को दूर कर और स्वयं को भगवान समर्पित करने की भावना हैं। मान्यता हैं कि ऐसा करने पर मनुष्य की अज्ञानता एवं अहंकार का कठोर कवच टूट जाता है और यह आत्म शुद्धि और ज्ञान का द्वार खोलता है, जिससे नारियल के गूदे वाले सफेद हिस्से के रूप में देखा जाता है। श्रीफल को देवी-देवता को आर्पभ कर उसका प्रसाद बाँटने की प्रथा हिंदू संस्कृति में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। विद्वानों को मतानुशार श्रीफल के पानी को पीने से मनुष्य को अत्यधिक सुख एवं संतुष्टि की अनुभूति होती हैं।

❋ ❋ ❋

नवरात्र व्रत की सरल विधि?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नव दिनों तक चलने वाले इस पर्व पर हम व्रत रखकर मां के नौ अलग-अलग रूप की पूजा की जाती हैं। इस दौरान घर में किया जाने वाला विधिवत हवन भी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभप्रद हैं। हवन से आत्मिक शांति और वातावरण कि शुद्धि के अलावा घर नकारात्मक शक्तियों का नाश हो कर सकारात्मक शक्तियो का प्रवेश होता हैं।

नवरात्र व्रत

नवरात्र में नव रात्र से लेकर सात रात्री,पांच रात्री, दों रात्री और एक रात्री व्रत करने का भी विधान हैं।
नवरात्र व्रत के धार्मिक महत्व के अलावा वैज्ञानिक महत्व हैं, जो स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभदायक होता हैं। व्रत करने से शरीर में चुस्ती-फुर्ती बनी रहती हैं। रोजाना कार्य करने वाले पाचन तंत्र को भी व्रत के दिन आराम मिलता हैं। बच्चे, बुजुर्ग, बीमार, गर्भवती महिला को नवरात्र व्रत का नहीं रखना चाहिए।

नवरात्र व्रत से संबंधित उपयोगी सुझाव

- व्रत के दौरान अधिक समय मौन धारण करें।
- व्रत के शुरुआत में भूख काफी लगती हैं। ऐसे में नींबू पानी पिया जा सकता है। इससे भूख को नियंत्रित रखने में मदद मिलेगी।
- जहा तक संभव हो निर्जला उपवास न रखें। इससे शरीर में पानी कि कमी हो जाती हैं और अपशिष्ट पदार्थ शरीर के बाहर नहीं आ पाते। इससे पेट में जलन, कब्ज, संक्रमण, पेशाब में जलन जैसी कई समस्याएं पैदा हो सकती हैं।
- एक साथ खूब सारा पानी पीने के बजाए दिन में कई बार नींबू पानी पिएं।
- ज्यादातर लोगो को उपवास में अक्सर कब्ज की शिकायत हो जाती हैं। इसलिए व्रत शुरू करने के पहले त्रिफला, आंवला, पालक का सूप या करेले के रस इत्यादि पदार्थो का सेवन करें। इससे पेट साफ रहता है।
- व्रत के दौरान चाय, काफी का सेवन काफी बढ़ जाता है। इस पर नियंत्रण रखें।

व्रत के दौरान कौनसे खाद्य पदार्थ ग्रहण करें?

- व्रत में अन्न का सेवन वर्जित हैं। जिस कारण शरीर में ऊर्जा की कमी हो जाती हैं।
- अनाज कि जगह फलों व सब्जियों का सेवन किया जा सकता हैं। इससे शरीर को जरुरी ऊर्जा मिलती हैं।
- सुबह के समय आलू को फ्राई करके खाया जा सकता हैं। आलू में कार्बोहाइड्रेट प्रचुर मात्रा में होता है। इस लिए आलू खाने से शरीर को ताकत मिलती है।
- सुबह एक गिलास दूध पिलें। दोपहर के समय फल या जूस लें। शाम को चाय पी सकते हैं।

कई लोग व्रत में एक बार ही भोजन करते हैं। ऐसे में एक निश्चित अंतराल पर फल खा सकते हैं। रात के खाने में सिंघाड़े के आटे से बने पकवान खा सकते हैं।

मां के चरणों निवास करते समस्त हैं तीर्थ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

त्याग और नि:स्वार्थ प्रेम कि प्रति मूर्ति जन्म देने वाली मां अपनी संतान को नौ महिने गर्भ में उसका पोषण कर, असहनीय प्रसव कष्ट सहकर उसे जन्म देती हैं। मां के इस त्याग और नि:स्वार्थ प्रेम का बदला चाहकर भी कोई नहीं चुका सकता।

समस्त व्यक्ति कि प्रथन गुरु मां होती हैं। क्योकि मां से व्यक्ति को जीवन के आदर्श और संस्कार आदि ज्ञान प्राप्त होता हैं। हमारे धर्म शास्त्रो में उल्लेख मिलता हैं कि **उपाध्याओं से दस गुना श्रेष्ठ आचार्य होते हैं, एवं आचार्य से सौ गुना श्रेष्ठ पिता और पिता से हजार गुना श्रेष्ठ माता होती है।** क्योकि मां के शरीर में सभी देवताओं और सभी तीर्थों का वास होता है। इसी लिए विश्व कि सर्वश्रेष्ठ भारतीय संस्कृति में केवल मां को भगवान के समान माना गया हैं। इस लिये मां पूज्य, स्तुति योग्य और आह्वान करने योग्य होती हैं।

महाभारत में भी उल्लेख मिलता हैं कि जब यक्ष ने युधिष्ठिर से सवाल किया कि भूमि से भी भारी कौन हैं? तो युधिष्ठिर ने उत्तर दिया

माता गुरुतरा भूमेः।

अर्थातः मां इस भूमि से भी कहीं अधिक भारी होती हैं।

आदि शंकराचार्य का कथन हैं '

कुपुत्रो जायेत यद्यपि कुमाता न भवति।

अर्थातः पुत्र तो कुपुत्र हो सकता है, पर माता कभी कुमाता नहीं हो सकती।

भगवान श्री रामका वचन हैं।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अर्थातः जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होते हैं।

तैत्तिरीयोपनिषद् में उल्लेख किया गया हैं।

मातृ देवो भवः

शतपथ ब्राह्मण के वचन

मातृमान पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद

अर्थातः जिसके पास माता, पिता और गुरु जेसे तीन उत्तम शिक्षक हों वहीं मनुष्य सही अर्थ में मानव बनता हैं।

संसार में मातृमान वह होता है, जिसकी माता गर्भाधान से लेकर जब तक गर्भ के शेष विधि-विधान पूरे न हो जाएं, तब तक संयमीत और सुशील व्यवहार करे। क्योकि मातृ गर्भ में संस्कारित होने का सबसे बड़ा आदर्श उदाहरण महाभारत में अभिमन्यु का देखने को मिलता हैं, जिसने अपनी मां से गर्भ में ही चक्रव्यूह तोड़ने का उपाय सीख लिया था।

इसी मां कि ममता और नि:स्वार्थ प्रेम को पाने के लिये मनुष्य हि नहीं देवता भी तरसते हैं। इस लिये बार-बार अवतार लेकर अपनी लीलाएं बिखेरने के लिये पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। इस्से ज्ञात होता हैं कि मां के चरणों में ही सभी तीर्थ का पुण्य प्राप्त हो जाता है।

इस लिये बच्चा सबसे पहले जो बोल नीकलते हैं, वह मां शब्द होता हैं, एक बार में ही झटके से बच्चे के मुंह से मां निकल जाता है यानि मां का उच्चारण भी सबसे आसान। अन्य सभी सब्दो में उसे थोडी कठिनाई होती हैं जिस कारण वह उन शब्दो का उच्चराण धीरे-धीरे सिखता हैं। सबसे बडा उदाहरण हैं, जो आपने आये दिन देखा सुना और आजमाय होगा, व्यक्ति जब परेशानी में होता हैं, कष्ट झेल रहा होता हैं, या आकस्मिक संकट आने, किसी आघात से शरीर पर चोट लग जाये तो पर सबसे पेहले मां को याद करता हैं। इस लिये मां को कष्ट देने वाली संतान को दैवि आपदा, दु:ख, कष्ट भोगना पडता हैं। अपने मां का निरादर न करें और उनकी सेवा अवश्य करें।

***

देवी उपासना में उपयुक्त एवं निषिद्ध पत्र पुष्प

संकलन गुरुत्व कार्यालय

देवी के लिये उपयुक्त पत्र-पुष्प का चयन

- ❖ विद्वानों के मतानुशार जो पत्र-पुष्प भगवान शिवजी को प्रिय हैं या जो शिवजी को अर्पण किये जाते हैं वे सभी पत्र-पुष्प देवी भगवती को भी प्रिय हैं ।
- ❖ देवी भगवती को अपामार्ग अधिक प्रिय हैं, इस लिए अधिकतर देवी पूजन में अपामार्ग विशेष रुप से चढ़ाया जाता हैं।
- ❖ इस के अलावा विद्वानो का कथन हैं की जो पत्र-पुष्प शास्त्रोक्त विधान से भगवान शिव की पूजा में निषेध हैं उसे भी देवी पूजन में चढ़ाये जा सकते हैं।
- ❖ देवी भगवती को सभी प्रकार के लाल फूल चढ़ाएं जा सकते हैं क्योकि लाल रंग के सभी फूल भगवतीको प्रिय हैं तथा सुगन्धित समस्त श्वेत फूल भी भगवतीको अधिक प्रिय हैं।
- ❖ देवी भगवती के पूजन में चमेली, मदार, केसर, बेला, श्वेत और लाल फूल, श्वेत कमल, पलाश, तगर, अशोक, चंपा, मौलसिरी, कुंद, लोध, कनेर, आक, शीशम और अपराजित (अर्थात शंखपुष्पी) आदिका उपयोग किया जा सकता हैं।
- ❖ कुछ जानकारों का कथन हैं की देवी भगवती के पूजन में आक और मदार यह दो फूलों को निषेध हैं।
- ❖ यहीं कारण हैं की उक्त दोनों फूल को विभिन्न मत के कारण देवी दुर्गा के पूजन मे उपयोग भी किय जाते हैं और निषिद्ध भी माने जाते हैं।
- ❖ यदि किसी कारण वश जब अन्य उपयुक्त फूल न मिले तब इन दोनोंका उपयोग किया जा सकता हैं ।
- ❖ देवी दुर्गा को छोड़कर देवियों पर इन दोनों को नहीं चढ़ाना चाहिए। लेकिन देवी दुर्गा पर चढ़ाया जा सकता हैं। क्योंकि कुछ जानकारों का मत हैं की दुर्गाकी पूजामें इन दोनोंका विधान शास्त्रोक्त हैं।
- ❖ शमी, अशोक, कर्णिकार (कनियार या अमलतास), गूमा, दोपहरिया, अगस्त्य, मदन, सिन्दुवार, शल्लकी, माधव आदि लताएँ, कुशकी मंजरियाँ, बिल्वपत्र, केवड़ा, कदम्ब, भटकटैया, कमल ये फूल देवी भगवती को प्रिय हैं।
- ❖ आक और मदारकी तरह दूर्वा, तिलक, मालती, तुलसी, भंगरैया और तमाल उपयुक्त एवं प्रतिषिद्ध हैं अर्थात ये शास्त्रोंसे विहित भी हैं और निषिद्ध भी हैं।

* विहित-प्रतिशिद्धके सम्बन्धके तत्त्वसागरसंहिताक में उल्लेख हैं कि जब शास्त्रोंसे विहित फूल न मिल पायें तो विहित-प्रतिषिद्ध फूलोंसे पूजा कि जा सकती हैं।

मनोकामना पूर्ति हेतु नवरात्र में देवी को कैसे अर्पण करें भोग?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के नौ दिनों में तीन देवियों क्रमशः पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती और देवी के नौ रुपों का कमशः शैलपुत्री, ब्रह्माचारिणी, चंद्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री का पूजन किया जाता हैं।, नवरात्रे के प्रथम तीन दिन पार्वती के तीन स्वरुपों का पूजन किया जाता हैं, अगले तीन दिन माँ लक्ष्मी के स्वरुपों का पूजन किया जाता हैं और आखिरी के तीन दिन सरस्वती माता के स्वरुपों की पूजा की जाती हैं। उसी प्रकार नौ देवीयों को क्रमशः प्रथम दिन शैलपुत्री, द्वितीय दिन ब्रह्माचारिणी, तृतीय दिन चन्द्रघण्टा, चतुर्थ दिन कुष्माण्डा, पंचम् दिन स्कन्द माता, षष्ठम् दिन कात्यायिनी, साप्तम् दिन कालरात्रि, अष्टम् दिन महागौरी और नौवें दिन सिद्धिदात्री के रुप का पूजन किया जाता हैं।

नवरात्रे के नौ दिनों तक भक्त के मन में यह कौतुहल होता हैं, कि वह माता को भोग में क्या चढ़ाये, जिससे माँ शीघ्र प्रसन्न हों जाये. हिन्दू धर्म में कोई भी त्यौहार, व्रत-उपवास देवी-देवताओं को भोग, प्रसाद अर्त्पण किये बिना संपन्न नहीं होता है। नवरात्रे के नौ दिन में नौ देवियों को अलग-अलग भोग लगाने का विधान धर्मशास्त्रों में वर्णित हैं।

नवरात्र के प्रथम दिन देवी शैलपुत्री:

नवरात्र के प्रथम दिन मां के शैलपुत्री स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। पर्वतराज (शैलराज) हिमालय के यहां पार्वती रुप में जन्म लेने से भगवती को शैलपुत्री कहा जाता हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके नैवेद्य के रूप में देवी को गाय का घृत (घी) अर्पण करना चाहिए। मां को चरणों चढ़ाये गये घृत को ब्राम्हणों में बांटने से रोगों से मुक्ति मिलती है। देवी कृपा से व्यक्ति सदा धन-धान्य से संपन्न रहता हैं। अर्थात उसे जिवन में धन एवं अन्य सुख साधनो को कमी महसुस नहीं होतीं।

नवरात्र के द्वितीय दिन ब्रह्माचारिणी:

नवरात्र के दूसरे दिन मां के ब्रह्मचारिणी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। क्योकि ब्रह्म का अर्थ हैं तप। मां ब्रह्मचारिणी तप का आचरण करने वाली भगवती हैं इसी कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा गया। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को चीनी का भोग लगाकर दान करना चाहिए। चीनी का भोग लागाने से मनुष्य दीर्घजीवी होता हैं। देवी कृपा से व्यक्ति को अनंत फल कि प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति में तप, त्याग, सदाचार, संयम जैसे सद् गुणों कि वृद्धि होती हैं।

नवरात्र के तृतीय दिन चन्द्रघंटा:

नवरात्र के तीसरे दिन मां के चन्द्रघण्टा स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। चन्द्रघण्टा का स्वरूप शांतिदायक और परम कल्याणकारी हैं। चन्द्रघण्टा के मस्तक पर घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र शोभित रहता हैं। इस लिये मां को चन्द्रघण्टा देवी कहा जाता हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को दूध का भोग लगाकर दान करना चाहिए। दूध का भोग लागाने से व्यक्ति को दुखों से मुक्ति मिलती हैं। देवी कृपा से व्यक्ति को सभी पापों से मुक्ति मिलती हैं उसे समस्त सांसारिक आधि-व्याधि से मुक्ति मिलती हैं। इसके उपरांत व्यक्ति को चिरायु, आरोग्य, सुखी और संपन्न होनता प्राप्त होती हैं। व्यक्ति के साहस एव विरता में वृद्धि होती हैं। व्यक्ति स्वर में मिठास आती हैं उसके आकर्षण में भी वृद्धि होती हैं। चन्द्रघण्टा को ज्ञान की देवी भी माना गया है।

नवरात्र के चतुर्थ दिन कूष्माण्डा:

नवरात्र के चतुर्थ दिन मां के कूष्माण्डा स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। अपनी मंद हंसी द्वारा ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया था इसीके कारण इनका नाम कूष्माण्डा देवी रखा गया। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को मालपुआ भोग लगाकर दान करना चाहिए। मालपुए का भोग लागाने से व्यक्ति कि विपत्ति का नाश होता हैं। देवी कृपा से व्यक्ति को सभी प्रकार के रोग, शोक और क्लेश से मुक्ति मिलती हैं, उसे आयुष्य, यश, बल और बुद्धि प्राप्त होती हैं।

नवरात्र के पंचम दिन स्कंदमाता:

नवरात्र के पांचवें दिन मां के स्कंदमाता स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। स्कंदमाता कुमार अर्थात् कार्तिकेय कि माता होने के कारण, उन्हें स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को केले का भोग लगाकर दान करना चाहिए। केले का भोग लागाने से व्यक्ति कि बुद्धि, विवेक का विकास होता हैं। व्यक्ति के परिवारीकसुख समृद्धि में वृद्धि होती हैं। देवी कृपा से व्यक्ति कि समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती हैं एवं जीवन में परम सुख एवं शांति प्राप्त होती हैं।

नवरात्र के षष्ठम् दिन कात्यायनी

नवरात्र के छठें दिन मां के कात्यायनी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। महर्षि कात्यायन कि पुत्री होने के कारण उन्हें कात्यायनी के नाम से जाना जाता हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को मधु (शहद, महु, मध) का भोग लगाकर दान करना चाहिए। मधु का भोग लागाने से व्यक्ति को सुंदर स्वरूप कि प्राप्ति होती हैं। कात्यायनी देवी को वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले रक्ष-दानव, पापी जीव को अपने तेज से ही नष्ट कर देने वाली माना गया हैं।

नवरात्र के सप्तम् दिन कालरात्रि

नवरात्र के सातवें दिन मां के कालरात्रि स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। कालरात्रि देवी के शरीर का रंग घने अंधकार कि तरह एकदम काला हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को गुड़ का भोग लगाकर दान करना चाहिए। गुड़ का भोग लागाने से व्यक्ति के समस्त शोक दूर होते हैं। कालरात्रि के पूजन से अग्नि भय, आकाश भय, भूत पिशाच इत्यादी शक्तियां कालरात्रि देवी के स्मरण मात्र से ही भाग जाते हैं, कालरात्रि का स्वरूप देखने में अत्यंत भयानक होते हुवे भी सदैव शुभ फल देने वाला होता हैं, इस लिये कालरात्रि को शुभंकरी के नामसे भी जाना जाता हैं। कालरात्रि शत्रु एवं दुष्टों का संहार कर ने वाली देवी हैं।

नवरात्र के अष्टम् दिन महागौरी

नवरात्र के आठवें दिन मां के महागौरी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। महागौरी स्वरूप उज्जवल, कोमल, श्वेतवर्णा होने के कारण इनका नाम महागौरी हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को श्रीफल (नारियल) का भोग लगाकर दान करना चाहिए। श्रीफल (नारियल) का भोग लागाने से व्यक्ति के संताप दूर होते हैं। महागौरी के पूजन करने वाले साधन के लिये मां अन्नपूर्णा के समान, धन, वैभव और सुख-शांति प्रदान करने वाली एवं संकट से मुक्ति दिलाने वाली देवी महागौरी हैं।

नवरात्र के नवम् दिन सिद्धिदात्री

नवरात्र के नौवें दिन मां के सिद्धिदात्री स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। माता सिद्धिदात्री सभी प्रकार की सिद्धियों की प्रदाता माना गया हैं। सिद्धिदात्री को समस्त्य सिद्धियों की स्वामिनी भी माना जाता हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को धान के लावे का भोग लागाने से व्यक्ति को लोक और परलोक का सुख प्राप्त होता हैं। सिद्धिदात्री के पूजन से व्यक्ति कि समस्त कामनाओं कि पूर्ति होकर उसे ऋद्धि, सिद्धि कि प्राप्ति होती हैं। पूजन से यश, बल और धन कि प्राप्ति कार्यो में चले आ रहे बाधा-विध्न समाप्त हो जाते हैं। व्यक्ति को यश, बल और धन कि प्राप्ति होकर उसे मां कि कृपा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कि भी प्राप्ति स्वतः हो जाती हैं।

नवरात्री माँ को प्रसन्न करने का सुनहरा अवसर

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र अर्थात माँ दुर्गा की उपासना में समर्पित नौ रात। **दुर्गा का अर्थ हैं,** दुर्गति नाशिनी हैं, जगत् की उत्पत्ति, पालन एवं संचालन तीनों व्यवस्थाएं जिस शक्ति के आधीन सम्पादित होती है वह जगत जननी माँ आदिशक्ति भगवती हैं। माँ दुर्गा के रुप अनंत हैं, लेकिन देवी को प्रधान नौ रूपों में नवदुर्गा के नाम से जाना जाता हैं। आदि शक्ति माँ दुर्गा समग्र लोक में अपनी कृपा और करूणा वर्षाती है, माँ दुर्गा अपने भक्तों में सद्द गुणों का विकास करके उनमें अपनी शक्ति का संचार करते हुवे संसार के समग्र प्राणियों का संचालन करती है।

भौतिकता में रत मनुष्य को असंखय उपाय, पूजन, हवन, जप-तप के बाद भी मन की शांति नहीं मिलती। ऐसे में हर तरह से निराश और हारा चुका मनुष्य यदि मां दुर्गा की शरण लेता है जो निश्चित ही माँ दुर्गा उसकी दुर्गति का निवारण करती ही है।

क्योकि, माँ आद्यशक्ति की कृपा से मनुष्य में आत्मबल, दृढ़ विश्वास, दया, प्रेम, भक्ति जैसे सद्‌गुणों का विकास होता हैं। जीवन के इन्हीं मूल्यों को समझ कर मनुष्य जीवन में सच्चा सुख-शांति, वैभव, धन संपदा को प्राप्त करता है। अन्यथा इस संसार के दलदल से निकलना उसके लिए संभव नहीं है। इसलिए मनुष्य को असंभव को भी संभव कर दिखाने की शक्ति देवी कृपा से ही प्राप्त होती हैं।

नवरात्र में पूजा उपासना का मुख्य उद्देश्य होता हैं, नवरात्र में माँ दुर्गा की आराधना, मनुष्य के तन-मन और इन्द्रियां संयमित होने लगती हैं। पूर्ण निष्ठा एवं श्रद्धा भाव से कि गई उपवास से मनुष्य का तन संतुलित होता है। मनुष्य के तन के सन्तुलित होने पर योग बल से मनुष्य की इंद्रियां संयमित हो जाती है। इन्द्रियों के संयमित होने पर मनुष्य का मन देवी आराध्या में स्थिर हो जाता है। जिस के बल पर मनुष्य को मनोवांछित लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं, जिसमें जरा भी संसय नहीं हैं।

देवी उपासना के बारे में उल्लेख मिलता हैं की जो मनुष्य अपने मन को स्थिर कर लेता हैं, वह संसार सभी चक्र से छूट जाता है। संसार के किसी प्रकार के विध्न-बाधाएं उसे कष्ट नहीं पहुंचा सकते। वह मनुष्य माँ भगवती दुर्गा के प्रिय वाहन सिंह की तरह निर्भय बन जाता है, संसार की समस्त सिद्धियां अपने पराक्रम के बल पर मिलने लगती हैं। नवरात्र के दौरान शास्त्रोक्त मंत्रों द्वारा देवी से यहीं प्राथना की जाती हैं, की देवी अवगुणों से हमें मुक्त करके सद्‌गुणों से युक्त करें।

नवरात्र में दस महाविद्या की उपासना विशेष लाभप्रद हैं

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दस महाविद्या को देवी दुर्गा के ही दस रूप माने जाते हैं। दसों महाविद्या में हर महाविद्या अपनी अद्वितीय शक्ति से मनुष्य के समस्त संकटों को दूर करने वाली हैं। इन दस महाविद्याओं के महत्व को विभिन्न धर्मशास्त्रों में अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण माना गया हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका।

देवी काली

काली हिन्दू धर्म की एक प्रमुख देवी हैं । देवी काली को मां दुर्गा की दस महाविद्याओं मे से एक माना गया हैं। देवी काली शक्ति का अद्‍भुत स्वरूप है। मां दुर्गा ने काली रूप दैत्यों के संहार के लिए धारण किया था। देवी काली की उत्पत्ति राक्षसों का अंत करने के लिए हुई थी। देवी काली की उत्पत्ति का मूल कारण धर्म की रक्षा और धर्म की स्थापना ही था देवी काली का पूजन भारत के विभिन्न प्रादेशिक क्षेत्रों में सैकड़ो वर्षो से होता आया है। देवी काली का अर्थ काल अर्थात समय से है जो सबको ग्रास कर लेती है। देवी काली का स्वरूप भले ही काला और डरावना लगता हैं लेकिन देवी माँ अपने भक्तों को अभय वरदान देने वाली है। भगवती निराकार होकर भी संसार के समस्त प्राणीयों के दु:ख दूर करने के लिये युग-युग में अनेकों रूप धारण करके अवतार लेती रहीं हैं। देवी काली को काल एवं परिवर्तन की देवी माना गया हैं। देवी काली का पूजन ब्रह्मांड के उद्धारक रूप में किया जाता है।

देवी तारा

माँ तारा को मां दुर्गा की दस महाविद्याओं मे से एक माना गया हैं। विभिन्न तंत्र साधनाओं में देवी तारा की उपासना सर्वसिद्धिदायक मानी जाती है। देवी तारा को सूर्य प्रलय की अघिष्ठात्री देवी उग्र रुप माना गया है। जब मनुष्य को चारों और निराशा और घोर विपत्ति नज़र आरही हो उससे छुटकारा पाने के लिए कोई राह दिखाई नहीं दें रही हो, जब अन्य कोई देवी-देवता सहायक न हो तब मां भगवती तारा के रूप में उपस्थित हो कर अपने भक्त को घोर विपत्ति से मुक्त कराती हैं। देवी तारा के पूजन से शत्रुओं का नाश होता हैं, ज्ञान, सुख-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की वृद्धि होती

हैं। इस के अलावा देवी तारा भोग और मोक्ष प्रदान करने में भी सहायक मानी गई हैं। उग्र तारा, नील सरस्वती और एकजटा देवी तारा के रूप हैं। देवी तारा को ब्रहमांड की प्रमुख देवी एवं राज-राजेश्वरी माना गया हैं।

माता ललिता

माँ ललिता दस महाविद्याओं में से एक हैं यह देवी दुर्गा का एक रूप हैं जो ललिता के नाम से जाना जाता है।। देवी ललिता जी का स्वरुप अत्यंत ही उज्जवल व प्रकाश मान है। कालिका पुराण में उल्लेख हैं की देवी की गौर वर्ण, दो भुजाओं युक्त रक्तिम कमल पर विराजित हैं। ललिता देवी के पूजन से मनुष्य को समृद्धि की प्राप्त होती है। दक्षिणमार्गी शाक्तों (अर्थात भगवती शक्ति की उपासना) के मतानुसार देवी ललिता को चण्डी का स्थान प्राप्त है। माँ ललिता की पूजा पद्धति में ललितासहस्रनाम, ललितोपाख्यान, ललितात्रिशती आदि का पाठ किया जाता है।

माता भुवनेश्वरी

धर्म शास्त्रों में माता भुवनेश्वरी को सृष्टि के समस्त ऐश्वयर की स्वामिनी कहां गया हैं। भुवनेश्वरी माता का वर्ण श्याम तथा गौर वर्ण हैं, स्वरुप एक मुख, चार हाथ हैं चार हाथों में गदा शक्ति का एवं दंड व्यवस्था का प्रतीक है। आशीर्वाद मुद्रा प्रजापालन का प्रतीक है, यह सर्वोच्च सत्ता का प्रतीक हैं। विश्व भुवन में जो, ईश्वर हैं, वह देवी भुवनेश्वरी हैं। देवी के नख में ब्रह्माण्ड का दर्शन होता है। माता भुवनेश्वरी सूर्य के समान लाल वर्ण युक्त दिव्य आभा से युक्त हैं। माता के मंत्र भी अत्यंत प्रभावी माने जाते हैं। माँ के भक्तो के लिए देवी के बीज मंत्र का प्रयोग अन्य देवी-देवताओं की आराधना में विशेष सहायक माना गया हैं माता भुवनेश्वरी के मूल मंत्र और पंचाक्षरी मंत्र का जाप करना विशेष लाभप्रद एवं सिद्धि प्रदान करने वाला हैं।

त्रिपुर भैरवी

धर्म शास्त्रों में माँ त्रिपुर भैरवी को तमोगुण एवं रजोगुण से युक्त माना गया हैं। शास्त्रों में माँ भैरवी के अन्य तेरह स्वरुप बताये गये हैं। माता के किसी भी स्वरुप की साधना मनुष्य को विशेष फल प्रदान करने वाली है। माँ त्रिपुर का स्वरुप कंठ में मुंड माला धारण किये, हाथों में माला धारण किये रहती हैं। माँ त्रिपुर भैरवी स्वयं साधनामय हैं उनका एक हाथ अभय मुद्रा और दूसरा हाथ वर मुद्रा मैं है जो भक्तों को सभी प्रकार के सुख सौभाग्य प्रदाता है। माँ त्रिपुर भैरवी लाल वस्त्र धारण किया है। माँ त्रिपुर भैरवी के पूजन में लाल रंग का विशेष रुप से प्रयोग किया जाता है। त्रिपुर भैरवी सिद्धियाँ प्रदान करने वाली होती हैं।

छिन्नमस्ता

दस महा विद्याओं में देवी छिन्नमस्ता को छठी महाविद्या कहा जाता हैं। मार्कंडेय पुराण व शिव पुराण आदि में छिन्नमस्ता देवी के रूप का स्पष्ट वर्णन किया गया है इनके अनुसार जब देवी ने चंडी का रूप धारण कर राक्षसों का संहार किया। दैत्यों को परास्त कर देवों को विजय दिलवाई तो चारों ओर उनके नाम की जयजय कार होने लगी। लेकिन देवी की सहायक योगिनियाँ अजया और विजया की रक्त पिपासा शांत नहीं हो पाई थी, इस पर उनकी रक्त पिपासा को शांत करने हेतु देवी छिन्नमस्ता ने अपना मस्तक काटकर अपने रक्त से उनकी रक्त प्यास बुझाई। इस कारण माता को छिन्नमस्तिका नाम से जाना जाता हैं।

धूमावती

धूमावती देवी का स्वरुप बड़ा भयंकर प्रतीत होता है। देवी धूमावती का स्वरूप चाहे जितना उग्र या भयंकर क्यों न हो वह संतान के लिए कल्याणकारी ही होता है। आद्यशक्ति भगवती नें धूमावती रूप शत्रुओं के संहार के लिए ही धारण किया है। मां धूमावती के पूजन से मनुष्य को अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। सृष्टी में किसी भी प्राणी को नष्ट करने या संहार करने की सभी क्षमताएं देवी में निहीत हैं। शास्त्रोक्त मतानुषा महर्षि भृगु, ऋषि दुर्वासा, परशुराम आदि की मूल शक्ति धूमावती हैं। धूमावती देवी को सृष्टि में कलह की देवी होने के कारण इनको कलहप्रिय भी कहा जाता

है। वर्षा ऋतु के चार महिने देवी का प्रिय समय होता है इस दौरान देवी की पूजा-अर्चना, साधना आदि करना विशेष लाभप्रद माना जाता है। धूमावती देवी को भय कारक एवं कलह प्रिय भी माना गया हैं। माँ धूमावती भक्तों को सभी कष्टों को मुक्त कर देने वाली है।

माँ बगलामुखी

देवी बगलामुखी दसमहाविद्या में आठवीं महाविद्या हैं। माँ बगलामुखी स्तंभन शक्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं। बगलामुखी देवी रत्नजडित सिहासन पर विराजती हो कर शत्रुओं का नाश करती हैं। माँ बगलामुखी अपने भक्तों के भय को दूर करने वाली और अपने भक्त के शत्रुओं की अनिष्टकारी शक्तियों को नाश करने वाली हैं। माँ बगलामुखी को पीताम्बरा नाम से भी जाना जाता है, क्योकी देवी को पीला रंग अति प्रिय है। धर्मशास्त्रों में देवी बगलामुखी का रंग स्वर्ण के समान पीला बताया गया है। माँ बगलामुखी में संपूर्ण ब्रह्माण्ड की शक्ति का समाहित हैं। माता बगलामुखी की उपासना मुख्य रुप से शत्रुनाश, वाकसिद्धि, वाद विवाद में विजय के लिए की जाती है। माँ बगलामुखी की उपासना से भक्त के सकल शत्रुओं का नाश होता है तथा भक्त का जीवन सभी प्रकार की बाधा से मुक्त हो जाता है।

देवी मातंगी

देवी मातंगी दसमहाविद्या में नवीं महाविद्या हैं। यह वाणी और संगीत की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। देवी मातंगी में संपूर्ण ब्रह्माण्ड की शक्ति का समावेश हैं। देवी मातंगी दांपत्य जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने वाली होती हैं। देवी मातंगी के पूजन से गृहस्थ मनुष्य को सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। देवी मातंगी अपने भक्तों को अभय का फल प्रदान करती हैं। देवी मातंगी अभीष्ट सिद्धि प्रदान करने वाली हैं। देवी मातंगी को उच्छिष्टचांडालिनी व महापिशाचिनी के नाम से भी जाना जाता है। शास्त्रकारों ने मातंगी के विभिन्न प्रकार के भेद बताये हैं, उनमें प्रमुख हैं, उच्छिष्टमातंगी, राजमांतगी, सुमुखी, वैश्यमातंगी, कर्णमातंगी, आदि यह देवी दक्षिण तथा पश्चिम की आधिष्ठाता हैं। ब्रहमयामल में उल्लेख हैं की मातंग मुनि की दीर्घकालीन तपस्या के कारण देवी राजमातंगी रूप में उनके सम्मुख प्रकट हुईं।

देवी कमला

देवी कमला का स्वरुप का वर्ण स्वर्ण जैसी आभा युक्त है। देवी कमला को गजराज सूंड में सुवर्ण कलश लेकर स्नान कराते हैं। कमल पर आसीन हुए मां स्वर्ण से सुशोभित रहती हैं। सुख संपदा की अधिष्ठात्री देवी कमला समृद्धि और ऐश्वर्य दायक हैं। देवी कमला की साधना से साधक धनी और विद्यावान बन जाता है। भक्ति को चारों तरफ यश और सम्मान की प्राप्ति होती है। देवी कमला चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाली और साधक को समस्त बंधनों से मुक्त करा देने वाली हैं। माँ कमला ऐश्वर्य, धन संपदा की आधिष्ठात्री देवी है, इस लिए भौतिक सुख-साधनों की इच्छा रखने वाल सभी मनुष्यों के लिए देवी कमला की अराधना सर्वश्रेष्ठ बतायी गयी हैं।

नवरात्री में करे ग्रह शांति के सरल उपाय

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्री के दौरान ग्रह शांति के उपायो को कर के मनुष्य सभी अशुभ ग्रह जनित बाधाऔ को सरलता से दूर कर सकता हैं। नवरात्र का समय ग्रहों को शांत करने हेतु सर्वोत्तम समय माना जाता हैं। क्योकि नवरात्री के दौरान प्रकृति में होने वाले परिवर्तन एवं सामाजिक परिवेश के कारण मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति एवं उसकी संयम शक्ति का अत्याधिक उच्च स्तर की होती हैं। यहि कारण हैं की इस दौरान कि जाने वाली सभी पूजा, उपासना, साधना आदि अत्याधिक लाभप्रद मानी गई हैं। यदि मनुष्य किसी ग्रहों से पीड़ित हो, तो वह इन नौ दिनों में देवी दुर्गा के पूजन के साथ में यदि ग्रह शांति के उपायो को करके शीघ्र लाभ प्राप्त कर सकते हैं, नवरात्र ग्रह शांति के लिए भी उत्तम समय होता है।

विद्वानों का कथन हैं की देवी दुर्गा ही सभी प्रकार के मंत्र, यंत्र और तंत्र का मुख्य आधार हैं। धर्म शास्त्रों में समस्त मंत्र, यंत्र और तंत्र का उद्‌गम देवी आद्यशक्ति भगवती से माना गया हैं।

यदि जन्म कुंडली (जातक/ जन्म पत्री) में कोई ग्रह कमजोर है या अशुभ भाव का स्वामी हो एवं अन्य भाव को देख कर अपना अशुभ प्रभाव दे रहा हो तो जातक के लिए उस ग्रह को शांत करना आवश्यक होता हैं जिस्से ग्रह अपना प्रतिकूल प्रभाव के स्थान पर अनुकूल प्रभाव प्रदान करें।

किसी भी ग्रह के प्रभाव को अनुकूल बनाने का उत्तम समय नवरात्र हैं, नवरात्र के दौरान ग्रह शांति के उपायो द्वारा ग्रह के अशुभ प्रभाव को शीघ्र एवं अति सरलता से कम किया जा सकता हैं।

विद्वानों का कथ हैं की नौरात्र के नौ दिन यदि प्रतिदेन हर देवीयों के साथ के साथ में एक ग्रह की शांति के उपाय किये जाते तो वह अत्याधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं और जातक को ग्रहों के अशुभ प्रभाव से जो भी परेशानी हो रही है उनसे आपको राहत मिलने लगती है।

नवरात्रों के न दिनों में नवग्रह शांति का करम इस प्रकार है

- ❖ प्रतिपदा के दिन आप मंगल ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ द्वितीय के दिन राहु ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ तृतीया के दिन बृहस्पति ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ चतुर्थी के दिन शनि ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ पंचमी के दिन बुध ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ षष्ठी के दिन केतु ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ सप्तमी के दिन शुक्र ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ अष्टमी के दिन सूर्य ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ नवमी के दिन चन्द्रमा ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।

ग्रह शांति के लिए पूजा शुरू करने से पहले कलश स्थापन और माँ दुर्गा का विधि-विधान से पूजन करना चाहिए। माँ दुर्गा के पूजन के पश्चयात लाल रंग के वस्त्र पर नवग्रह यंत्र स्थापित करें (यदि किसी एक-दो ग्रहों या निधिष्ठ ग्रह के लिए पूजन करना हो तो उसका यंत्र)। यंत्र की स्थापना के पश्चयात नवग्रह के बीज मंत्र का जाप करते हुवे यंत्र का पूजन करे उसके पश्चयात नवग्रह शांति हेतु संकल्प करें।

❖ विद्वानों का मत हैं की नवरात्र के प्रथम दिन मंगल ग्रह की शांति करनी चाहिए। मंगल ग्रह की शांति

हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से मंगल बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात मंगल कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के दूसरे दिन राहु ग्रह की शांति करनी चाहिए। राहु ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से राहु बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात राहु कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के तीसरे दिन बृहस्पति (गुरु) ग्रह की शांति करनी चाहिए। बृहस्पति (गुरु) ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से बृहस्पति (गुरु) बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात बृहस्पति (गुरु) कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के चौथे दिन शनि ग्रह की शांति करनी चाहिए। शनि ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से शनि बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात शनि कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के पांचवे दिन बुध ग्रह की शांति करनी चाहिए। बुध ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से बुध बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात बुध कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के छठे दिन केतु ग्रह की शांति करनी चाहिए। केतु ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से केतु बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात केतु कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के सातवे दिन शुक्र ग्रह की शांति करनी चाहिए। शुक्र ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से शुक्र बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात शुक्र कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के आठवे दिन सूर्य ग्रह की शांति करनी चाहिए। सूर्य ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से सूर्य बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात सूर्य कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के नौवे दिन चंद्र ग्रह की शांति करनी चाहिए। चंद्र ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से चंद्र बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात चंद्र कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र में नवग्रह शांति के विषय में अन्य मत के अनुशार नवरात्र के प्रथम दिन, सूर्य, द्वितीय दिन चंद्रमा, तृतीय दिन मंगल, चतुर्थ दिन बुध, पंचम दिन गुरु(बृहस्पति), षष्ठम दिन शुक्र, सप्तम दिन शनि, अष्टम दिन राहु और नवम दिन केतु का पूजन किया जा सकता हैं।

❖ अंक शास्त्र के अनुशार, नवरात्र के प्रथम दिन, सूर्य, द्वितीय दिन चंद्रमा, तृतीय दिन गुरु(बृहस्पति), चतुर्थ दिन राहु, पंचम दिन बुध, षष्ठम दिन शुक्र, सप्तम दिन केतु, अष्टम दिन शनि और नवम दिन मंगल का पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

❖ नवरात्र की समाप्ति के पश्चयात अगले दिन नवग्रह यंत्र (इसी के साथ यदि किसी अलग यंत्र की स्थापना की हो तो उस यंत्र को भी) को अपने पूजा स्थान में स्थापित करदें उसका प्रतिदिन धूप-दीप से पूजन करने से ग्रह जनित पीड़ाएं स्वतः दूर होने लगती हैं।

नवार्ण मंत्र से होती हैं नवग्रह शांति लेख आप हमारे पूर्व प्रकाशित अंक से प्राप्त कर सकते हैं।

***

नवदुर्गा यंत्र सर्व मंगलकारी व सौभाग्य दाय हैं...

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शैलपुत्री

मां के शैलपुत्री को पर्वतराज (शैलराज) हिमालय के यहां पार्वती रुप में जन्म लेने से भगवती को शैलपुत्री कहा जाता हैं। मां शैलपुत्री को शास्रों में तीनो लोक के समस्त वन्य जीव-जंतुओं का रक्षक माना गया हैं। इसी कारण से वन्य जीवन जीने वाली सभ्यताओं में सबसे पहले शैलपुत्री के मंदिर की स्थापना की जाती हैं जिस सें उनका निवास स्थान एवं उनके आस-पास के स्थान सुरक्षित रहे। मां शैलपुत्री का पूजन करने वाले व्यक्ति को हमेशा धन-धान्य से संपन्न रहता हैं। अर्थात उसे जिवन में धन एवं अन्य सुख-साधनो को कमी महसूस नहीं होतीं।

ब्रह्मचारिणी

मां ब्रह्मचारिणी को विद्वानों ने तप का आचरण करने वाली भगवती हैं होने के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा हैं। क्योकि ब्रह्म का अर्थ हैं तप। शास्त्रो में मां ब्रह्मचारिणी को समस्त विद्याओं की ज्ञाता माना गया हैं। धार्मिक मान्यताके अनुसार देवी ने भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए 1000 साल तक सिर्फ फल खाकर तपस्या रत रहीं और 3000 साल तक शिव कि तपस्या सिर्फ पेड़ों से गिरी पत्तियां खाकर कि, उनकी इसी कठिन तपस्या के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी नाम से जाना गया। ब्रह्मचारिणी का पूजन करने वाले व्यक्ति को अनंत फल कि प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति में तप, त्याग, सदाचार, संयम जैसे सद् गुणों कि वृद्धि होती हैं।

चन्द्रघण्टा

चन्द्रघण्टा का स्वरूप शांतिदायक और परम कल्याणकारी हैं। चन्द्रघण्टा के मस्तक पर घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र शोभित रहता हैं। इस लिये मां को चन्द्रघण्टा देवी कहा जाता हैं। इनके घण्टे सी भयानक प्रचंड ध्वनि से अत्याचारी दैत्य, दानव, राक्षस व दैव भयभित रहते हैं। चन्द्रघण्टा का पूजन करने से व्यक्ति का मणिपुर चक्र जाग्रत हो जाता हैं। देवी की उपासना से व्यक्ति को सभी पापों से मुक्ति मिलती हैं उसे समस्त सांसारिक आधि-व्याधि से मुक्ति मिलती हैं। इसके उपरांत व्यक्ति को चिरायु, आरोग्य, सुखी और संपन्न होनता प्राप्त होती हैं। व्यक्ति के साहस एव विरता में वृद्धि होती हैं। व्यक्ति स्वर में मिठास आती हैं उसके आकर्षण में भी वृद्धि होती हैं। चन्द्रघण्टा को ज्ञान की देवी भी माना गया है।

कूष्माण्डा

कूष्माण्डा देवी ने अपनी मंद हंसी द्वारा ब्रहमाण्ड को उत्पन्न किया था इसीके कारण इनका नाम कूष्माण्डा देवी रखा गया। शास्त्रोक्त उल्लेख हैं, कि जब सृष्टि का अस्तित्व नहीं था, तो चारों तरफ सिर्फ अंधकार हि था। उस समय कूष्माण्डा देवी ने अपने मंद से हास्य से ब्रह्मांड कि उत्पत्ति कि। कूष्माण्डा देवी को जीवन कि शक्ति प्रदान करता माना गया हैं। कूष्माण्डा देवी का पूजन करने वाले व्यक्ति का अनाहत चक्र जाग्रत हो हैं। मां कूष्माण्डा के पूजन से सभी प्रकार के रोग, शोक और क्लेश से मुक्ति मिलती हैं, उसे आयुष्य, यश, बल और बुद्धि प्राप्त होती हैं।

स्कंदमाता

स्कंदमाता कुमार अर्थात् कार्तिकेय की माता होने के कारण, उन्हें स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता हैं। स्कंदमाता का स्वरुप परम कल्याणकारी मनागया हैं। देवी का पूजन करने वाले व्यक्ति का विशुद्ध चक्र जाग्रत होता हैं। व्यक्ति कि समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती हैं एवं जीवन में परम सुख एवं शांति प्राप्त होती हैं।

कात्यायनी

महर्षि कात्यायन की पुत्री होने के कारण उन्हें कात्यायनी के नामसे जाना जाता हैं। मां का पूजन करने वाले व्यक्ति का आज्ञा चक्र जाग्रत होता हैं। देवी

कात्यायनी के पूजन से रोग, शोक, भय से मुक्ति मिलती हैं। कात्यायनी देवी को वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले रक्ष-दानव, पापी जीव को अपने तेज से ही नष्ट कर देने वाली माना गया हैं। कात्यायनी यन्त्र के पूजन से शीघ्र विवाह के योग बनने लगते हैं एवं विवाह में आने वाली बाधाये दूर होती हैं।

कालरात्रि

मां कालरात्रि देवी के शरीर का रंग घने अंधकार कि तरह एकदम काला हैं, सिर के बाल फैलाकर रखने वाली हैं। मां कालरात्रि का पूजन करने वाले व्यक्ति का भानु चक्र जाग्रत होता हैं। कालरात्रि के पूजन से अग्नि भय, आकाश भय, भूत पिशाच इत्यादी शक्तियां कालरात्रि देवी के स्मरण मात्र से ही भाग जाते हैं, कालरात्रि का स्वरूप देखने में अत्यंत भयानक होते हुवे भी सदैव शुभ फल देने वाला होता हैं, इस लिये कालरात्रि को शुभंकरी के नामसे भी जाना जाता हैं। कालरात्रि शत्रु एवं दुष्टों का संहार कर ने वाली देवी हैं।

महागौरी

महागौरी स्वरूप उज्जवल, कोमल, श्वेतवर्णा तथा श्वेत वस्त्रधारी हैं। महागौरी गायन एवं संगीत से प्रसन्न होने वाली 'महागौरी' माना जाता हैं। महागौरी का पूजन करने वाले व्यक्ति का सोमचक्र जाग्रत होता हैं। महागौरी के पूजन से व्यक्ति के समस्त पाप धुल जाते हैं। महागौरी के पूजन करने वाले साधन के लिये मां अन्नपूर्णा के समान, धन, वैभव और सुख-शांति प्रदान करने वाली एवं संकट से मुक्तिदिला ने वाली देवी महागौरी हैं।

सिद्धिदात्री

देवी सिद्धिदात्री का स्वरूप कमल आसन पर विराजित, चार भुजा वाला, दाहिनी तरफ के नीचे वाले हाथ में चक्र, ऊपर वाले हाथ में गदा, बाई तरफ से नीचे वाले हाथ में शंख और ऊपर वाले हाथ में कमल पुष्प सुशोभित रहते हैं। देवी सिद्धिदात्री का पूजन करने वाले व्यक्ति का निर्वाण चक्र जाग्रत होता हैं। सिद्धिदात्री के पूजन से व्यक्ति कि समस्त कामनाओं कि पूर्ति होकर उसे ऋद्धि, सिद्धि कि प्राप्ति होती हैं। पूजन से यश, बल और धन कि प्राप्ति कार्यो में चले आ रहे बाधा-विध्न समाप्त हो जाते हैं। व्यक्ति को यश, बल और धन कि प्राप्ति होकर उसे मां कि कृपा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कि भी प्राप्ति स्वतः हो जाती हैं।

विद्वानों के मातानुशार मां दुर्गा के इन नौ-रुपों की कृपा प्राप्त करने का सरल उपाय नवदुर्गा यन्त्र की स्थापना एवं पूजन एवं दर्शन से विशेष फलों की प्राप्ति होती हैं।

***

आद्यशक्ति के तीन चमत्कारी यंत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

दुर्गा बीसा यंत्र

शास्त्रोक्त मत के अनुशार दुर्गा बीसा यंत्र दुर्भाग्य को दूर कर व्यक्ति के सोये हुवे भाग्य को जगाने वाला माना गया हैं। दुर्गा बीसा यंत्र द्वारा व्यक्ति को जीवन में धन से संबंधित संस्याओं में लाभ प्राप्त होता हैं। जो व्यक्ति आर्थिक समस्यासे परेशान हों, वह व्यक्ति यदि नवरात्रों में प्राण प्रतिष्ठित किया गया दुर्गा बीसा यंत्र को स्थाप्ति कर लेता हैं, तो उसकी धन, रोजगार एवं व्यवसाय से संबंधी सभी समस्यों का शीघ्र ही अंत होने लगता हैं। नवरात्र के दिनो में प्राण प्रतिष्ठित दुर्गा बीसा यंत्र को अपने घर-दुकान-ओफिस-फैक्टरी में स्थापित करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं, व्यक्ति शीघ्र ही अपने व्यापार में वृद्धि एवं अपनी आर्थिक स्थिती में सुधार होता देखेंगे। संपूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य दुर्गा बीसा यंत्र को शुभ मुहूर्त में अपने घर-दुकान-ओफिस में स्थापित करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

मूल्य 730 से:10900 >>Shop Online |Order Now

श्रीदुर्गा यंत्र

श्रीदुर्गा यंत्र शक्ति एवं भक्ति के साथ समस्त सांसारिक सुखों को प्रदान करने वाला सर्वाधिक लोकप्रिय यंत्र हैं। अशुभ शक्तियों के दुष्प्रभाव से बचने के लिए मां दुर्गा की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है। श्रीदुर्गा यंत्र का पूजन व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार की प्राप्ति में भी सहायक सिद्ध होता हैं।

शास्त्रोक्त वर्णन हैं की देवी दुर्गा के श्रीदुर्गा यंत्र के पूजन और दर्शन करने मात्र से देवी प्रसन्न होकर अपने भक्तों की अभिष्ट इच्छाएं पूर्ण होती हैं। माँ दुर्गा के भक्तो की माँ स्वयं रक्षा कर उन पर अपनी कृपा

द्रष्टी वर्षाती हैं और भक्तों को उन्नती के शिखर पर जाने का मार्ग प्रसस्त करती हैं। माँ दुर्गा के भक्तो को देवी की शीघ्र कृपा प्राप्ति हेतु श्रीदुर्गा यंत्र को अपने घर, दुकान, ओफिस इत्यादि में पूजा स्थन में स्थापित करना चाहिये।

विद्वानो का मत हैं की श्रीदुर्गा यंत्र के पूजन से मनुष्य को वाक् सिद्धि, संतान प्राप्ति, शत्रु पर विजय, ऋण-रोग आदि पीड़ा से मुक्ति प्राप्त होती हैं और व्यक्ति को जीवन में संपूर्ण सुखों की प्राप्ति हो इस के लिये यह श्रीदुर्गा यंत्र अचूक एवं सिद्धिदायक माना गया हैं। किसी भी प्रकार के संकट या बाधा की आशंका होने पर इस यंत्र का नियमित पूजन करने से व्यक्ति को सभी प्रकार की बाधा से मुक्ति मिलती हैं और धन-धान्य की प्राप्ति होती हैं।

श्रीदुर्गा यंत्र की पूजा एवं स्थापना के लिए आश्विन एवं चैत्र नवरात्री विशेष लाभ प्रद हैं। क्योकि नवरात्र को आद्य् शक्ति की उपासना का महापर्व माना गया हैं।

मूल्य 730 से:10900 >>Shop Online |Order Now

नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)

यदि कोई व्यक्ति दु:ख, दरिद्रता और भय से अत्याधिक परेशान हो, और चाहकर भी या परीश्रम के उपरांत भी उसी वांच्छित सफलता प्राप्त नहीं हो रही हों तो उसे नवार्ण यंत्र और मंत्र का प्रयोग करना चाहिए। किसी भी प्रकार के जादू-टोना, रोग, भय, भूत, पिशाच्च, डाकिनी, शाकिनी आदि से मुक्ति कि प्राप्ति के लिये मां दुर्गा के नवार्ण यंत्र का विधि-विधान से पूजन-अर्चन सर्वदा फलदायक होता है। दुर्गा दुखों का नाश करने वाली हैं। इसलिए नवरात्रि के दिनो में जब उनकी पूजा पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से कि जाती हैं, तो मां दुर्गा कि प्रमुख नौ शक्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं, जिससे नवों ग्रहों को नियंत्रित करती हैं, जिससे नौग्रहों से प्राप्त होने वाले अनिष्ट प्रभाव से रक्षा होकर ग्रह जनीत पीडाएं भी शांत हो जाती हैं।

नवार्ण मंत्र: *ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे*

नव अक्षरों वाले इस अद्भुत नवार्ण मंत्र के हर अक्षर में देवी दुर्गा कि एक-एक शक्ति समायी हुई हैं, जिस का संबंध एक-एक ग्रहों से हैं।

यदि कोई मनुष्य अत्याधिक कष्ट या संकटों से ग्रस्त हो तो उसे प्रतिदिन स्नान इत्यादिसे शुद्ध होकर नवार्ण यंत्र के सम्मुख नवार्ण मंत्र का जाप 108 दाने कि माला से कम से कम तीन माला जाप अवश्य करना चाहिए।

मूल्य 730 से:10900 >>Shop Online |Order Now

देवी कवच दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदल सकते है...

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दस महा विद्या कवच
Dus Mahavidya Kawach

दस महा विद्या कवच को देवी दस महा विद्या की शक्तियों से संपन्न अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ कवच माना गया हैं।

इस कवच के माध्यम से साधक को दसो महाविद्याओं आशिर्वाद प्राप्त हो सकता हैं। दस महा विद्या कवच को धारण करने से साधक की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महा विद्या कवच साधक की समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने में समर्थ हैं। दस महा विद्या कवच धारण कर्ता को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महा विद्या कवच को श्रद्धापूर्वक धारण करने से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और धारण कर्ता को दस महा विद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महा विद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महा विद्या कवच में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित होता हैं, इस लिए दस महा विद्या कवच को धारण कर के धारण करके व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बना सकता हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दशमहाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मूल्य मात्र: 6400 >>Shop Online |Order Now

नवदुर्गा शक्ति कवच
Navdurga Shakiti Kawach

मां दुर्गा के नवरुप क्रमशः

1. शैलपुत्री
2. ब्रह्मचारिणी
3. चन्द्रघण्टा
4. कूष्माण्डा
5. स्कन्दमाता
6. कात्यायनी
7. कालरात्रि
8. महागौरी
9. सिद्धिदात्री हैं।

नौदेवीयों के कवचों को एक साथ में मिलाकर बनाकर नवदुर्गा कवच का निर्माण किया जाता हैं। जिससे धारण कर्ता को नौ देवीयों का आशिर्वाद एक साथ प्राप्त हो जाता हैं।

नौ देवीयों के कवच का महत्व क्रमशः आपके मार्गदर्शन हेतु यहाँ प्रस्तुत हैं।

देवी शैलपुत्री का कवच धारण करने वाला व्यक्ति सदा धन-धान्य से संपन्न रहता हैं। अर्थात उसे जिवन में धन एवं अन्य सुख साधनो की कमी महसुस नहीं होतीं। व्यक्ति को अनेक प्रकार की सिद्धियां एवं

उपलब्धियां प्राप्त होती हैं।

देवी ब्रह्मचारिणी का कवच धारण करने वाले व्यक्ति को अनंत फल की प्राप्ति होती हैं। कवच के प्रभाव से व्यक्ति में तप, त्याग, सदाचार, संयम जैसे सद् गुणों कि वृद्धि होती हैं।

देवी चन्द्रघण्टा का कवच धारण करने से व्यक्ति को सभी पापों से मुक्ति मिलती हैं उसे समस्त सांसारिक आधि-व्याधि से मुक्ति मिलती हैं। इसके उपरांत व्यक्ति को चिरायु, आरोग्य, सुखी और संपन्नता प्राप्त होती हैं। कवच के प्रभाव से व्यक्ति के साहस एव विरता में वृद्धि होती हैं। व्यक्ति के स्वर में मिठास आती हैं उसके आकर्षण में भी वृद्धि होती हैं। क्योकि, चन्द्रघण्टा को ज्ञान की देवी भी माना गया हैं।

देवी कूष्माण्डा के कवच को धारण करने वाले व्यक्ति को सभी प्रकार के रोग, शोक और क्लेश से मुक्ति मिलती हैं, उसे आयुष्य, यश, बल और बुद्धि प्राप्त होती हैं।

देवी स्कंदमाता के कवच को धारण करने से व्यक्ति की समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती हैं एवं जीवन में परम सुख एवं शांति प्राप्त होती हैं।

देवी कात्यायनी का कवच धारण करने से व्यक्ति को सभी प्रकार के रोग, शोक, भय से मुक्ति मिलती हैं। कात्यायनी देवी को वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले रक्ष-दानव, पापी जीव को अपने तेज से ही नष्ट कर देने वाली माना गया हैं।

देवी कालरात्रि का कवच धारण करने से अग्नि भय, आकाश भय, भूत पिशाच इत्यादी शक्तियां कालरात्रि देवी के स्मरण मात्र से ही भाग जाते हैं, कालरात्रि शत्रु एवं दुष्टों का संहार करने वाली देवी हैं।

देवी महागौरी के कवच को धारण करने से व्यक्ति के समस्त पापों से छुटकारा मिलता हैं। यह मां अन्नपूर्णा के समान, धन, वैभव और सुख-शांति प्रदान करने वाली एवं संकट से मुक्ति दिलाने वाली देवी महागौरी का कवच हैं।

देवी सिद्धिदात्री के कवच को धारण करने से व्यक्ति कि समस्त कामनाओं कि पूर्ति होती हैं उसे ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती हैं। कवच के प्रभाव से व्यक्ति के यश, बल और धन की प्राप्ति आदि कार्यो में हो रहे बाधा-विध्न समाप्त हो जाते हैं। व्यक्ति को यश, बल और धन की प्राप्ति हो कर उसे मां की कृपा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कि भी प्राप्ति स्वतः हो जाती हैं।

मूल्य मात्र: 6400 >>Shop Online |Order Now

श्रीदुर्गा बीसा कवच
Durga Visha Kawach

श्रीदुर्गा बीसा कवच साधक को भक्ति के साथ समस्त सांसारिक सुखों को प्रदान करने वाला सर्वसिद्धिप्रद कवच हैं। श्रीदुर्गा बीसा कवच को धारण करने से साधक को

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार की प्राप्ति में भी सहायता प्राप्त होती हैं।

शास्त्रोक्त वर्णन हैं की माँ दुर्गा का श्रीदुर्गा बीसा कवच को धारण करने से देवी प्रसन्न होकर, शीघ्र ही साधक की अभिष्ट इच्छाएं पूर्ण करती हैं। माँ दुर्गा अपने भक्त की स्वयं रक्षा कर उन पर कृपा दृष्टी करती हैं। श्रीदुर्गा बीसा कवच धारण करने से माँ दुर्गा की कृपा से नौकरी व्यवसाय में साधक को उन्नति के शिखर पर जाने का मार्ग प्रसस्त होता हैं।

श्रीदुर्गा बीसा कवच के प्रभाव से धारण कर्ता को धन-धान्य, सुख-संपत्ति, संतान का सुख प्राप्त होता हैं और शत्रु पर विजय, ऋण-रोग आदि पीड़ा से मुक्ति प्राप्त होती हैं और साधक को जीवन में संपूर्ण सुखों की प्राप्ति होती हैं। जीवन में किसी भी प्रकार के संकट या बाधा की आशंका होने पर श्रीदुर्गा बीसा कवच को श्रद्धापूर्वक धारण करने से साधक को सभी प्रकार की बाधा से मुक्ति मिलती हैं और धन-धान्य की प्राप्ति हो सकती हैं।

मूल्य मात्र: 1900 >>Shop Online |Order Now

नर्वाण बीसा कवच

Narvan Visha Kawach

नवार्ण (नर्वाण) बीसा कवच देवी दुर्गा का कवच हैं। हिन्दू धर्म में देवी दुर्गा को दुःखों का नाश करने वाली कहा गया हैं। देवी दुर्गा की शक्ति को जाग्रत करने हेतु शास्त्रों में नवार्ण मंत्र का जाप करने का विधान बताया गया हैं। विद्वानों का कथन हैं की जो मनुष्य नियमित मंत्र जाप करने में असमर्थ हो उनके लिए नवार्ण बीसा कवच धारण करना मंत्र जप के समान फल प्रदान करने वाला हैं। नवार्ण बीसा कवच को धारण करने से व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार की प्राप्ति में भी सहाता प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र: 1900** >>Shop Online |Order Now Email US | Help Desk:

91+ 9338213418, 91+ 9238328785

कनकधारा यंत्र



आज के भौतिक युग में हर व्यक्ति अतिशीघ्र समृद्ध बनना चाहता हैं। कनकधारा यंत्र कि पूजा अर्चना करने से व्यक्ति के जन्मों जन्म के ऋण और दरिद्रता से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं। यंत्र के प्रभाव से व्यापार में उन्नति होती हैं, बेरोजगार को रोजगार प्राप्ति होती हैं। कनकधारा यंत्र अत्यंत दुर्लभ यंत्रो में से एक यंत्र हैं जिसे मां लक्ष्मी कि प्राप्ति हेतु अचूक प्रभावा शाली माना गया हैं। कनकधारा यंत्र को विद्वानो ने स्वयंसिद्ध तथा सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ माना हैं। आज के युग में हर व्यक्ति अतिशीघ्र समृद्ध बनना चाहता हैं। धन प्राप्ति हेतु प्राण-प्रतिष्ठित कनकधारा यंत्र के सामने बैठकर कनकधारा स्तोत्र का पाठ करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। इस कनकधारा यंत्र कि पूजा अर्चना करने से ऋण और दरिद्रता से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं। व्यापार में उन्नति होती हैं, बेरोजगार को रोजगार प्राप्ति होती हैं। जैसे श्री आदि शंकराचार्य द्वारा कनकधारा स्तोत्र कि रचना कुछ इस प्रकार की गई हैं, कि जिसके श्रवण एवं पठन करने से आस-पास के वायुमंडल में विशेष अलौकिक दिव्य उर्जा उत्पन्न होती हैं। ठिक उसी प्रकार से कनकधारा यंत्र अत्यंत दुर्लभ यंत्रो में से एक यंत्र हैं जिसे मां लक्ष्मी कि प्राप्ति हेतु अचूक प्रभावा शाली माना गया हैं। कनकधारा यंत्र को विद्वानो ने स्वयंसिद्ध तथा सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ माना हैं। जगद्गुरु शंकराचार्य ने दरिद्र ब्राह्मण के घर कनकधारा स्तोत्र के पाठ से स्वर्ण वर्षा कराने का उल्लेख ग्रंथ शंकर दिग्विजय में मिलता हैं। कनकधारा मंत्र:- ॐ वं श्रीं वं ऐं ह्रीं-श्रीं क्लीं कनक धारयै स्वाहा' >> Order Now

माँ दुर्गा की कृपा प्राप्ति हेतु सरल साधनाएं

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

प्रभावशाली दुर्गा साधना

मां दुर्गा का पूजन हिन्दू संस्कृती में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं यहीं कारण हैं की सैकड़ों वर्षो से देवी दुर्गा का पूजन छोटे-बड़े सभी प्रादेशिक क्षेत्रों में सर्वाधिक प्रचलित रहा हैं। देवी दुर्गा को आद्य शक्ति भगवती का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। देवी दुर्गा की महिमा अपरंपार हैं, जो अपने भक्तों के दु:खों का नाश करने वाली, दुष्टों से रक्षा करने वाली एवं अपने भक्तों के सकल मनोरथ को सिद्ध करने वाली साक्षात देवी हैं।



साधना हेतु सामग्री:-

माला: स्फटिक

दिशा: उत्तर या पूर्व

आसन: लाल आसन

वस्त्र: लाल वस्त्र,

अन्य पूजन सामग्रीयां: देवी प्रतिमा, पूजन हेतु सिंदूर, रक्तचंदन, लाल या पीले फूल, धूप, दीप, हवन हेतु तिल, घी, जौ, अक्षत, दूर्ब, दही, आदि नैवेद्य, पीतल या तांबे का कलश, कलश स्थापना हेतु गेहूं, आदि शुभ धान, आम के पल्लव, हवन हेतु लकड़ियां आदि हवन सामग्रीयां।

मंत्र:–

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चै ।

ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चै ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥

Om Aim Hreem Kleem Chamundaye Vichchai |

Om Gloum Hum Kleem Jum Sah Jvalaya Jvalaya Jvala Jvala Prajvala Prajvala Aim Hreem Kleem Chamundaye Vichchai Jvala Ham Sam Lam Ksham Phat Swaha ||

विधि:–

साधना से पूर्व पूजन स्थान की भूमि एवं सामग्री आदि को पवित्रिकरण करके विधि-विधान से स्वच्छ करलें। देवी दुर्गा की साधना प्रातःकाल से प्रारंभ करें। साधना का प्रारंभ नवरात्र में करना उत्तम माना गया हैं, यदि नवरात्र में साधना करना संभव न हो तो, साधना किसी भी मास की शुक्ल पक्ष प्रतिपदा अर्थात एकम से प्रारंभ की जा सकती हैं, प्रतिपदा से लेकर दसवीं तिथि तक दस दिनों में साधना संपन्न करलें।

आग्नेय कोण में वेदी बनाकर उत्तर दिशा या पूर्व की ओर मुख में आसन लगाये। विधि-विधान से कलश की स्थापना करें। कलश को गेहूं, धान आदि शुभ अन्न पर स्थापित करें। कलश में आम्रपल्लव के डंठल जलमे रहे इस प्रकार डाल दें। कलश पर दीपक प्रज्ज्वलित करके रख दें। फिर हवन कुंड को अग्नि से प्रज्ज्वलित करें। उक्त

समस्त विधि-विधार करते हुवे मां दुर्गा के मंत्र का जप करते रहें। उक्त समस्त्र क्रिया के पश्चयात आसन पर बैठे-बैठे देवी की तेजस्वी प्रतिमा या स्वरुप का त्राटक में ध्यान करते हुवे प्रतिमा को स्थापित करें। प्रतिमा को स्थापित कर। मंत्र पढ़ते हुवे अग्नि में हवि दें। दस दिनों तक प्रतिदिन 1188 मंत्रों का जप करें। मंत्र जप के दौरान देवी दुर्गा की प्रतिमा पर अपना ध्यान बनाये रखें।

लाभ: उक्त विधि से साधना करने से मां दुर्गा के आशिर्वाद से साधक के आत्मबल, ओज, तेज, बल, पराक्रम में वृद्धि होती हैं, उसे स्वास्थ्यलाभ प्राप्त होता हैं। साधक को अपने कार्य में मनोवांछित सफलता की प्राप्ति होती हैं।

दुर्गाष्टाक्षर मंत्र साधना

विधि:–

दुर्गाष्टाक्षर मंत्र अत्यंत्र गोपनीय हैं। शास्त्रों में दुर्गाष्टाक्षर मंत्र को शीघ्र सिद्धिदायक एवं दुर्लभ माना गया हैं। इस लिए दुर्गाष्टाक्षर मंत्र के बारे में उल्लेख किया गया हैं..

साक्षात्सिद्धिप्रदो मंत्रो दुर्गायाः कलिनाशनः ।
अष्टाक्षरो अष्ट सिद्धिशो गोपनीयो दिगंबरैः ॥



अर्थात: यह दुर्गा मंत्र साक्षात सिद्धि प्रदान करने वाला, कलेशों का नाश करने वाला हैं, आठ अक्षरों वाले इस मंत्र में अष्ट सिद्धि या समाहित हैं अतः यह अत्यंत गोपनीय हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री दुर्गाष्टाक्षर मन्त्रस्य महेश्वर ऋषिः,
श्री दुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवता, दुं बीजम्।,
ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकाय नमः इति दिग्बंधः,
धर्मार्थ काम मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

दुर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटाम्
शंखाब्जखड्ग शर खेटक शूल चापान् ।
संतर्जनी च दधतीं महिषासनस्थां
दुर्गा नवारकुल पीठगतां भजेऽहम् ॥

मंत्र:–

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।
Om Hreem Dum Durgayai Namah ।

लाभ: दुर्गाष्टाक्षर मंत्र का एक लाख जप करने से यह मंत्र सिद्ध होता है। जप हेतु प्रतिदिन निश्चित समय का चुनाव करें और प्रतिदिन अपनी सुविधा के अनुशार 5, 11, 21 दिन में में किसी निश्चित संख्या में एक लाख जप पूर्ण करें। मंत्र जाप पूर्ण होने के पश्चयात प्रतिदिन प्रातः एक माला जप करें। इस मंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने से साधक को वाक् सिद्धि, संतान प्राप्ति, शत्रु विजय, रोग-मुक्ति और जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए दुर्गाष्टाक्षर मंत्र अचूक एवं सिद्धिदायक है ।

दुर्गा स्मृता मंत्र साधना

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चै ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारा मार्द्राज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् , ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जंतोः स्वस्थैः स्मृतामति मतीव शुभां ददासि। यदंति, यच्च दूरके भयं विंदति मामिह पवमान वितज्जहि, दारिद्र्य दुःख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र चित्ता ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारा मार्द्राज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयंतीं, पद्मेस्थितां पद्मम् वर्णा तामिहोपह्व्ये श्रियम्, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चै ।

उक्त दुर्गा स्मृता मंत्र के एक लाख जप करने से मंत्र सिद्ध होता हैं। जप पूर्ण होने पर मंत्र की दशांश होम करना चाहिए। दुर्गा स्मृता मंत्र के सिद्ध होने पर साधक को जीवन में सभी कार्यों में पूर्ण सिद्धियं प्राप्त होने लगती हैं। साधक संसार में सर्वत्र आदरणिय हो जाता हैं।

दुर्गा साधना

साधना हेतु सामग्रीः-

मालाः स्फटिक | दिशाः उत्तर | जप संख्याः सवा लाख | आसनः सफेद | वस्त्रः लाल वस्त्र, | समय : रात्री काल | अन्य पूजन सामग्रीयांः दुर्गा यंत्र, घी का दीप, जलपात्र

मंत्रः–

हुं दुर्गायै नमः ।

Hum Durgayai Namah |

विधिः-

किसी भी मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी या चतुर्दशी से यह प्रयोग प्रारंभ करें।

विद्वानों का कथ हैं की पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वार से जाप करने से मां दुर्गा के दर्शन अवश्य होते हैं।

मंत्र जाप की समाप्ति पर किसी कुंवारी कन्या को भोजन कराये उसे यथा शक्ति भेट एवं दक्षिणा दें कर प्रसन्न करने से यह साधना संपन्न होती हैं।

लाभः देवी दुर्गा की असिम कृपा प्राप्त होती हैं, साधक को जीवन में सभी प्रकार के सुख साधनों की प्राप्ति होती हैं।

नवरात्र व्रतकथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

प्राचीन काल में चैत्र वंशी सुरथ नामक एक राजा राज करते थे। एक बार उनके शत्रुओं ने आक्रमण कर दिया और उन्हें युद्ध में हरा दिया। राजा को बलहीन देखकर उसके दुष्ट मंत्रियों ने राजा की सेना और खजाना अपने अधिकार में ले लिया। जिसके परिणाम स्वरूप राजा सुरथ दुखी और निराश होकर वन की ओर चले गए और वहां महर्षि मेधा के आश्रम में निवास करने लगे।

एक दिन आश्रम में राजा की भेंट समाधि नामक एक वैश्य से हुई, जो अपनी स्त्री और पुत्रों के दुर्व्यवहार से अपमानित होकर वहां निवास कर रहा था।

समाधि ने राजा को बताया कि वह अपने दुष्ट स्त्री और पुत्र आदिकों से अपमानित होने के बाद भी उनका मोह नहीं छोड़ पा रहा है। उसके चित्त को शान्ति नहीं मिल पा रही है। इधर राजा का मन भी उसके अधीन नहीं था। राज्य, धनादि की चिंता अभी भी उसे बनी हुई थी, जिससे वह बहुत दुखी थे। तदान्तर दोनों महर्षि मेधा के पास गए।

महर्षि मेधा यथायोग्य सम्भाष्ण करके दोनों से वार्ता आरंभ की। उन्होने बताया "यद्यपि हम दोनों अपने स्वजनों से अत्यंत अपमानित और तिरस्कृत होकर यहाँ आए हैं, फिर भी उनके प्रति हमारा मोह नहीं छूटता । इसका क्या कारण है?

महर्षि मेधा ने कहा मन शक्ति के अधीन होता है। आदिशक्ति भगवती के दो रूप हैं- विद्या और अविद्या। विद्या मन का स्वरूप है तथा अविद्या अज्ञान का स्वरूप है। अविद्या मोह की जननी है किंतु लोग मां भगवती को संसार का आदि कारण मानकर भक्ति करते हैं, मां भगवती उन्हें जीवन मुक्त कर देती है।" राजा सुरध ने पूछा- भगवन वह देवी कौन सी है, जिसको आप महामाया कहते हैं?

हे ब्रह्मन्। वह कैसे उत्पन्न हुई। और उसका क्या कार्य है? उसके चरित्र कौन कौन से हैं? प्रभो ! उसका प्रभाव, स्वरूप आदि के बारे में हमे विस्तार में बताइए।

महर्षि मेधा बोले - राजन्! वह देवी तो नित्यास्वरूप है, उनके द्वारा यह संसार रचा गया है। तब भी उसकी उत्पत्ति अनेक प्रकार से होती है, जिसे मैं बताता हूं। संसार को जलमय करके जब भगवान विष्णु यागनिद्रा का आश्रय लेकर, शेषशय्या पर सो रहे थे, तब मधु-कैटभ नाम के असुर उनके कानों के मैल से प्रकट हुए और वह श्री ब्रह्माजी को मारने के लिए तैयार हो गए। उनके इस भयानक रूप को देखकर ब्रह्माजी ने अनुमान लगा लिया कि भगवान विष्णु के सिवाय मेरा कोई रक्षक नहीं है। किन्तु विडम्बना यह थी कि भगवान विष्णु सो रहे थे। तब उन्होंने श्री भगवान को जगाने के लिए उनके नेत्रों में निवास करने वाली योगनिद्रा की स्तुति की।

तब सभीगुण अघिष्ठात्री देवी योगनिद्रा भगवान विष्णु के नेत्र, नसिका, मुख, बाहु और ह्वदय से निकलकर ब्रह्मा जी के सामने खड़ी हो गई। योगनिद्रा के निकलते ही श्रीहरि तुरंत जाग उठे। उन्हें देखकर राक्षस क्रोघित हो उठे और युद्ध के लिए उनकी तरफ दौड़े। भगवान विष्णु और उन राक्षसों में पाँच हजार वर्षो तक युद्ध हुआ। अंत में दोनों राक्षसों ने भगवान की वीरता देख कर उन्हें वर माँगने को कहा।

भगवान ने कहा यदि तुम मुझ पर प्रसन्न हो तो अब मेरे हाथों मर जाओ। बस, इतना ही वर में तुम से माँगता हूँ।

महर्षि मेधा बोले - इस तरह से जब वह धोखे में आ गए और अपने चारों ओर जल ही जल देखा तो भगवान से कहने लगे कि जहां जल न हो, उसी जगह हमारा वध कीजिए।

तथास्तु कहकर भगवान श्री हरि ने उन दोनो को अपनी जांघ पर लिटा कर सिर काट डाले।

महर्षि मेधा बोले इस तरह से यह देवी श्री ब्रह्माजी की

स्तुति करने पर प्रकट हुई थी, अब तुम से उनके प्रभाव का वर्णन करता हूं, जिसको ध्यान से सुनो - प्राचीन काल में देवताओं के स्वामी इंद्र और असुरों के स्वामी महिषासुर के बीच पूरे सौ वर्षो तक युद्ध हुआ था। इस युद्ध में देवताओं की सेना परास्त हो गई और इस प्रकार देवताओं को जीत महिषासुर इन्द्र बन बैठा हारे हुए देवता श्री ब्रह्माजी को साथ लेकर भगवान शंकर व विष्णु जी के पास गए और अपनी हार का सारा वृतांत उन्हें कह सुनाया। उन्होने महिषासुर के वध की प्रथना के उपाय की प्रर्थना की। साथ ही राज्य वापस पाने के लिए उनकी कृपा की स्तुति की।

देवताओं की बातें सुनकर भगवान विष्णु और शंकर जी को देवताओं पर बड़ा गुस्सा आया। गुस्से से भरे हुए भगवान विष्णु के मुख से बड़ा भारी तेज निकला और उसी प्रकार का तेज भगवान शंकर, ब्रह्मा आदि देवताओं के मुख से प्रकट हुआ, जिससे दसों दिशाएं जलने लगी। अंत में यही तेज एक देवी के रूप में परिवर्तित हो गया।

देवी ने सभी देवताओं से आयुध, शक्ति तथा आभूषण प्राप्त कर उच्च स्वर में गगनभेदी गर्जना की। जिससे समस्त विश्व में हलचल मच गई पृथ्वी, पर्वत आदि डोल गए। क्रोघित महिषासुर दैत्य सेना लेकर इस सिंहनाद की ओर दौड़ा। उसने देखा कि देवी की प्रभा से तीनों लोक प्रकाशित हो रहे हैं। महिषासुर ने अपना समस्त बल और छ्ल लगा दिया परंतु देवी के सामने उसकी एक न चली। अंत में वह देवी के हाथों मारा गया। आगे चलकर यही देवी शुम्भ-निशुम्भ नामक असुरों का वध करने के लिए गौरी देवी के शरीर से उत्पन्न हुई।

उस समय देवी हिमालय पर विचर रहीं थी। जब शुम्भ-निशुम्भ के सेवकों ने उस परम मनोहर रूप वाली जगदंबा देवी को देखा और तुरन्त अपने स्वामी के पास जाकर कहा कि "हे महाराज ! दुनिया के सारे रत्न आपके अघिकार में हैं। वे सब आपके यहाँ शोभा पाते हैं। ऐसे ही एक स्त्री रत्न को हमने हिमालय की पहाडियों में देखा है। आप हिमालय को प्रकाशित करने वाली दिव्य क्रांति युक्त इस देवी का वरण कीजिए। यह सुनकर दैत्यराज शुम्भ ने सुग्रीव को अपना दूत बनाकर देवी के पास अपना विवाह प्रस्ताव भेजा। देवी ने प्रस्ताव को ना मानकर कहा जो मुझसे युद्ध में जीतेगा। मैं उससे विवाह करूँगी। यह सुनकर असुरेन्द्र के क्रोध का पारावार न रहा और उसने अपने सेनापति धूम्रलोचन को देवी के केशों से पकड़कर लाने का आदेश दिया। इस पर धूम्रलोचन साठ हजार राक्षसों की सेना साथ लेकर देवी से युद्ध के लिए वहाँ पहुँचा और देवी को ललकारने लगा। देवी ने सिर्फ अपनी हुंकार से ही उसे भस्म कर दिया और देवी के वाहन सिंह ने बाकी असुर सेना का संहार कर दिया।

इसके बाद चण्ड मुण्ड नामक दैत्यों को एक बड़ी सेना के साथ युद्ध के लिए भेजा गया। जब असुर देवी को तलवारें लेकर उनकी ओर बढ़े तब देवी ने काली का विकराल रूप धारण कर उन पर टूट पड़ी। कुछ ही देर में सम्पूर्ण सेना को नष्ट कर दिया। फिर देवी ने "हूँ" शब्द कहकर चण्ड का सिर काट दिया और मुण्ड को यमलोक पहुँचा दिया। तब से देवी काली की संसार में चामुंडा के नाम से ख्याति होने लगी।

महर्षि मेधा ने आगे बताया - चण्ड मुण्ड और सारी सेना के मारे जाने की खबर सुनकर असुरों के राजा शुम्भ ने अपनी सम्पूर्ण सेना को युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा दी। शुम्भ की सेना को अपनी ओर आता देखकर देवी ने अपने धनुष की टंकार से पृथ्वी और आकाश के बीच का भाग गुंजा दिया। ऎसे भयंकर शब्द सुनकर राक्षसी सेना ने देवी और सिंह को चारों ओर से घेर लिया। उस समय दैत्यों के नाश के लिए और देवताओं के हित के लिए समस्त देवताओं की शक्तियाँ उनके शरीर से निकलकर उन्हीं के रूप में आयुधों से सजकर दैत्यों से युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हो गई। इन देव शक्तियों से घिरे हुए भगवान शंकर ने देवी से कहा मेरी प्रसन्नता के लिए तुम शीघ्र ही इन असुरों को मारो।

इसके पश्चयात् देवी के शरीर से अत्यंत उग्र रूप वाली और सैंकड़ों गीदडियों के समान आवाज करने वाली चण्डिका शक्ति प्रकट हुई। उस अपराजिता देवी ने भगवान शंकर को अपना दूत बनाकर शुम्भ, निशुम्भ के

पास इस संदेश के साथ भेजा जो तुम्हे अपने जीवित रहने की इच्छा हो तो त्रिलोकी का राज्य इन्द्र को दे दो, देवताओं को उनका यज्ञ भाग मिलना आरंभ हो जाए और तुम पाताल को लौट जाओ, किन्तु यदि बल के गर्व से तुम्हारी लड़ने की इच्छा हो तो फिर आ जाओ, तुम्हारे माँस से मेरी योनियाँ तृप्त होंगी।"

चूंकि उस देवी ने भगवान शंकर को दूत के कार्य में नियुक्त किया था, इसलिए वह संसार में शिवदूती के नाम से विख्यात हुई। मगर दैत्य भला कहां मानने वाले थे। वे तो अपनी शक्ति के मद में चूर थे। उन्होने देवी की बात अनसुनी कर दी और युद्ध को तत्पर हो उठे। देखते ही देखते पुन: युद्ध छिड़ गया। किंतु देवी के समक्ष असुर कब तक ठहर सकते थे। कुछ ही देर में देवी ने उनके अस्त्र, शस्त्रों को काट डाला। जब बहुत से दैत्य काल के मुख में समा गए तो महादैत्य रक्तबीज युद्ध के लिए आगे बढ़ा। उसके शरीर से रक्त की बूंदे पृथ्वी पर जैसे ही गिरती थीं। तुरंत वैसे ही शरीर वाला दैत्य पृथ्वी पर उत्पन्न हो जाता था। यह देखकर देवताओं को भय हुआ, देवताओं को भयभीत देखकर चंडिका ने काली से कहा "हे चामुण्डे" तुम अपने मुख को फैलाओ और मेरे शस्त्राघात से उत्पन्न हुए रक्त बिन्दुओं तथा रक्त बिन्दुओं से उत्पन्न हुए महाअसुरों को तुम अपने इस मुख से भक्षण करती हुई रणभूमि में विचरो। इस प्रकार उस दैत्य का रक्त क्षीण हो जाएगा और वह स्वयं नष्ट हो जाएगा। इस प्रकार अन्य दैत्य उत्पन्न नहीं होंगे।

काली के इस प्रकार कहकर चण्डिका देवी ने रक्तबीज पर अपने त्रिशुल से प्रहार किया और काली देवी ने अपने मुख में उसका रक्त ले लिया। चण्डिका ने उस दैत्य को बज्र, बाण, खड्म इत्यादि से मार डाला। महादैत्य रक्तबीज के मरते ही देवता अत्यंत प्रसन्न हुए और माताएं उन असुरों का रक्त पीने के पश्चयात उद्धत होकर नृत्य करने लगीं। रक्तबीज के मारे जाने पर शुम्भ व निशुम्भ को बड़ा क्रोध आया और अपनी बहुत बड़ी सेना लेकर महाशक्ति से युद्ध करने चल दिए। महापराक्रमी शुम्भ भी अपनी सेना सहित मातृगणों से युद्ध करने के लिए आ पहुँचा। किन्तु शीघ्र ही सभी दैत्य मारे गए और देवी ने शुम्भ निशुम्भ का संहार कर दिया। सारे संसार में शांति छा गई और देवता गण हर्षित होकर देवी की वंदना करने लगे। इन सब उपाख्यानों को सुनकर मेधा ऋषि ने राजा सुरथ तथा वणिक समाधि से देवी स्तुवन की विधिवत व्याख्या की, जिसके प्रभाव से दोनों नदी तट पर जाकर तपस्या में लीन हो गए। तीन वर्ष बाद दुर्गा माता ने प्रकट होकर दोनों को आशीर्वाद दिया। इस प्रकार वणिक तो संसारिक मोह से मुक्त होकर आत्मचिंतन में लग गया तथा राजा ने शत्रुओं को पराजित कर अपना खोया हुआ राज वैभव पुन: प्राप्त कर लिया।

सप्तश्लोकी दुर्गा

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी।
कलौ हि कार्यसिद्धयर्थमुपायं ब्रूहि यत्रतः॥

देव उवाच:

श्रृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम्।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्री दुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य
नारायण ऋषिः अनुष्टप्छन्दः,

श्रीमहमकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः,
श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हिसा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते॥

रोगानशोषानपहंसि तुष्टा रूष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्माश्रयतां प्रयान्ति॥
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्र्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्यद्वैरिविनाशनम्॥
॥ इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा संपूर्णम् ॥

दुर्गा आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निसदिन ध्यावत हरि ब्रम्हा शिवरी॥१॥
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्रवदन नीको॥२॥

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजे॥३॥
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुःख हारी॥४॥

कानन कुंडल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर राजत सम ज्योति॥५॥
शुंभ निशंभु विदारे महिषासुरधाती।
धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती॥६॥

चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे॥७॥
ब्रम्हाणी रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी॥८॥

चौसंठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरुँ।
बाजत ताल मृदंगा अरु डमरुँ॥९॥
तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहर्ता सुख सम्पत्ति कर्ता॥१०॥

भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी।
मनवांच्छित फल पावे सेवत नर नारी॥११॥
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बात्ती।
श्री माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योती॥१२॥
माँ अम्बे जी की आरती जो कोई नर गाये।
कहत शिवानंद स्वामी सुख संपत्ति पाये॥१३॥

॥दुर्गा चालीसा॥

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो दुर्गे दुःख हरनी ॥१॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी।
तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥२॥
शशि ललाट मुख महाविशाला।
नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥३॥
रूप मातु को अधिक सुहावे।
दरशकरत जन अति सुखपावे ॥४॥
तुम संसार शक्ति लै कीना।
पालन हेतु अन्न धन दीना ॥५॥

अन्नपूर्णा हुई जग पाला।
तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥६॥
प्रलयकाल सब नाशन हारी।
तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥७॥
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥८॥
रूप सरस्वती को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥९॥
धरयो रूप नरसिंह को अम्बा।
परगट भई फाड़कर खम्बा ॥१०॥

रक्षा करि प्रहलाद बचायो।
हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो॥११॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायण अंग समाहीं॥१२॥
क्षीरसिन्धु में करत विलासा।
दयासिन्धु दीजै मन आसा॥१३॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित नजात बखानी॥१४॥
मातंगी अरु धूमावति माता।
भुवनेश्वरी बगला सुख दाता॥१५॥

श्री भैरव तारा जग तारिणी।
छिन्नभालभव दुःखनिवारिणी॥१६॥
केहरि वाहन सोह भवानी।
लांगुर वीर चलत अगवानी॥१७॥
कर में खप्पर खड्ग विराजै।
जाको देख काल डर भाजै॥१८॥
सोहै अस्त्र और त्रिशूला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला॥१९॥
नगरकोट में तुम्हीं विराजत।
तिहुँलोक में डंका बाजत॥२०॥

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे।
रक्तबीज शंखन संहारे॥२१॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी॥२२॥
रूप कराल कालिका धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा॥२३॥
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब।
भईसहाय मातु तुम तब तब॥२४॥
अमरपुरी अरु बासव लोका।
तब महिमा सब रहें अशोका॥२५॥

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नर-नारी॥२६॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावें।
दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें॥२७॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई।
जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई॥२८॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।
योगन हो बिन शक्ति तुम्हारी॥२९॥
शंकर आचारज तप कीनो।
कामअरु क्रोधजीति सब लीनो॥३०॥

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को।
काहुकाल नहिं सुमिरो तुमको॥३१॥
शक्ति रूप का मरम न पायो।
शक्ति गई तब मन पछितायो॥३२॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी।
जय जय जय जगदम्बभवानी॥३३॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा।
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा॥३४॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो॥३५॥

आशा तृष्णा निपट सतावें।
मोह मदादिक सब बिनशावें॥३६॥
शत्रु नाश कीजै महारानी।
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी॥३७॥
करो कृपा हे मातु दयाला।
ऋद्धि-सिद्धि दै करहु निहाला।३८॥
जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ।
तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ॥३९॥
श्री दुर्गा चालीसा जो कोई गावै।
सब सुख भोग परमपद पावै॥४०॥

दोहा: देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥

श्रीकृष्ण कृत देवी स्तुति

नवरात्र में श्रद्धा और प्रेमपूर्वक महाशक्ति भगवती देवी की पूजा-उपासना करने से यह निर्गुण स्वरूपा देवी पृथ्वी के समस्त जीवों पर दया करके स्वयं ही सगुणभाव को प्राप्त होकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश रूप से उत्पत्ति, पालन और संहार कार्य करती हैं।

श्रीकृष्ण उवाच

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी। त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका॥१॥

कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्। परब्रह्मास्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी॥२॥

तेजःस्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा। सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्पर॥३॥

सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया। सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमंगलमंगला॥४॥

अर्थातः आप विश्वजननी मूल प्रकृति ईश्वरी हो, आप सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्याशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती हो। यद्यपि वस्तुतः आप स्वयं निर्गुण हो तथापि प्रयोजनवश सगुण हो जाती हो। आप परब्रह्म स्वरूप, सत्य, नित्य एवं सनातनी हो। परम तेजस्वरूप और भक्तों पर अनुग्रह करने आप शरीर धारण करती हों। आप सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार एवं परात्पर हो। आप सर्वाबीजस्वरूप, सर्वपूज्या एवं आश्रयरहित हो। आप सर्वज्ञ, सर्वप्रकार से मंगल करने वाली एवं सर्व मंगलों कि भी मंगल हो।

ऋग्वेदोक्त देवी सूक्तम्

अहमित्यष्टर्चस्य सूक्त स्य वागाम्भृणी ऋषिः सच्चित्सुखात्मकः सर्वगतः परमात्मा देवता, द्वितीयाया ऋचो जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्दः, देवीमाहात्म्य पाठे विनियोगः।

ध्यानम्

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।

आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला॥

देवीसूक्तम्

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥१॥

अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते॥२॥

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्य्यावेशयन्तीम्॥३॥

मयासो अन्नमत्ति योविपश्यति यः प्राणिति यईश्रृणोत्युक्त म्। अमन्तवो मां तउप क्षियन्ति श्रुधिश्रुत श्रद्धिवं ते वदामि॥४॥

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः। यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥५॥

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ। अहं जनाय समदं कृणोम्यहंद्यावापृथिवीआविवेश॥६॥

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पशमि॥७॥

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा। परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव॥८॥

॥ सिद्धकुंजिकास्तोत्रम्॥

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥१॥
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥२॥
कुंजिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत्कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्॥४॥

अथ मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

इति मंत्रः

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥१॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे॥२॥
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते॥३॥
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी॥४॥
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणि।
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी॥५॥
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥६॥
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं॥७॥
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥८॥
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिं कुरुष्व मे॥
इदं तु कुंजिकास्तोत्रं मंत्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति॥
यस्तु कुंजिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥
। इति श्री कुंजिकास्तोत्रम् संपूर्णम्।

दुर्गाष्टकम्

दुर्गे परेशि शुभदेशि परात्परेशि।
वन्द्ये महेशदयितेकरुणार्णवेशि।
स्तुत्ये स्वधे सकलतापहरे सुरेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥१॥
दिव्ये नुते श्रुतिशतैर्विमले भवेशि।
कन्दर्पदारशतयुन्दरि माधवेशि।
मेधे गिरीशतनये नियते शिवेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥२॥
रासेश्वरि प्रणततापहरे कुलेशि।
धर्मप्रिये भयहरे वरदाग्रगेशि।
वाग्देवते विधिनुते कमलासनेशि।
कृष्णस्तुतेकुरु कृपां ललितेऽखिलेशि॥३॥
पूज्ये महावृषभवाहिनि मंगलेशि।
पद्मे दिगम्बरि महेश्वरि काननेशि।
रम्येधरे सकलदेवनुते गयेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपा
ललितेऽखिलेशि॥४॥
श्रद्धे सुराऽसुरनुते सकले जलेशि।
गंगे गिरीशदयिते गणनायकेशि।
दक्षे स्मशाननिलये सुरनायकेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥५॥
तारे कृपार्द्रनयने मधुकैटभेशि।
विद्येश्वरेश्वरि यमे निखलाक्षरेशि।
ऊर्जे चतुःस्तनि सनातनि मुक्तकेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितऽखिलेशि॥६॥
मोक्षेऽस्थिरे त्रिपुरसुन्दरिपाटलेशि।
माहेश्वरि त्रिनयने प्रबले मखेशि।
तृष्णे तरंगिणि बले गतिदे ध्रुवेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥७॥
विश्वम्भरे सकलदे विदिते जयेशि।
विन्ध्यस्थिते शशिमुखि क्षणदे दयेशि।
मातः सरोजनयने रसिके स्मरेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥८॥
दुर्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
सर्वार्थदं हरिहरादिनुतां वरेण्याम्।
दुर्गां सुपूज्य महितां विविधोपचारैः
प्राप्नोति वांछितफलं न
चिरान्मनुष्यः॥९॥
॥ इति श्री दुर्गाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ भवान्यष्टकम्॥

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥१॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसार-पाश-प्रबद्धः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥२॥

न जानामि दानं न च ध्यान-योगं
न जानामि तंत्र न च स्तोत्र-मन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥३॥

न जानामि पुण्यं न जानानि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्ति व्रतं वाऽपि मात-
र्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥४॥

कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धि कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबंधः सदाऽह
गतिस्त्व गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चाऽन्यत्सदाऽहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥६॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चाऽनले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥७॥

अनाथो दरिद्रो जरा-रोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥८॥

॥ इति श्रीभवान्यष्टकं संपूर्णम् ॥

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥२॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे॥३॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्। यां गतिं समवापनेति न तां ब्रह्मादय: सुराः॥४॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके। इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥५॥
अज्ञानाद्विस्मृतेभ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्। तत्सर्व क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥६॥
कामेश्वरि जगन्मात: सच्चिदानन्दविग्रहे। गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥८॥

दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती॥१॥
सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी॥२॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः॥३॥
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः॥४॥
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी॥५॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी॥६॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता॥७॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः॥८॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना॥९॥
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी॥१०॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा॥११॥
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः॥१२॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्त केशी घोररूपा महाबला॥१३॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी॥१४॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी॥१५॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति॥१६॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्॥१७॥
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम्॥१८॥
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवापनुयात्॥१९॥
गोरोचनालक्त कुङ्कुमेन सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत् सदा धारयते पुरारिः॥२०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम्॥२१॥

दुर्वा पूजन में रखे सावधानियां

- माता दुर्गा की पूजा करने वाले साधकों को उपासना संबंधी इन बातों का ध्यान रखना लाभदायक रहता हैं। विद्वानो के मत में शास्त्रोक्त विधान से एक ही घर में तीन शक्तियों की पूजा करना वर्जित हैं।
- देवीपीठ पर वाद्य-शहनाई का वादन नहीं करें।
- भगवती दुर्गा का आह्वान बिल्व पत्र, बिल्व शाखा या त्रिशूल पर ही किया जाना चाहिए।
- देवी दुर्गा को केवल लाल कनेर और सुगंधित पुष्प अति प्रिय हैं। इस लिये आराधना में सुगंधित पुष्प ही लें।
- नवरात्र में कलश की स्थापना केवल दिन में करनी चाहिए।
- मां भगवती की प्रतिमा हमेशा लाल वस्त्र से बिराजीत रहे।
- देवी को भी लाल रंग की चुनरी चढाएं।
  नवरात्र में नवार्ण मंत्र जप देवी मां के सामने लाल आसन पर बैठकर लाल चंदन की माला से करना लाभ प्रद होता हैं।

विश्वंभरी स्तुति

विश्वंभरी स्तुति मूल रुपसे गुजराती में वल्लभ भट्ट द्वारा लिखी गई हैं। ✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

विश्वंभरी अखिल विश्वतणी जनेता।
विद्या धरी वदनमां वसजो विधाता॥
दुर्बुद्धि दुर करी सद्‌बुद्धि आपो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१॥

भूलो पडि भवरने भटकुं भवानी।
सुझे नहि लगीर कोइ दिशा जवानी॥
भासे भयंकर वळी मनना उतापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥२॥

आ रंकने उगरवा नथी कोइ आरो।
जन्मांध छु जननी हु ग्रही हाथ तारो॥
ना शुं सुणो भगवती शिशुना विलापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥३॥

मा कर्म जन्म कथनी करतां विचारु।
आ सृष्टिमां तुज विना नथी कोइ मारु॥
कोने कहुं कठण काळ तणो बळापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥४॥

हुं काम क्रोध मध मोह थकी भरेलो।
आडंबरे अति धणो मद्‌थी छकेलो॥
दोषो बधा दूर करी माफ पापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥५॥

ना शास्त्रना श्रवणनु पयःपान पीधु।
ना मंत्र के स्तुति कथा नथी काइ कीधु॥
श्रद्धा धरी नथी कर्या तव नाम जापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥६॥

रे रे भवानी बहु भूल थई ज मारी।
आ जिंदगी थई मने अतिशे अकारी॥
दोषो प्रजाळि सधळा तव छाप छापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥७॥

खाली न कोइ स्थळ छे विण आप धारो।
ब्रह्मांडमां अणु-अणु महीं वास तारो॥
शक्ति न माप गणवा अगणित मापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥८॥

पापो प्रपंच करवा बधी रीते पूरो।
खोटो खरो भगवती पण हुं तमारो॥
जाडयांधकार करी दूर सुबुद्धि स्थापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥९॥

शीखे सुणे रसिक छंद ज एक चित्ते।
तेना थकी त्रिविध ताप टळे खचिते॥
बुद्धि विशेष जगदंब तणा प्रतापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१०॥

श्री सदगुरु शरनमां रहीने यजुं छुं।
रात्रि दिने भगवती तुजने भजुं छु॥
सदभक्त सेवक तणा परिताप चापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥११॥

अंतर विषे अधिक उर्मि थतां भवानी।
गाऊ स्तुति तव बळे नमीने मृडानी॥
संसारना सकळ रोग समूळ कापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१२॥

महिषासुरमर्दिनिस्तोत्रम्

||भगवतीपद्यपुष्पांजलिस्तोत्र महिषासुरमर्दिनिस्तोत्रम् ||

श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ||

भगवती भगवत्पदपङ्कजं भ्रमरभूतसुरासुरसेवितम् | सुजनमानसहंसपरिस्तुतं कमलयाऽमलया निभृतं भजे ||१|| ते उभे अभिवन्देऽहं विघ्नेशकुलदैवते | नरनागाननस्त्वेको नरसिंह नमोऽस्तुते ||२|| हरिगुरुपदपद्मं शुद्धपद्येऽनुरागाद् विगतपरमभागे सन्निधायादरेण | तदनुचरि करोमि प्रीतये भक्तिभाजां भगवति पदपद्मे पद्यपुष्पाञ्जलिं ते ||३|| केनैते रचिताः कुतो न निहिताः शुम्भादयो दुर्मदाः केनैते तव पालिता इति हि तत् प्रश्ने किमाचक्ष्महे | ब्रह्माद्या अपि शंकिताः स्वविषये यस्याः प्रसादावधि प्रीता सा महिषासुरप्रमथिनीच्छद्यादवद्यानि मे ||४|| पातु श्रीस्तु चतुर्भुजा किमु चतुर्बाहोर्महौजान्भुजान् धत्तेऽष्टादशधा हि कारणगुणान्कार्ये गुणारम्भकाः | सत्यं दिक्पतिदन्तिसंख्यभुजभृच्छम्भुः स्वयम्भूः स्वयं धामैकप्रतिपत्तये किमथवा पातुं दशाष्टौ दिशः ||५|| प्रीत्याऽष्टादशसंमितेषु युगपद्द्वीपेषु दातुं वरान् त्रातुं वा भयतो बिभर्षि भगवत्यष्टादशैतान् भुजान् | यद्वाऽष्टादशधा भुजांस्तु बिभृतः काली सरस्वत्युभे मीलित्वैकमिहानयोः प्रथयितुं सा त्वं रमे रक्षमाम् ||६|| अयि गिरिनंदिनि नंदितमेदिनि विश्वविनोदिनि नंदनुते गिरिवर विंध्य शिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते | भगवति हे शितिकण्ठकुटुंबिनि भूरि कुटुंबिनि भूरि कृते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||७|| सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते | दनुज निरोषिणि दितिसुत रोषिणि दुर्मद शोषिणि सिन्धुसुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||८|| अयि जगदंब मदंब कदंब वनप्रिय वासिनि हासरते शिखरि शिरोमणि तुङ्ग हिमालय शृंग निजालय मध्यगते | मधु मधुरे मधु कैटभ गंजिनि कैटभ भंजिनि रासरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||९|| अयि शतखण्ड विखण्डित रुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते रिपु गज गण्ड विदारण चण्ड पराक्रम शुण्ड मृगाधिपते | निज भुज दण्ड निपातित खण्ड विपातित मुण्ड भटाधिपते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१०|| अयि रण दुर्मद शत्रु वधोदित दुर्धर निर्जर शक्तिभृते चतुर विचार धुरीण महाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते | दुरित दुरीह दुराशय दुर्मति दानवदूत कृतांतमते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||११|| अयि शरणागत वैरि वधूवर वीर वराभय दायकरे त्रिभुवन मस्तक शूल विरोधि शिरोधि कृतामल शूलकरे | दुमिदुमि तामर दुंदुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१२|| अयि निज हुँकृति मात्र निराकृत धूम्र विलोचन धूम्र शते समर विशोषित शोणित बीज समुद्भव शोणित बीज लते | शिव शिव शुंभ निशुंभ महाहव तर्पित भूत पिशाचरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१३|| धनुरनु संग रणक्षणसंग परिस्फुर दंग नटत्कटके कनक पिशंग पृषत्क निषंग रसद्भट शृंग हतावटुके | कृत चतुरङ्ग बलक्षिति रङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१४|| सुरललनाततथेयितथेयितथाभिनयोत्तरनृत्यरते हासविलासहुलासमयि प्रणतार्तजनेऽमितप्रेमभरे |

धिमिकिटधिक्कटधिकटधिमिध्वनिघोरमृदंगनिनादरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१५|| जय जय जप्य जयेजय शब्द परस्तुति तत्पर विश्वनुते झण झण झिञ्जिमि झिंकृत नूपुर सिंजित मोहित भूतपते | नटित नटार्ध नटीनट नायक नाटित नाट्य सुगानरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१६|| अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कांतियुते श्रित रजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते | सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१७|| सहित महाहव मल्लम तल्लिक मल्लित रल्लक मल्लरते विरचित वल्लिक पल्लिक मल्लिक झिल्लिक भिल्लिक वर्ग वृते | सितकृत फुल्लिसमुल्ल सितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१८|| अविरल गण्ड गलन्मद मेदुर मत्त मतङ्गज राजपते त्रिभुवन भूषण भूत कलानिधि रूप पयोनिधि राजसुते | अयि सुद तीजन लालसमानस मोहन मन्मथ राजसुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१९|| कमल दलामल कोमल कांति कलाकलितामल भाललते सकल विलास कलानिलयक्रम केलि चलत्कल हंस कुले | अलिकुल सङ्कुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्बकुलालि कुले जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२०|| कर मुरली रव वीजित कूजित लज्जित कोकिल मञ्जुमते मिलित पुलिन्द मनोहर गुञ्जित रंजितशैल निकुञ्जगते | निजगुण भूत महाशबरीगण सद्गुण संभृत केलितले जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२१|| कटितट पीत दुकूल विचित्र मयूखतिरस्कृत चंद्र रुचे प्रणत सुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुल सन्नख चंद्र रुचे | जित कनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भर कुंजर कुंभकुचे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२२|| विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते कृत सुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते | सुरथ समाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२३|| पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् | तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२४|| कनकलसत्कल सिन्धु जलैरनु सिञ्चिनुते गुण रङ्गभुवं भजति स किं न शचीकुच कुंभ तटी परिरंभ सुखानुभवम् | तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२५|| तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते | मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२६|| अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते | यदुचितमत्र भवत्युररि कुरुतादुरुतापमपाकुरुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२७|| स्तुतिमितस्तिमितः सुसमाधिना नियमतोऽयमतोऽनुदिनं पठेत् | परमया रमयापि निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत् ||२८|| रमयति किल कर्षस्तेषु चित्तं नराणामवरजवर यस्माद्रामकृष्णः कवीनाम् | अकृत सुकृतिगम्यं रम्यपद्यैकहर्म्यं स्तवनमवनहेतुं प्रीतये विश्वमातुः ||२९|| इन्दुरम्यो मुहुर्बिन्दुरम्यो मुहुर्बिन्दुरम्यो यतः सोऽनवद्यः स्मृतः | श्रीपतेः सूनूना कारितो योऽधुना विश्वमातुः पदे पद्यपुष्पाञ्जलिः ||३०|| || इति श्रीभगवतीपद्यपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम् ||

शाप विमोचन मंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

चण्डिका शाप विमोचन मंत्र

चण्डिका शाप विमोचन मंत्र के पाठ को करने से देवी की पूजा में की गयी किसी भी प्रकार त्रुटि (भूल) से मिला श्राप खत्म हो जाता है।

शाप-विमोचन संकल्प

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापविमोचन मन्त्रस्य वसिष्ठनारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋषय: सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता चरित्रत्रयं बीजं ह्रीं शक्ति: त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्तो मम संकल्पितकार्यसिद्धयर्थे जपे विनियोग:।

शापविमोचन मंत्र

ॐ (ह्रीं) रीं रेत:स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१॥
ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै,ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥२॥
ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥३॥
ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥४॥
ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥५॥
ॐ तं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥६॥
ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥७॥
ॐ जां जातिरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥८॥
ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥९॥
ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१०॥
ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफ़लदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥११॥
ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१२॥
ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१३॥
ॐ माँ मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमासहितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१४॥
ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नम: शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१६॥
ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फ़ट स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नम:॥१८॥
इत्येवं हि महामन्त्रान पठित्वा परमेश्वर, चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशय:॥१९॥
एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति य:, आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशय:॥२०॥
(श्रीदुर्गामार्पणामस्तु)

श्रीदुर्गाअष्टोत्तर शतनाम पूजन

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

संकल्पः

ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्वेत वराह कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्त देशे **अमुक** पुण्य क्षेत्रे कलियुगे कलि प्रथम चरणे **अमुक** सम्वत्सरे **अमुक** मासे **अमुक** पक्षे **अमुक** तिथौ **अमुक** वासरे **अमुक** गोत्रो **अमुक** (शर्मा, वर्मा अपने या जिसके लिये अनुष्ठान कर रहे हो उनके **नाम** का उच्चारण करें।) अहं श्रीदुर्गा-प्रीत्यर्थे अष्टोत्तर शत नाम मन्त्रैः यथा शक्ति यजनं करिष्ये।

(**अमुक** के स्थान पर अपना वर्तमान स्थान-संवत्स-मास-पक्ष-तिथि-वास- का उचारण करें और अमुक गोत्रो व नाम के स्थान पर जिसके लिये जप किया जा रहा हो उस व्यक्ति के गोत्र व नाम का उचारण करना चाहिए यदि स्वयं जप कर रहे हो तो स्वयंका गोत्र नाम लें)

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीदुर्गा अष्टोत्तर शतनाम माला मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदुर्गा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, श्रीदुर्गा प्रीत्यर्थे श्रीदुर्गा अष्टोत्तर शत नाम पूजने विनियोगः।

नोट:

श्रीदुर्गा अष्टोत्तर नामावली के मन्त्रों से पूजन करते समय उक्त मन्त्र का उच्चारण कर विनियोग करना चाहिये। यदि सिर्फ नाम अर्थात मन्त्रों के द्वारा जप करना हो, तो पूजने विनियोग। के स्थान पर जपे विनियोगः। का उचारण करें और यदि पूजन के साथ विधिवत तर्पण करना हो, तो पूजने तर्पणे च विनियोगः। का उचारण करें। नाम मन्त्रों का होम करना हो, तो होमे विनियोगः। का उचारण करें । ऋष्यादि न्यास में भी उपरोक्त विधि से योजन करें।

ऋष्यादि न्यासः

श्रीनारद-ऋषये नमः। शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः। मुखे, श्रीदुर्गा देवतायै नमः। हृदि, दुं बीजाय नमः। गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः। पादयो, ॐ कीलकाय नमः। नाभौ, श्रीदुर्गा-प्रीत्यर्थं श्रीदुर्गा अष्टोत्तर शत नाम पूजने विनियोगाय नमः। सर्वांगे।

षडङ्ग न्यास:

ह्रां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै। ह्रीं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रूं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रैं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रौं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रः ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय।

कर न्यास:

अंगुष्ठाभ्यां नमः। तर्जनीभ्यां नमः। मध्यमाभ्यां नमः। अनामिकाभ्यां हुम। कनिष्ठिकाभ्यां वौषट। करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

अंग न्यास:

हृदयाय नमः। शिरसे स्वाहा। शिखायै वषट्। कवचाय हुम्। नेत्र-त्रयाय वौषट। अस्त्राय फट्।

ध्यानः

सिंहस्था शशि-शेखरा मरकत-प्रख्या चतुर्भिर्भुजैः।
शंख चक्र-धनुः-शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता॥
आमुक्तांगद-हार-कंकण-रणत्-काञ्ची-क्वणन्-नूपुरा।
दुर्गा दुर्गति-हारिणी भवतु वो रत्नोल्लसत्-कुण्डला॥

उक्त प्रकार 'ध्यान' करने के बाद माँ दुर्गा का मानसिक पूजन करें।

मानस पूजनः

ॐ लं पृथ्वी तत्त्वात्मकम् गन्धम् श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये समर्पयामि नमः॥ ॐ हं आकाश तत्त्वात्मकम् पुष्पं श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये समर्पयामि नमः॥ ॐ यं वायु तत्त्वात्मकं धूपं श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये घर्पायामि नमः॥



ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये दर्शयामि नमः॥ ॐ वं जल तत्त्वात्मकं नैवेद्य श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये निवेदयामि नमः॥ ॐ शं सर्व तत्त्वात्मकं ताम्बूलम् श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये समर्पयामि नमः॥

उक्त मन्त्र के उचारण के बाद में दुर्गा अष्टोत्तर शत नामावली का पाठ करें।

त्रिबीज युक्त चतुर्थ्यन्त अष्टोत्तर शत नामावली

ॐ ह्रीं दुं श्रीसत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसाध्व्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभव-प्रीतायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभवान्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभव-मोचिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीआर्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदुर्गायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीजयायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीआद्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीत्रि-नेत्रायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीशूल-धारिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपिनाक-धारिण्ये पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचित्रायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचण्ड-घण्टायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमहा-तपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमनो-रुपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबुद्धयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअहंकारायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचित्त-रुपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचितायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचित्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-मन्त्र-मय्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीनित्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसत्यानन्द-स्वरुपिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनन्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभाविन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभाव्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअभव्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसदा-गत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीशाम्भव्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदेव-मातायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचिन्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीरत्न-प्रयायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-विद्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदक्ष-कन्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदक्ष-यज्ञ-विनाशिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअपर्णायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनेक-वर्णायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपाटलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपाटलावत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपटाम्बर-परीधानायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकल-मञ्जीर-रञ्जिन्यै नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअमेय-विक्रमायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीक्रूरायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसुन्दर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसुर-सुन्दर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवन-दुर्गायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमातंगयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमतंग-मुनि-पूजितायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीब्राह्मयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमाहेश्वर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीऐन्द्रयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकौमार्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवैष्णव्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचामुण्डायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवाराह्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीलक्ष्म्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपुरुषाकृत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीविमलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीउत्कर्षिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीज्ञानायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीक्रियायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसत्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबुद्धिदायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबहुलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबहुल-प्रियायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-वाहनायै पूजयामि नमः।

ॐ ह्रीं दुं श्रीनिशुम्भ-शुम्भ-हननयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमहिषासुर-मर्दिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमधु-कैटभ-हन्त्र्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचण्ड-मुण्ड-विनाशिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्वासुर-विनाशायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-दानव-घातिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-शास्त्र-मय्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीविद्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्वास्त्र-धारिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनेक-शस्त्र-हस्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनेकास्त्र-विधारिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकुमार्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकन्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकैशोर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीयुवत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीयत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअप्रौढायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीप्रौढायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवृद्ध-मातायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबल-प्रदायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमहा-देव्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमुक्त-केश्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीघोर-रुपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमहा-बलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअग्नि-ज्वालायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीरौद्र-मुख्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकाल-रात्र्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीतपस्विन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीनारायण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभद्रकाल्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीविष्णु-मायायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीजलोदर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीशिव-दूत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकराल्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनन्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपरमेश्वर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकात्यायन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसावित्र्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीप्रत्यक्षायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीब्रह्म-वादिन्यै पूजयामि नमः।

परशुराम कृत श्रीदुर्गास्तोत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

॥ परशुराम उवाच ॥
श्रीकृष्णस्य च गोलोकेपरिपूर्णतमस्य चः।
आविर्भूता विग्रहतः, परा सृष्ट्युन्मुखस्य च॥
सूर्य-कोटि-प्रभा-युक्ता, वस्त्रालंकार भूषिता।
वह्नि शुद्धांशुकाधाना सुस्मिता, सुमनोहरा॥
नव यौवन सम्पन्ना सिन्दूर विन्दु शोभिता।
ललितं कबरीभारं मालती माल्य मण्डितम्॥
अहोनिर्वचनीया त्वं, चारुमूर्ति च बिभ्रती।
मोक्षप्रदा मुमुक्षूणां, महाविष्णोर्विधिः स्वयम्॥
मुमोह क्षणमात्रेण दृष्ट्वा, त्वां सर्वमोहिनीम्।
बालैः सम्भूय सहसा, सस्मिता धाविता पुरा॥
सद्भिः ख्याता तेन, राधा मूलप्रकृतिरीश्वरी।
कृष्णस्त्वां सहसाहूय, वीर्याधानं चकार ह॥
ततो डिम्भं महज्जज्ञे, ततो जातो महाविराट्।
यस्यैव लोमकूपेषु, ब्रह्माण्डान्यखिलानि च॥
तच्छृंगारक्रमेणैव त्वन्निःश्वासो बभूव ह।
स निःश्वासो महावायुः स विराड् विश्वधारकः॥
तव घर्मजलेनैव पुप्लुवे विश्वगोलकम्।
स विराड् विश्वनिलयो जलराशिर्बभूव ह॥
ततस्त्वं पञ्चधाभूय पञ्चमूर्तीश्च बिभ्रती।
प्राणाधिष्ठातृमूर्त्तिर्या कृष्णस्य परमात्मनः॥
कृष्णप्राणाधिकां राधां तां वदन्ति पुराविदः॥
वेदाधिष्ठात्रीमूर्तियां वेदाशास्त्रप्रसूरपि।
तं सावित्रीं शुद्धरूपां प्रवदन्ति मनीषिणः॥
ऐश्वर्याधिष्ठात्रीमूर्तिः शान्तिश्च शान्तरूपिणी।
लक्ष्मीं वदन्ति संतस्तां शुद्धां सत्त्वस्वरुपिणीम् ॥
रागाधिष्ठात्री या देवी, शुक्लमूर्तिः सतां प्रसूः।
सरस्वतीं तां शास्त्रज्ञां प्रवदन्ति बुधा भुवि॥
बुद्धिर्विद्या सर्वशक्तिर्ज्या मूर्तिरधिदेवता।
सर्वमंगलमंगल्या सर्वमंगलरूपिणी॥
सर्वमंगलबीजस्य शिवस्य निलयेधुना॥
शिवे शिवास्वरूपा त्वं लक्ष्मीर्नारायणान्तिके।
सरस्वती च सावित्री वेदसूर्ब्रह्मणः प्रिया॥
राधा रासेश्वरस्यैव परिपूर्णतमस्य च।
परमानन्द-रूपस्य परमानन्दरूपिणी॥
त्वत्कलांशांशकलया देवानामपि योषितः॥
त्वं विद्या योषितः सर्वास्त्वं सर्वबीजरूपिणी।
छाया सूर्यस्य चन्द्रस्य रोहिणी सर्वमोहिनी॥
शची शक्रस्य कामस्य कामिनी रतिरीश्वरी।
वरुणानी जलेशस्य वायोः स्त्री प्राणवल्लभा॥
वह्नेः प्रिया हि स्वाहा च कुबेरस्य च सुन्दरी।
यमस्य तु सुशीला च नैर्ऋतस्य च कैटभी॥
ईशानस्य शशिकला शतरूपा मनोः प्रिया।
देवहूतिः कर्दमस्य वसिष्ठस्याप्यरुन्धती॥
लोपामुद्राप्यगस्त्यस्य देवमातादितिस्तथा। अहल्या
गौतमस्यापि सर्वाधारा वसुन्धरा॥
गंगा च तुलसी चापि पृथिव्यां याः सरिद्वराः।
एताः सर्वाश्च या ह्यन्याः सर्वास्त्वत्कलयाम्बिके॥
गृहलक्ष्मीगृहे नृणांराजलक्ष्मीश्च राजसु।
तपस्विनां तपस्या त्वं गायत्री ब्राह्मणस्य च॥
सतां सत्त्वस्वरूपा त्वमसतां कलहांकुरा।
ज्योतीरूपा निर्गुणस्य शक्ति स्त्वं सगुणस्य च॥
सूर्ये प्रभास्वरूपा त्वं दाहिका च हुताशने।
जले शैत्यस्वरूपा च शोभारूपा निशाकरे॥
त्वं भूमौ गन्धरूपा च आकाशे शब्दरूपिणी।
क्षुत्पिपासादयस्त्वं च जीविनां सर्वशक्तयः॥
सर्वबीजस्वरूपा त्वं संसारे साररूपिणी।
स्मृतिर्मेधा च बुद्धिर्वा ज्ञानशक्ति र्विपश्चिताम्॥
कृष्णेन विद्या या दत्ता सर्वज्ञानप्रसूः शुभा।
शूलिने कृपया सा त्वं यतो मृत्युञ्जयः शिवः॥
सृष्टिपालनसंहारशक्त यस्त्रिविधाश्च याः।
ब्रह्मविष्णुमहेशानां सा त्वमेव नमोस्तु ते॥
मधुकैटभभीत्या च त्रस्तो धाता प्रकम्पितः।
स्तुत्वा मुमोच यां देवीं तां मूर्ध्ना प्रणमाम्यहम्॥
मधुकैटभयोर्युद्धे त्रातासौ विष्णुरीश्वरीम्।
बभूव शक्तिमान् स्तुत्वा तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥



त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे।
यां तुष्टुवुः सुराः सर्वे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
विष्णुना वृषरूपेण स्वयं शम्भुः समुत्थितः।
जघान त्रिपुरं स्तुत्वा तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
यदाज्ञया वाति वातः सूर्यस्तपति संततम्।
वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निस्तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
यदाज्ञया हि कालश्च शश्वद् भ्रमति वेगतः।
मृत्युश्चरति जन्त्वोघे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
स्त्रष्टा सृजति सृष्टिं च पाता पाति यदाज्ञया।
संहर्ता संहरेत् काले तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
ज्योतिःस्वरूपो भगवाञ्छ्रीकृष्णो निर्गुणः स्वयम्।
यया विना न शक्तश्च सृष्टिं कर्त्तुं नमामि ताम्॥
रक्ष रक्ष जगन्मातरपराधं क्षमस्व मे।
शिशूनामपराधेन कुतो माता हि कुप्यति॥
इत्युत्तवा पर्शुरामश्च प्रणम्य तां रुरोद ह।
तुष्टा दुर्गा सम्भ्रमेण चाभयं च वरं ददौ॥
अमरो भव हे पुत्र वत्स सुस्थिरतां व्रज।
शर्वप्रसादात् सर्वत्र ज्योस्तु तव संततम्॥
सर्वान्तरात्मा भगवांस्तुष्टोस्तु संततं हरिः।
भक्तिर्भवतु ते कृष्णे शिवदे च शिवे गुरौ॥
इष्टदेवे गुरौ यस्य भक्तिर्भवति शाश्वती।
तं हन्तु न हि शक्ताश्च रुष्टाश्च सर्वदेवताः॥
श्रीकृष्णस्य च भक्तस्त्वं शिष्यो हि शंकरस्य च।
गुरुपत्नीं स्तौषि यस्मात् कस्त्वां हन्तुमिहेश्वरः॥
अहो न कृष्णभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्।
अन्यदेवेषु ये भक्ता न भक्ता वा निरेन्कुशाः ॥
चन्द्रमा बलवांस्तुष्टो येषां भाग्यवतां भृगो।
तेषां तारागणा रुष्टाः किं कुर्वन्ति च दुर्बलाः ॥
यस्य तुष्टः सभायां चेन्नरदेवो महान् सुखी।
तस्य किं वा करिष्यन्ति रुष्टा भृत्याश्च दुर्बलाः॥
इत्युक्त्वा पार्वती तुष्टा दत्त्वा रामं शुभाशिषम्।
जगामान्तःपुरं तूर्णं हरिशब्दो बभूव ह॥

॥फल-श्रुति॥

स्तोत्रम् वै काण्वशाखोक्तम् पूजाकाले च यः पठेत्।
यात्राकाले च प्रातर्वा वाञ्छितार्थं लभेद्ध्रुवम॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी कन्यकां लभेत्।
विद्यार्थी लभते विद्यां प्रजार्थी चाप्नुयात् प्रजाम्॥
भ्रष्टराज्यो लभेद् राज्यं नष्टवित्तो धनं लभेत्॥
यस्य रुष्टो गुरुर्देवो राजा वा बान्धवोथवा।
तस्य तुष्टश्च वरदः स्तोत्रराजप्रसादतः॥
दस्युग्रस्तोहिग्रस्तश्च शत्रुग्रस्तो भयानकः।
व्याधिग्रस्तो भवेन्मुक्तः स्तोत्रस्मरणमात्रतः॥
राजद्वारे श्मशाने च कारागारे च बन्धने।
जलराशौ निमग्नश्च मुक्त स्तत्स्मृतिमात्रतः॥
स्वामिभेदे पुत्रभेदे मित्रभेदे च दारुणे।
स्तोत्रस्मरणमात्रेण वाञ्छितार्थं लभेद् ध्रुवम॥
कृत्वा हविष्यं वर्षं च स्तोत्रराजं श्रृणोति या।
भक्तया दुर्गां च सम्पूज्य महावन्ध्या प्रसूयते॥
लभते सा दिव्यपुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम्।
असौभाग्या च सौभाग्यं षण्मासश्रवणाल्लभेत् ॥
नवमासं काकवन्ध्या मृतवत्सा च भक्तितः।
स्तोत्रराजं या श्रृणोति सा पुत्रं लभते ध्रुवम्॥
कन्यामाता पुत्रहीना पञ्चमासं श्रृणोति या।
घटे सम्पूज्य दुर्गां च सा पुत्रं लभते ध्रुवम्॥

भावार्थः

परशुराम ने कहाः पोराणिक काल की बात हैं; गौ-लोक में जब सभी तरह से श्रीकृष्ण सृष्टिरचना के लिए तैयार हुए, उस समय उनके शरीर से आपका प्राकटय हुआ था। आपकी कान्ति करोडों सूर्यो के समान थी। आप वस्त्र और अलंकारों से विभूषित थीं। आपके शरीर पर अग्नि में तपाकर शुद्ध की हुई साड़ी का परिधान था। नव तरुण अवस्था थी। ललाट पर सिंदूर का टिका शोभित हो रहा था। मालती के फूलो की मालाओं से मण्डित गुँथी हुई सुन्दर केश थे। बडा ही मनोहर रूप था। मुख पर मन्द मुस्कान थी। अहो ! आपकी मूर्ति बडी सुन्दर थी, उसका वर्णन करना कठिन हैं। आप मुमुक्षुओं को मोक्ष प्रदान करने वाली तथा स्वयं महाविष्णु की विधि हो।

बाले ! आप सबको मोहित कर लेने वाली हो। आपको देखकर श्रीकृष्ण उसी क्षण मोहित हो गये। तब आप उनसे सम्भावित होकर सहसा मुस्कराती हुई भाग चलीं। इसी कारण सत्पुरुष आपको मूलप्रकृति ईश्वरी राधा कहते हैं। उस समय सहसा श्रीकृष्ण ने आपको बुलाकर वीर्य का आधान किया। उससे एक महान् डिम्ब उत्पन्न

हुआ। उस डिम्ब से महाविराट् की उत्पत्ति हुई, जिसके रोमकूपों में समस्त ब्रह्माण्ड स्थित हैं। फिर राधा के श्रृंगार क्रम से आपका निःश्वास प्रकट हुआ। वह निःश्वास महावायु हुआ और वही विश्व को धारण करने वाला विराट् कहलाया। आपके पसीने से विश्वगोलक पिघल गया। तब विश्व का निवासस्थान वह विराट् जल की राशि हो गया। तब आपने अपने को पाँच भागों में विभक्त करके पाँच मूर्ति धारण कर ली। उनमें परमात्मा श्रीकृष्ण की जो प्राणाधिष्ठात्री मूर्ति हैं, उसे भविष्यवेत्ता लोग कृष्णप्राणाधिका राधा कहते हैं। जो मूर्ति वेद-शास्त्रों की जननी तथा वेदाधिष्ठात्री हैं, उस शुद्धरूपा मूर्ति को मनीषीगण सावित्री नाम से पुकारते हैं। जो शान्ति तथा शान्तरूपिणी ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री मूर्ति हैं, उस सत्त्वस्वरूपिणी शुद्ध मुर्ति को संत लोग लक्ष्मी नाम से अभिहित करते हैं। अहो ! जो राग की अधिष्ठात्री देवी तथा सत्पुरुषों को पैदा करने वाली हैं, जिसकी मूर्ति शुक्ल वर्ण की हैं, उस शास्त्र की ज्ञाता मूर्ति को शास्त्रज्ञ सरस्वती कहते हैं। जो मूर्ति बुद्धि, विद्या, समस्त शक्ति की अधिदेवता, सम्पूर्ण मंगलों की मंगलस्थान, सर्वमंगलरूपिणी और सम्पूर्ण मंगलों की कारण हैं, वही आप इस समय शिव के भवन में विराजमान हो।

आप ही शिव के समीप शिवा अर्थात पार्वती, नारायण के निकट लक्ष्मी और ब्रह्मा की प्रिया वेदजननी सावित्री और सरस्वती हो। जो पूरिपूर्णतम एवं परमानन्दस्वरूप हैं, उन रासेश्वर श्रीकृष्ण की आप परमानन्दरूपिणी राधा हो। देवान्गनाएँ भी आपके कलांश की अंशकला से प्रादुर्भूत हुई हैं। सारी नारियाँ आपकी विद्यास्वरूपा हैं और आप सबकी कारणरूपा हो। अम्बिके ! सूर्य की पत्नी छाया, चन्द्रमा की भार्या सर्वमोहिनी रोहिणी, इन्द्र की पत्नी शची, कामदेव की पत्नी ऐश्वर्यशालिनी रति, वरुण की पत्नी वरुणानी, वायु की प्राणप्रिया स्त्री, अग्नि की प्रिया स्वाहा, कुबेर की सुन्दरी भार्या, यम की पत्नी सुशीला, नैर्ऋत की जाया कैटभी, ईशान की पत्नी शशिकला, मनु की प्रिया शतरूपा, कर्दम की भार्या देवहूति, वसिष्ठ की पत्नी अरुन्धती, देवमाता अदिति, अगस्त्य मुनि की प्रिया लोपामुद्रा, गौतम की पत्नी अहिल्या, सबकी आधाररूपा वसुन्धरा, गंगा, तुलसी तथा भूतल की सारी श्रेष्ठ सरिताएँ-ये सभी तथा इनके अतिरिक्ति जो अन्य स्त्रियाँ हैं, वे सभी आपकी कला से उत्पन्न हुई हैं। आप मनुष्यों के घर में गृहलक्ष्मी, राजाओं के भवनों में राजलक्ष्मी, तपस्वियों की तपस्या और ब्राह्मणों की गायत्री हो। आप सत्पुरुषों के लिए सत्त्वस्वरूप और दुष्टों के लिये कलह की अन्कुर हो। निर्गुण की ज्योति और सगुण की शक्ति आप ही हो।

आप सूर्य में प्रभा, अगिन् में दाहिका शक्ति, जल में शीतलता और चन्द्रमा में शोभा हो। भूमि में गन्ध और आकाश में शब्द आपका ही रूप हैं। आप भूख-प्यास आदि तथा प्राणियों की समस्त शक्ति हो। संसार में सबकी उत्पत्ति की कारण, साररूपा, स्मृति, मेधा, बुद्धि अथवा विद्वानों की ज्ञानशक्ति आप ही हो। श्रीकृष्ण ने शिवजी को कृपापूर्वक सम्पूर्ण ज्ञान की प्रसविनी जो शुभ विद्या प्रदान की थी, वह आप ही हो; उसी से शिवजी मृत्युज्जय हुए हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश की सृष्टि, पालन और संहार करने वाली जो त्रिविध शक्तियाँ हैं, उनके रूप में आप ही विद्यमान हो; अतः आपको नमस्कार हैं।

जब मधु कैटभ के भय से डरकर ब्रह्मा काँप उठे थे, उस समय जिनकी स्तुति करके वे भयमुक्त हुए थे; उस देवी को मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मधु-कैटभ के युद्ध में जगत के रक्षक ये भगवान विष्णु जिन परमेश्वरी का स्तवन करके शक्तिमान हुए थे, उन दुर्गा को मैं नमस्कार करता हूँ। त्रिपुर के महायुद्ध में रथसहित शिवजी के गिर जाने पर सभी देवताओं ने जिनकी स्तुति की थी; उस दुर्गा को मैं प्रणाम करता हूँ। जिनका स्तवन करके वृषरूपधारी विष्णु द्वारा उठाये गये स्वयं शम्भु ने त्रिपुर का संहार किया था; उन दुर्गा को मैं अभिवादन करता हूँ। जिनकी आज्ञा से निरन्तर वायु बहती हैं, सूर्य तपते हैं, इन्द्र वर्षा करते हैं और अग्नि जलाती हैं; उन दुर्गा को मैं सिर झुकाता हूँ। जिनकी आज्ञा से काल सदा वेगपूर्वक चक्कर काटता रहता हैं और मृत्यु जीव-समुदाय में विचरती रहती हैं; उन दुर्गा को मैं नमस्कार करता हूँ। जिनके आदेश से सृष्टिकर्ता सृष्टि की रचना करते हैं, पालनकर्ता रक्षा

करते हैं और संहर्ता समय आने पर संहार करते हैं; उन दुर्गा को मैं प्रणाम करता हूँ। जिनके बिना स्वयं भगवान श्रीकृष्ण, जो ज्योतिःस्वरूप एवं निर्गुण हैं, सृष्टि-रचना करने में समर्थ नहीं होते; उन देवी को मेरा नमस्कार हैं। जगज्जननी, रक्षा करो, रक्षा करो; मेरे अपराध को क्षमा कर दो । भला, कहीं बच्चे के अपराध करने से माता कुपित होती हैं।

इतना कहकर परशुराम उन्हें प्रणाम करके रोने लगे। तब दुर्गा प्रसन्न हो गयीं और शीघ्र ही उन्हें अभय का वरदान देती हुई बोलीं- हे वत्स ! तुम अमर हो जाओ। बेटा ! अब शान्ति धारण करो। शिवजी की कृपा से सदा सर्वत्र तुम्हारी विजय हो। सर्वान्तरात्मा भगवान् श्रीहरि सदा तुमपर प्रसन्न रहें। श्रीकृष्ण में तथा कल्याणदाता गुरुदेव शिव में तुम्हारी सुदृढ भक्ति बनी रहे; क्योंकि जिसकी इष्टदेव तथा गुरु में शाश्वती भक्ति होती हैं, उस पर यदि सभी देवता कुपित हो जायँ तो भी उसे मार नहीं सकते। तुम तो श्रीकृष्ण के भक्त और शंकर के शिष्य हो तथा मुझ गुरुपत्नी की स्तुति कर रहे हो; इसलिए किसकी शक्ति हैं जो तुम्हें मार सके। अहो ! जो अन्यान्य देवताओं के भक्त हैं अथवा उनकी भक्ति न करके निरंकुश ही हैं, परंतु श्रीकृष्ण के भक्त हैं तो उनका कहीं भी अमंगल नहीं होता।

भार्गव ! भला, जिन भाग्यवानों पर बलवान् चन्द्रमा प्रसन्न हैं तो दुर्बल तारागण रुष्ट होकर उनका क्या बिगाड सकते हैं। सभा में महान आत्मबल से सम्पन्न सुखी नरेश जिसपर संतुष्ट हैं, उसका दुर्बल भृत्यवर्ग कुपित होकर क्या कर लेगा? यों कहकर पार्वती हर्षित हो परशुराम को शुभ आशीर्वाद देकर अन्तःपुर में चली गयीं । तब तुरंत हरि नाम का घोष गूँज उठा ।

फलश्रुति: जो मनुष्य इस काण्वशाखोक्त स्तोत्र का पूजा के समय, यात्रा के अवसर पर अथवा प्रातःकाल पाठ करता हैं, वह अवश्य ही अपनी अभीष्ट वस्तु प्राप्त कर लेता हैं। इसके पाठ से पुत्रार्थी को पुत्र, कन्यार्थी को कन्या, विद्यार्थी को विद्या, प्रजार्थी को प्रजा, राज्यभ्रष्ट को राज्य और धनहीन को धन की प्राप्ति होती हैं। जिसपर गुरु, देवता, राजा अथवा बन्धु-बान्धव क्रुद्ध हो गये हों, उसके लिये ये सभी इस स्तोत्रराज की कृपा से प्रसन्न होकर वरदाता हो जाते हैं। जिसे चोर-डाकुओं ने घेर लिया हो, साँप ने डस लिया हो, जो भयानक शत्रु के चंगुल में फँस गया हो अथवा व्याधिग्रस्त हो; वह इस स्तोत्र के स्मरण मात्र से मुक्त हो जाता हैं। राजद्वार पर, श्मशान में, कारागार में और बन्धन में पडा हुआ तथा अगाध जलराशि में डूबता हुआ मनुष्य इस स्तोत्र के प्रभाव से मुक्त हो जाता हैं। स्वामिभेद, पुत्रभेद तथा भयंकर मित्रभेद के अवसर पर इस स्तोत्र के स्मरण मात्र से निश्चय ही अभीष्टार्थ की प्राप्ति होती हैं। जो स्त्री वर्षपर्यन्त भक्ति पूर्वक दुर्गा का भलीभाँति पूजन करके हविष्यान्न खाकर इस स्तोत्रराज को सुनती हैं, वह महावन्ध्या हो तो भी प्रसववाली हो जाती हैं। उसे ज्ञानी एवं चिरजीवी दिव्य पुत्र प्राप्त होता हैं। छः महीने तक इसका श्रवण करने से दुर्भगा सौभाग्यवती हो जाती हैं। जो काकवन्ध्या और मृतवत्सा नारी भक्ति पूर्वक नौ मास तक इस स्तोत्रराज को सुनती हैं, वह निश्चय ही पुत्र पाती हैं। जो कन्या की माता तो हैं परंतु पुत्र से हीन हैं, वह यदि पाँच महीने तक कलश पर दुर्गा की सम्यक् पूजा करके इस स्तोत्र को श्रवण करती हैं तो उसे अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती हैं।

श्री दुर्गा कवचम् (रुद्रयामलोक्त)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

॥श्री भैरव उवाच॥
अधुना देवि वक्ष्येऽहम् कवचं मन्त्रगर्भकम्।
दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसञ्ज्ञकम्॥१॥
परमार्थप्रदं नित्यं महापातकनाशनम्।
योगिप्रियं योगीगम्यं देवानामपि दुर्लभम्॥२॥
विना दानेन मन्त्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत्।
धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायकः॥३॥
भैरवो भैरवेशानि विष्णुर्नारायणो बली।
ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंशी गजाननः॥४॥
सूर्यस्तमोपहश्चन्द्रो मन्त्रामृतनिधिस्तथा।
सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लेखर्षभः॥५॥
बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात्।
मर्त्योऽप्यमरतां याति साधको मन्त्रसाधकः॥६॥
॥विनियोग॥
कवचस्यास्य देवशि ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः।
छन्दोऽनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताष्टाक्षरा स्मृता॥७॥
चक्रिबीजं च बीजं स्यान्मायाशक्तिरितीरिता।
ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम्॥८॥
ॐ दुँ नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम।
मं ठं गण्डौ च मे पातु देवेशि रक्तकुण्डला॥९॥
वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिषूदिनी।
लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुण्डा चण्डघातिनी॥१०॥
भेकी बीजं सदा पातु दन्तान्मे रक्तदन्तिका।
ॐ ह्रीं श्री पातु मे कण्ठं नीलकण्ठांकवासिनी॥११॥
ॐ ऐं क्लीं पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी।
ॐ सौं क्लीं मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी॥१२॥
सौं ऐं ह्रीं पातु मे हस्तौ वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु कुक्षिं मम मातंगिनी परा॥१३॥
ॐ ह्रीं श्रीं ऐं पातु मे पार्श्वे हिमाचलनिवासिनी।
ॐ स्त्रीं हूँ ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गतिनाशिनी॥१४॥
ॐ क्रीं हूँ पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा।
ॐ ऐं क्लीं सौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम॥१५॥
ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं पातु शिश्नं देवी श्रीबगलामुखी।
ॐ ऐं सौः क्लीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता॥१६॥
ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ह् सौः पायादूरु मम मनोन्मनी।
ॐ जूं सः सौः पातु जानू जगदीश्वरपूजिता॥१७॥
ॐ ऐं क्लीं पातु मे जंघे मेरुवासिनी।
ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी॥१८॥
ॐ ह्रीं दुँ पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी।
पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ माँ वैष्णवी तथा॥१९॥
दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋते नारसिंहिका।
पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये मापराजिता॥२०॥
उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शांभवी तथा।
ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा॥२१॥
प्रभाते त्रिपुरा पातु निशीथे छिन्नमस्तका।
निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका॥२२॥
अग्नेरम्बा च मां पातु जलान्मां जगदम्बिका।
वायोर्मा पातु वाग्देवी वनाद् वनजलोचना॥२३॥
सिंहात् सिंहासना पातु सर्पात् सर्पान्तकासना।
रोगान्मां राजमातंगी भूताद् भूतेशवल्लभा॥२४॥
यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका।
भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा॥२५॥
सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा।
इतीदं कवचं गुह्यं दुर्गा सर्वस्वमुत्तमम्॥२६॥
॥फल-श्रुति॥
मन्त्रगर्भ महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकम्।
वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ॥२७॥
वर्म सिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकम्।
श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम्॥२८॥
महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करम्।
अश्वमेधसहस्त्रस्य फलदं परमार्थदम्॥२९॥
अत्यन्तगोप्यं देवेशि कवचं मन्त्रसिद्धिदम्।
पठनात् सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे॥३०॥
रवौ भूर्जे लिखेद् श्रीमान् कृत्वा कर्माह्निकं प्रिये।
श्रीचक्राग्रेऽष्टगन्धेन साधको मन्त्रसिद्धये॥३१॥
लिखित्वा धारयेद् बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम्।

किं किं साधयेल्लोके गुटिका वर्मणोऽचिरात्॥३२॥
गुटिकां धारयेन्मूर्ध्नि राजानं वशमानयेत्।
धनार्थी धारयेत्कण्ठे पुत्रार्थी कुक्षिमण्डले॥३३॥
तामेव धारयेन्मूर्ध्नि लिखित्वा भूर्जपत्रके।
श्वेतसूत्रेण संवेष्टय लाक्षया परिवेष्टयेत्॥३४॥
सुवर्णेनाथ संवेष्टय धारयेद् रक्तरञ्जुना।
गुटिका कामदा देवि देवनामपि दुर्लभा॥३५॥
कवचस्यास्य गुटिकां धत्वा मुक्तिप्रदायिनीम्।
कवचस्यास्य देवेशि वर्णितुं नैव शक्यते॥३६॥
महिमानं महादेवि जिहवाकोटिशतैरपि।
अदातव्यमिदं वर्म मन्त्रगर्भ रहस्यकम्॥३७॥
अवक्तव्यं महापुण्यं सर्वसारस्वतप्रदम्।
अदीक्षिताय नो दद्यात् कुचैलाय दुरात्मने॥३८॥
अन्यशिष्याय दुष्टाय निन्दकाय कुलार्थिनाम्।
दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च॥३९॥
शान्ताय कुलसक्ताय शान्ताय कुलकामिने ।
इदं वर्म शिवे दद्यात्कुलभागी भवेन्नरः॥४॥
इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम्।
गुहयं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥४१॥
॥इति रुद्रयामल तन्त्रे, श्रीदेवीरहस्ये दुर्गाकवचं॥

श्री मार्कण्डेय कृत लघु दुर्गा सप्तशती स्तोत्रम्

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

ॐ वींवींवीं वेणुहस्ते स्तुतिविधवटुके हां तथा तानमाता, स्वानंदेमंदरुपे अविहतनिरुते भक्तिदे मुक्तिदे त्वम्। हंसः सोहं विशाले वलयगतिहसे सिद्धिदे वाममार्गे, ह्रीं ह्रीं ह्रीं सिद्धलोके कष कष विपुले वीरभद्रे नमस्ते॥१॥

ॐ ह्रीं-कारं चोच्चरंती ममहरतु भयं चर्ममुंडे प्रचंडे, खांखांखां खड्गपाणे ध्रकध्रकध्रकिते उग्ररुपे स्वरुपे। हुंहुंहुं-कार-नादे गगन-भुवि तथा व्यापिनी व्योमरुपे, हंहंहं-कारनादे सुरगणनमिते राक्षसानां निहंत्रि॥२॥

ऐं लोके कीर्तयंती मम हरतु भयं चंडरुपे नमस्ते, घ्रां घ्रां घ्रां घोररुपे घघघघघटिते घर्घरे घोररावे। निर्मांसे काकजंघे घसित-नख-नखा-धूम्र-नेत्रे त्रिनेत्रे, हस्ताब्जे शूलमुंडे कलकुलकुकुले श्रीमहेशी नमस्ते॥३॥

क्रीं क्रीं क्रीं ऐं कुमारी कुहकुहमखिले कोकिले, मानुरागे मुद्रासंज्ञत्रिरेखां कुरु कुरु सततं श्रीमहामारि गुह्ये। तेजोंगे सिद्धिनाथे मनुपवनचले नैव आज्ञा निधाने, ऐंकारे रात्रिमध्ये शयितपशुजने तंत्रकांते नमस्ते॥४॥

ॐ व्रां व्रीं व्रुं व्रूं कवित्ये दहनपुरगते रुक्मरुपेण चक्रे, त्रिःशक्त्या युक्तवर्णादिककरनमिते दादिवंपूर्णवर्णे। ह्रीं-स्थाने कामराजे ज्वल ज्वल ज्वलिते कोशितैस्तास्तुपत्रे स्वच्छंदं कष्टनाशे सुरवरवपुषे गुह्यमुंडे नमस्ते॥५॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोरतुंडे घघघघघघघे घर्घरान्यांघ्रिघोषे, ह्रीं क्रीं द्रं द्रौं च चक्र र र र र रमिते सर्वबोधप्रधाने। द्रीं तीर्थे द्रीं तज्ज्येष्ठ जुगजुगजजुगे म्लेच्छदे कालमुंडे, सर्वांगे रक्तघोरामथनकरवरे वज्रदंडे नमस्ते॥६॥

ॐ क्रां क्रीं क्रूं वामभित्ते गगनगडगडे गुह्ययोन्याहिमुंडे, वज्रांगे वज्रहस्ते सुरपतिवरदे मत्तमातंगरुढे। सूतेजे शुद्धदेहे ललललललिते छेदिते पाशजाले, कुंडल्याकाररुपे वृषवृषभहरे ऐंद्रि मातर्नमस्ते॥७॥

ॐ हुंहुंहुंकारनादे कषकषवसिनी मांसि वैतालहस्ते, सुंसिद्धर्षैः सुसिद्धिर्ढढढढढढढः सर्वभक्षी प्रचंडी। जूं सः सौं शांतिकर्मे मृतमृतनिगडे निःसमे सीसमुद्रे, देवि त्वं साधकानां भवभयहरणे भद्रकाली नमस्ते॥८॥

ॐ देवि त्वं तुर्यहस्ते करधृतपरिघे त्वं वराहस्वरुपे, त्वं चेंद्री त्वं कुबेरी त्वमसि च जननी त्वं पुराणी महेंद्री। ऐं ह्रीं ह्रीं कारभूते अतलतलतले भूतले स्वर्गमार्गे, पाताले शैलभृंगे हरिहरभुवने सिद्धिचंडी नमस्ते॥९॥

हंसि त्वं शौंडदुःखं शमितभवभये सर्वविघ्नांतकार्ये, गांगींगूंगैंषडंगे गगनगटितटे सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये। क्रूं क्रूं मुद्रागजांशो गसपवनगते त्र्यक्षरे वै कराले, ॐ हीं हूं गां गणेशी गजमुखजननी त्वं गणेशी नमस्ते॥१०॥

॥इति मार्कण्डेय कृत लघु सप्तशती दुर्गा स्तोत्रम्॥

नव दुर्गा स्तुति

अमर पति मुकुट चुम्बित चरणाम्बुज सकल भुवन सुख जननी।
जयति जगदीश वन्दिता सकलामल निष्कला दुर्गा॥१॥
विकृत नखदशन भूषण रुधिर वसाच्क्षुरित खड्ग कृत हस्ता।
जयति नर मुण्ड मण्डित पिशित सुरासव रता चण्डी॥२॥
प्रज्वलित शिखि गणोज्ज्वल विकट जटा बद्ध चन्द्र मणि
जयति दिगम्बर भूषा सिद्ध वटेशा महा लक्ष्मीः॥३॥
कर कमल जनित शोभा पद्मासन बद्ध वदना च।
जयति कमण्डलु हस्ता नन्दा देवी नतार्ति हरा॥४॥
दिग् वसना विकृत मुखा फेतकारोद्दाम पूरित दिगौघा।
जयति विकराल देहा क्षेम करी रौद्र भावस्था॥५॥
क्षोभित ब्रह्माण्डोदर स्व मुख स्वर हुं कृत निनादा।
जयति मही महिता सा शिव दूत्याख्या प्रथम शक्तिः॥६॥
मुक्ताट्टहास भैरव दुस्सह रव चकित सकल दिक् चक्रा।
जयति भुजगेन्द्र बन्धन शोभित कर्णा महा रुण्डा॥७॥
पटु पटह मुरज मर्दल झल्लरि काराव नर्तितावयवा।
जयति मधु वृत रुपा दैन्य हरी भ्रामरी देवी॥८॥
शान्ता प्रशान्त वदना सिंह रथा ध्यान योग सन्निष्ठा।
जयति चतुर्भुज देहा चन्द्र कला चन्द्र मंगला देवी॥९॥
पक्ष पुट चञ्चु घातैः सञ्चूर्णित विवुध शत्रु संघाता।
जयति शित शूल हस्ता बहु रुपा रेवती रौद्रा॥१०॥
पर्यटति शक्ति हस्ता पितृ वन निलयेषु योगिनी सहिता।
जयति हर सिद्धि नाम्नो हरि सिद्धि वन्दिता सिद्धैः॥११॥

नवदुर्गा रक्षामंत्र

ॐ शैलपुत्री मैया रक्षा करो।
ॐ जगजननि देवी रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ ब्रह्मचारिणी मैया रक्षा करो।
ॐ भवतारिणी देवी रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ चंद्रघणटा चंडी रक्षा करो।
ॐ भयहारिणी मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ कुषमाणडा तुम ही रक्षा करो।
ॐ शक्तिरूपा मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ स्कन्दमाता माता मैया रक्षा करो।
ॐ जगदम्बा जननि रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ कात्यायिनी मैया रक्षा करो।
ॐ पापनाशिनी अंबे रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ कालरात्रि काली रक्षा करो।
ॐ सुखदाती मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ महागौरी मैया रक्षा करो।
ॐ भक्तिदाती रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ सिद्धिरात्रि मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा देवी रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

गुप्त सप्तशती

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

संपूर्ण श्री दुर्गा सप्तशती के मंत्रो का पाठ करने से साधक को जो फल प्राप्त होता है, वैसा ही कल्याणकारी फल प्रदान करने वाला गुप्त सप्तशती के मंत्रो का पाठ हैं।

गुप्त सप्तशती में अधिकतर मंत्र बीजों के होने से यह साधकों के लिए अमोघ फल प्रदान करने में समर्थ हैं।

गुप्त सप्तशती के पाठ का क्रम इस प्रकार हैं।

प्रारम्भ में **कुञ्जिका स्तोत्र** उसके बाद **गुप्त सप्तशती** उसके पश्चयात स्तवन का पाठ करे।

कुञ्जिका-स्तोत्र

पूर्व-पीठिका-ईश्वर उवाच:

श्रृणु देवि, प्रवक्ष्यामि कुञ्जिका-मन्त्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेन चण्डीजापं शुभम् भवेत्॥१॥
न वर्म नार्गला-स्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तम् नापि ध्यानम् च न न्यासम् च न चार्चनम्॥२॥
कुञ्जिका-पाठ-मात्रेण दुर्गा-पाठ-फलं लभेत्।
अति गुह्यतमम् देवि देवानामपि दुर्लभम्॥३॥
गोपनीयम् प्रयत्नेन स्व-योनि-वच्च पार्वति।
मारणम् मोहनम् वश्यम् स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठ-मात्रेण संसिद्धिः कुञ्जिकामन्त्रमुत्तमम्॥४॥

अथ मन्त्र

ॐ श्लैं दुँ क्लीं क्लौं जुं सः ज्वलयोज्ज्वल ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल प्रबल-प्रबल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

इति मन्त्र

इस कुञ्जिका मन्त्र का दस बार जप करना चाहिए। इसी प्रकार स्तव-पाठ के अन्त में पुनः इस मन्त्र का दस बार जप कर कुञ्जिका स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

कुञ्जिका स्तोत्र मूल-पाठ

नमस्ते रुद्र-रूपायै, नमस्ते मधु-मर्दिनि।
नमस्ते कैटभारी च, नमस्ते महिषासनि॥
नमस्ते शुम्भहंत्रेति, निशुम्भासुर-घातिनि।
जाग्रतं हि महा-देवि जप-सिद्धिं कुरुष्व मे॥
ऐं-कारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रति-पालिका॥
क्लीं-कारी कामरूपिण्यै बीजरूपा नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्ड-घाती च यैं-कारी वर-दायिनी॥
विच्चे नोऽभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणि॥
धां धीं धूं धूर्जटेर्पत्नी वां वीं वागेश्वरी तथा।
क्रां क्रीं श्रीं मे शुभं कुरु, ऐं ॐ ऐं रक्ष सर्वदा।।
ॐ ॐ ॐ-कार-रुपायै, ज्रां-ज्रां ज्रम्भाल-नादिनी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि, शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥
हूं हूं हूं-काररूपिण्यै ज्रं ज्रं ज्रम्भाल-नादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवानि ते नमो नमः॥7॥

मन्त्र:

अं कं चं टं तं पं यं शं बिन्दुराविर्भव, आविर्भव, हं सं लं क्षं मयि जाग्रय-जाग्रय, त्रोटय-त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा, खां खीं खूं खेचरी तथा॥
म्लां म्लीं म्लूं दीव्यती पूर्णा, कुञ्जिकायै नमो नमः॥
सां सीं सप्तशती-सिद्धिं, कुरुष्व जप-मात्रतः॥
इदं तु कुञ्जिका-स्तोत्रं मंत्र-जाल-ग्रहां प्रिये।
अभक्ते च न दातव्यं, गोपयेत् सर्वदा श्रृणु॥
कुंजिका-विहितं देवि यस्तु सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिं, अरण्ये रुदनं यथा॥
॥इति श्रीरुद्रयामले गौरीतंत्रे शिवपार्वतीसंवादे कुंजिकास्तोत्रं संपूर्णम्॥

गुप्त-सप्तशती

ॐ ब्रीं-ब्रीं-ब्रीं वेणु-हस्ते, स्तुत-सुर-बटुकैर्हां गणेशस्य माता।
स्वानन्दे नन्द-रुपे, अनहत-निरते, मुक्तिदे मुक्ति-मार्गे॥
हंसः सोहं विशाले, वलय-गति-हसे, सिद्ध-देवी समस्ता।
हीं-हीं-हीं सिद्ध-लोके, कच-रुचि-विपुले, वीर-भद्रे नमस्ते॥१॥

ॐ हींकारोच्चारयन्ती, मम हरति भयं, चण्ड-मुण्डौ प्रचण्डे।
खां-खां-खां खड्ग-पाणे, ध्रक-ध्रक ध्रकिते, उग्र-रुपे स्वरुपे॥

हुँ-हुँ हुँकांर-नादे, गगन-भुवि-तले, व्यापिनी व्योम-रुपे।
हं-हं हंकार-नादे, सुर-गण-नमिते, चण्ड-रुपे नमस्ते॥२॥

ऐं लोके कीर्तयन्ती, मम हरतु भयं, राक्षसान् हन्यमाने।
घ्रां-घ्रां-घ्रां घोर-रुपे, घघ-घघ-घटिते, घर्घरे घोर-रावे॥
निर्मांसे काक-जंघे, घसित-नख-नखा, धूम्र-नेत्रे त्रि-नेत्रे।
हस्ताब्जे शूल-मुण्डे, कुल-कुल ककुले, सिद्ध-हस्ते नमस्ते॥३॥

ॐ क्रीं-क्रीं-क्रीं ऐं कुमारी, कुह-कुह-मखिले, कोकिलेनानुरागे।
मुद्रा-संज्ञ-त्रि-रेखा, कुरु-कुरु सततं, श्री महा-मारि गुह्ये॥
तेजांगे सिद्धि-नाथे, मन-पवन-चले, नैव आज्ञा-निधाने।
ऐंकारे रात्रि-मध्ये, स्वपित-पशु-जने, तत्र कान्ते नमस्ते॥४॥

ॐ व्रां-व्रीं-व्रूं व्रैं कवित्वे, दहन-पुर-गते रुक्मि-रुपेण चक्रे।
त्रिः-शक्तया, युक्त-वर्णादिक, कर-नमिते, दादिवं पूर्व-वर्णे॥
ह्रीं-स्थाने काम-राजे, ज्वल-ज्वल ज्वलिते, कोशिनि कोश-पत्रे।
स्वच्छन्दे कष्ट-नाशे, सुर-वर-वपुषे, गुह्य-मुण्डे नमस्ते॥५॥

ॐ घ्रां-घ्रीं-घ्रूं घोर-तुण्डे, घघ-घघ घघघे घर्घरान्याङ्घ्रि-घोषे।
ह्रीं क्रीं द्रूं द्रोञ्च-चक्रे, रर-रर-रमिते, सर्व-ज्ञाने प्रधाने॥
द्रीं तीर्थेषु च ज्येष्ठे, जुग-जुग जजुगे म्लीं पदे काल-मुण्डे।
सर्वांगे रक्त-धारा-मथन-कर-वरे, वज्र-दण्डे नमस्ते॥६॥

ॐ क्रां क्रीं क्रूं वाम-नमिते, गगन गड-गडे गुह्य-योनि-स्वरुपे।
वज्रांगे, वज्र-हस्ते, सुर-पति-वरदे, मत्त-मातंग-रुढे॥
स्वस्तेजे, शुद्ध-देहे, लल-लल-ललिते, छेदिते पाश-जाले।
किण्डल्याकार-रुपे, वृष वृषभ-ध्वजे, ऐन्द्रि मातर्नमस्ते॥७॥

ॐ हुँ हुँ हुंकार-नादे, विषमवश-करे, यक्ष-वैताल-नाथे।
सु-सिद्धयर्थे सु-सिद्धैः, ठठ-ठठ-ठठठः, सर्व-भक्षे प्रचण्डे॥
जूं सः सौं शान्ति-कर्मेऽमृत-मृत-हरे, निःसमेसं समुद्रे।
देवि, त्वं साधकानां, भव-भव वरदे, भद्र-काली नमस्ते॥८॥

ब्रह्माणी वैष्णवी त्वं, त्वमसि बहुचरा, त्वं वराह-स्वरुपा।
त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी, त्वमसि च जननी, त्वं कुमारी महेन्द्री॥
ऐं ह्रीं क्लींकार-भूते, वितल-तल-तले, भू-तले स्वर्ग-मार्गे।
पाताले शैल-श्रृंगे, हरि-हर-भुवने, सिद्ध-चण्डी नमस्ते॥९॥

हं लं क्षं शौण्डि-रुपे, शमित भव-भये, सर्व-विघ्नान्त-विघ्ने।
गां गीं गूं गैं षडंगे, गगन-गति-गते, सिद्धिदे सिद्ध-साध्ये॥
वं क्रं मुद्रा हिमांशोर्प्रहसति-वदने, त्र्यक्षरे ह्सैं निनादे।
हां हूं गां गीं गणेशी, गज-मुख-जननी, त्वां महेशीं नमामि॥१०॥

स्तवन

या देवी खड्ग-हस्ता, सकल-जन-पदा, व्यापिनी विशऽव-दुर्गा।
श्यामांगी शुक्ल-पाशाब्दि जगण-गणिता, ब्रह्म-देहार्ध-वासा॥
ज्ञानानां साधयन्ती, तिमिर-विरहिता, ज्ञान-दिव्य-प्रबोधा।
सा देवी, दिव्य-मूर्तिर्प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥१॥

ॐ हां हीं हूं वर्म-युक्ते, शव-गमन-गतिर्भीषणे भीम-वक्त्रे।
क्रां क्रीं क्रूं क्रोध-मूर्तिर्विकृत-स्तन-मुखे, रौद्र-दंष्ट्रा-कराले॥
कं कं कंकाल-धारी भ्रमप्ति, जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती-
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥२॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं रुद्र-रुपे, त्रिभुवन-नमिते, पाश-हस्ते त्रि-नेत्रे।
रां रीं रुं रंगे किले किलित रवा, शूल-हस्ते प्रचण्डे॥
लां लीं लूं लम्ब-जिह्वे हसति, कह-कहा शुद्ध-घोराट्ट-हासैः।
कंकाली काल-रात्रिः प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥३॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोर-रुपे घघ-घघ-घटिते घर्घराराव घोरे।
निमाँसे शुष्क-जंघे पिबति नर-वसा धूम्र-धूम्रायमाने॥
ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती, सकल-भुवि-तले, यक्ष-गन्धर्व-नागान्।
क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥४॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भद्र-काली, हरि-हर-नमिते, रुद्र-मूर्ते विकर्णे।
चन्द्रादित्यौ च कर्णौ, शशि-मुकुट-शिरो वेष्ठितां केतु-मालाम्॥

स्त्रक्-सर्व-चोरगेन्द्रा शशि-करण-निभा तारकाः हार-कण्ठे।
सा देवी दिव्य-मूर्तिः, प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥५॥
ॐ खं-खं-खं खड्ग-हस्ते, वर-कनक-निभे सूर्य-कान्ति-स्वतेजा।
विद्युज्ज्वालावलीनां, भव-निशित महा-कर्त्रिका दक्षिणेन॥
वामे हस्ते कपालं, वर-विमल-सुरा-पूरितं धारयन्ती।
सा देवी दिव्य-मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥६॥

ॐ हुँ हुँ फट् काल-रात्रीं पुर-सुर-मथनीं धूम्र-मारी कुमारी।
ह्रां ह्रीं ह्रूं हन्ति दुष्टान् कलित किल-किला शब्द अट्टाट्टहासे॥
हा-हा भूत-प्रभूते, किल-किलित-मुखा, कीलयन्ती ग्रसन्ती।
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं कपालीं परिजन-सहिता चण्डि चामुण्डा-नित्ये।
रं-रं रंकार-शब्दे शशि-कर-धवले काल-कूटे दुरन्ते॥
हुँ हुँ हुंकार-कारि सुर-गण-नमिते, काल-कारी विकारी।
त्र्यैलोक्यं वश्य-कारी, प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥८॥

वन्दे दण्ड-प्रचण्डा डमरु-डिमि-डिमा, घण्ट टंकार-नादे।
नृत्यन्ती ताण्डवैषा थथ-थइ विभवैर्निर्मला मन्त्र-माला॥
रुक्षौ कुक्षौ वहन्ती, खर-खरिता रवा चार्चिनि प्रेत-माला।
उच्चैस्तैश्चाट्टहासै, हह हसित रवा, चर्म-मुण्डा प्रचण्डे॥९॥

ॐ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखि-गमना त्वं च देवी कुमारी।
त्वं चक्री चक्र-हासा घुर-घुरित रवा, त्वं वराह-स्वरुपा॥
रौद्रे त्वं चर्म-मुण्डा सकल-भुवि-तले संस्थिते स्वर्ग-मार्गे।
पाताले शैल-श्रृंगे हरि-हर-नमिते देवि चण्डी नमस्ते॥१०॥

रक्ष त्वं मुण्ड-धारी गिरि-गुह-विवरे निर्झरे पर्वते वा।
संग्रामे शत्रु-मध्ये विश विषम-विषे संकटे कुत्सिते वा॥
व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधि-भुवि-तले वह्नि-मध्ये च दुर्गे।
रक्षेत् सा दिव्य-मूर्तिः प्रदहतु दुरितं मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥११॥

इत्येवं बीज-मन्त्रैः स्तवनमति-शिवं पातक-व्याधि-नाशनम्।
प्रत्यक्षं दिव्य-रुपं ग्रह-गण-मथनं मर्दनं शाकिनीनाम्॥
इत्येवं वेद-वेद्यं सकल-भय-हरं मन्त्र-शक्तिश्च नित्यम्।
मंत्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मन्त्र-सिद्धिम्॥१२॥

चं-चं-चं चन्द्र-हासा चचम चम-चमा चातुरी चित्त-केशी।
यं-यं-यं योग-माया जननि जग-हिता योगिनी योग-रुपा॥
डं-डं-डं डाकिनीनां डमरुक-सहिता दोल हिण्डोल डिम्भा।
रं-रं-रं रक्त-वस्त्रा सरसिज-नयना पातु मां देवि दुर्गा॥१३॥

भारतिय पंचांग का मूल आधार?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू संस्कृति में पंचांग का विशेष महत्व है। हमारे यहां पंचांग में वर्णित तिथि, पक्ष, ग्रह, नक्षत्र आदि की स्थिती के आधार पर जीवन के विभिन्न 16 संस्कारों से लेकर यात्रा इत्यादि कार्यों हेतु भी शुभ मुहूर्त का चयन करने पर विशेष जोर दिया जाता हैं।

शुभ मुहूर्त देखने का मुख्य उद्देश्य होता हैं की व्यक्ति को अपने शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त हो सके मुख्यतः अयन, विषुव, ऋतु, सूर्य एवं चंद्र, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, करण, योग, सूर्योदय व चंद्रोदय, दिनमान, रात्रिमान और पंचांग के मुख्य अंग माने जाते हैं। उपरोक्त सभी महत्वपूर्ण स्थितीयों का गणित के आधार पर सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है।

विद्वानो के मत से वैदिक प्रणाली में इनका कोई विशेष निर्देश नहीं है। लेकिन कालगणना में परिशुद्धता के लिए इन्हें अपनाया जाता हैं।

पृथ्वी सूर्य के आकर्षण से निर्धारित एक नियत मार्ग में सतत भ्रमण करती है। साधारणतः पृथ्वी से सूर्य जिस मार्ग पर चलता हुआ प्रतीत होता है, उसे ज्योतिष की पारिभाषिक शब्दावली में क्रांतिवृत्त अर्थात एकलिप्टिक (Ecliptic) कहते हैं। इस क्रांतिवृत्त मार्ग के 9 अंश से बने विस्तार को भचक्र कहते हैं। पृथ्वी की नियत गति के कारण ही अयन, विषुव, ऋतु एवं दिन-रात होते हैं।

संक्रांति निर्धारण और पंचांग की परिशुद्धता में अयन और विषुव तिथियों की भूमिका प्रमुख मानी जाती हैं। जिस प्रकार पृथ्वी का संबंध सूर्य क्रांतिवृत्त से रहता है उसी प्रकार पृथ्वी का संबंध से चंद्र अपने निश्चित माग्र में भ्रमण करता है। अन्य ग्रहो की अपेक्षा चंद्र अति शीघ्र गति करता है इस लिए चंद्र जब सूर्य से 12 अंशों के अंतर पर आता है, तब एक तिथि का क्रम पूरा हो जाता है। इस प्रकार क्रमशः 12-12 अंशों के अंतर से नियमित तिथियां बदलती हैं।

भारतिय संस्कृति मे मुहूर्त का महत्व

भारतिय संस्कृति मे मुहूर्त का विशेष महत्व हैं। हमारे ऋषि-मुनि विद्वान आचार्यो ने जन्म से अंत्येष्टि(मृत व्यक्ति कि अंतिम क्रिया) तक सभी संस्कारों एवं अन्य सभी मांगलिक कार्यों के लिए मुहूर्त का विधान आवश्यक बताया गया हैं।किसी कार्य विशेष में सफलता कि प्ताप्ति हेतु निश्चित मुहूर्त का चुनाव किया जाता हैं।

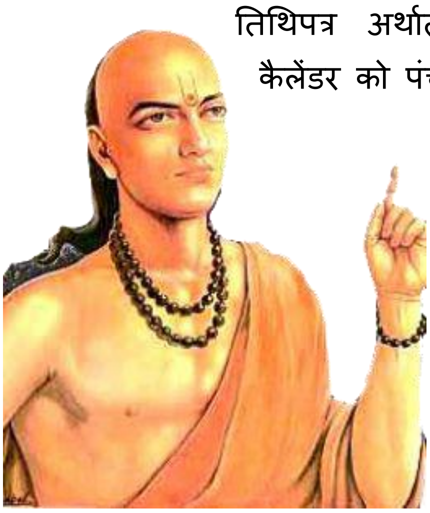
भारतीय ज्योतिष सिद्धान्त के अनुशार हर मुहूर्त का अपना वैज्ञानिक प्रभाव एवं महत्व हैं। कोई भी व्यक्ति इन मुहूर्त के प्रभाव एवं महत्व के बारे मे पूर्ण जानकारी प्राप्त कर व्यक्ति अपने किसी भी कार्य उद्देश्य में विशेष सफलता प्राप्ति हेतु उचित मुहूर्त का चुनाव कर सफलता प्राप्ति कि संभावना बढा सकते हैं। एवं ज्योतिषीय मत से शुभ फल प्रदान करने वाले मुहूर्त में किये गये कार्यो में उस कार्य की सफलता की संभावना कई गुणा बढ़ जाती है।

प्रायः हर मुहूर्त का निर्णय ब्रह्मांड में स्थित ग्रहो कि स्थितियों कि गणना कर किया जाता हैं। भारतिय संस्कृति में प्रायः हर शुभ कार्य में भारत के प्रमुख 16 संस्कारो को संपन्न करने हेतु मुहूर्त का चुनाव अति आवश्यक माना गया हैं। क्योकि शुभा मुहूर्त में किये गये हर शुभ कार्य अत्याधिक शुभ फल प्रदान करने वाले होते हैं।

भारतीय पंचांग गणना की वैज्ञानिक पद्धति क्या हैं?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारतीय पंचांग का इतिहास अत्यंत प्राचिन हैं। भारत में विभिन्न प्रादेशिक पंचांग में क्रमश तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण यह पांच प्रमुख अंग होते हैं। क्योकि, इसी पांच अंगों को मिलाकर भारतीय तिथिपत्र अर्थात् दिनदर्शिका अर्थात् कैलेंडर को पंचांग कहा जाता हैं।



पुरातन काल से लेकर आज के आधुनिक युग में पंचांग की पौराणिक गणना एवं निर्माण पद्धति में समय-समय पर सुधार या सुक्ष्मता आती रही हैं। क्योकि, पंचांग का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन को प्रभावित करने वाले ग्रह, नक्षत्र आदि ब्रह्मांडिय शक्ति की स्टीक गणना कर मानव समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना एवं उनको लाभांवित करना हैं, इस लिए पंचांग में नए शोध एवं आधुनिक परिक्षण द्वार पंचांग गणना में स्टीकता आति रही हैं। इस परिणाम हैं की, आज हमारे पास पंचांग गणना एवं निर्माण के सशक्त माध्यम उपलब्ध है। आज भारत भर में राष्ट्रीय पंचांग के के साथ-साथ कई क्षेत्रीय पंचांग उपलब्ध हैं।

अंदाजन ई.500 के करीब आचार्य लगध का वेदांग-ज्योतिष (ऋक् व याजुष) की रचना की थी। जिस में वर्णित हैं की पांच वर्ष का एक युग, 366 दिनों का वर्ष होता हैं।

11 वीं सदी से पूर्वकाल में अधिकतर भारतीय पंचांग की गणना आचार्य लगध द्वारा रचित ग्रंथ **वेदांग ज्योतिष** में उल्लेखित तथ्यों पर आधारित होती थी।

शास्त्रों में कहाँ गया हैं।

कालज्ञानं प्रचक्ष्यामि लगधस्य महात्मनः।

कालज्ञान बोधक ज्योतिषशास्त्र का वर्तमान विकसित स्वरुप आचार्य लगध मुनि की देन हैं।

समय के साथ-साथ आर्यभट्ट की खगोलीय गणना की विधियां भी बहुत प्रभावशाली साबित हुई, कि उनके द्वारा प्रयोग किए गए सिद्धांत विश्व की अन्य सभ्यता एवं संस्कृतियों में भी नजर आने लगे थे। 11वीं सदी में स्पेन के मसहूर वैज्ञानिक अल झर्काली (Al Zarkali) ने भी अपने कार्यों में आर्यभट्ट की खगोलीय गणना से मेलखाती हुई प्रणाली को तोलेडो (Toledo) नाम दिया। करीब 11वीं- 12वीं सदी से लेकर कई सदीयों तक में यूरोपीयन देशों में तोलेडो प्रणाली को सर्वाधिक सूक्ष्म गणना के तौर पर किया जाता था।

भारतीत गणितज्ञ आर्यभट्ट ने अपने अनुभवों एवं शोधनकार्य से आर्यभट्ट सिद्धांत नामक ग्रंथ की रचना की जिस में दैनिक खगोलीय गणना और अनुष्ठानों के लिए शुभ मुहूर्त इत्यादि का समावेश किया गया। विद्वानों के मत से आर्यभट्ट सिद्धांत को चारों ओर से स्वीकृति मिली थी। क्योकि आर्यभट्ट अपने समय के सबसे बड़े गणितज्ञ थे।

आर्यभट्ट सिद्धांत की लोकप्रियता एवं प्रामाणिकता सिद्ध होते ही भारतीय पंचांग की गणना एवं निर्धारण में विशेष महत्व एवं योगदान रहा हैं। आर्यभट्ट के समय से लेकर आजके आधुनिक युग में भी इस सिद्धांत को व्यावहारिक उद्देश्यों से भारत एवं विदेशों में निरंतर इस्तेमाल में रहा हैं।

आचार्य लगध द्वारा रचित ग्रंथ **वेदांग ज्योतिष** में वर्णित सूर्य सिद्धांत की प्रामाणिकता सिद्ध होने पर पंचांग गणना में सुलभता होने लगी। जिस में आगेचलकर आर्यभट्ट, वराहमिहिर और भास्कर ने अपने योगदान से पंचांग गणना पद्धति से जुडे ग्रंथो में व्यापक सुधार किए।

विभिन्न प्रदेशो एवं संस्कृति की भिन्नता के कारण पंचांगों की गणनाओं में अंतर हो जाता है, लेकिन कुछ तथ्य प्रायः सभी पंचांगों में समान होते हैं।

सभी पंचांगों के मुख्य पाँच अंग: तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण।

वृहदवकहडाचक्रम, पंचांग प्रकरण, श्लोक 1 में कहा गया है -

तिथि वारिश्च नक्षत्रां योग करणमेव च।
एतेषां यत्रा विज्ञानं पंचांग तन्निगद्यते॥

किसी भी विशुद्ध पंचांग को किसी स्थान विशेष के अक्षांश और रेखांश पर निर्धारित किया जाता हैं। किसी पंचांग के निर्माण के लिए किसी निर्धारित स्थान विशेष के अक्षांश रेखांश का स्पष्ट उल्लेख किया जाता हैं।

मुख्यतः पंचांग प्रस्तुति की दो मुख्य पद्धतियां मानी जाती हैं। एक हैं निरयन और और दूसरी हैं सायन।

भारतीय के पंचांग में ज्यादातर निरयन पद्धति अधिक प्रचलित हैं और पाश्चात्य देशों में सायन पद्धति अधिक प्रचलित हैं।

तिथि :

चंद्र की एक कला को तिथि कहा जाता हैं। कला का मान सूर्य और चंद्र के अंतरांशों पर निर्धारित किया जाता हैं।

तिथि निर्धारण के विषय में शास्त्र में वर्णित हैं।

अर्काद्विनिसृजः प्राचीं यद्यात्यहरहः शषी।
तच्चान्द्रमानमंषैस्तु ज्ञेया द्वादषभिस्तिथिः॥

(श्लोक 13:मानाध्याय:सूर्य सिद्धांत:)

वैदिक ज्योतिष में राशियो को 360 डिग्री को 12 भागो में बांटा गया है जिसे **भचक्र** कहते हैं।

वैदिक पंचांग में 30 तिथियां होती हैं। जिसमें 15 तिथियां कृष्ण पक्ष की तथा 15 शुक्ल पक्ष की होती हैं। लेकिन चंद्र की गति में भिन्नता होने के कारण तिथि के मान में न्यूना एवं धिकता बनी रहती है।

संपूर्ण भचक्र की 360 डिग्री को 30 तिथियों को 360 ÷ 30 =12 शेष बचते हैं। चंद्र अपने परिक्रमा पथ पर एक दिन में लगभग 13 अंश बढ़ता है। सूर्य भी पृथ्वी के संदर्भ में एक दिन में 1° या 60 कला आगे बढ़ता हैं। इस लिए एक दिन में चंद्र की कुल बढ़त 13 अंश से सूर्य की बढ़त के 1 अंश घटाने पर 12 अंश (13°-1°=12°) शेष रह जाते हैं। शेष बची बढ़त ही सूर्य और चंद्र की गति का अंतर होती हैं।

अमावस्या के दिन सूर्य और चंद्र एक साथ एक ही राशि व एक ही अंशों में स्थित होते हैं। दोनों के बीच का राशि अंतर शून्य होता हैं, इसलिए चंद्र दिखाई नहीं देता हैं। जब दोनों का अंतर शून्य से बढ़ने लगता हैं तब शुक्ल प्रतिपदा तिथि का उदय (प्रारंभ) होने लगता हैं। समय के साथ जब यह अंतर बढ़ते-बढ़ते 12° अंश का हो जाता है, तब प्रतिपदा तिथि पूर्ण होकर द्वितीया तिथि का उदय होता है। चूंकि प्रतिपदा तिथि के दिन भी चंद्र सूर्य से केवल 12 अंश ही आगे निकलता है, इसलिए प्रतिपदा तिथि को भी आकाश में चंद्रदर्शन नहीं होते हैं। इसी प्रकार सूर्य-चंद्र के राशि अतर से किसी तिथि विशेष का निर्धारण किया जाता हैं। करीबन पंद्रह दिन बाद में जब चंद्र का अंतर सूर्य से 180 अंश होता हैं (12 x15=180) आगे होता है, तब पूर्णिमा तिथि की समाप्ति होती हैं तथा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा तिथि का उदय होता हैं। पुनः जब सूर्य और चंद्र का अंतर 360 अंश अर्थात शून्य होता हैं तब कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि समाप्त होती हैं।

वार:

भारतीय ज्योतिष में एक वार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक रहता हैं।

वार को परिभाषित करते हुए शास्त्रों में उल्लेख किया गया हैं

उदयात्उदयं वारः।

वार को पौराणिक ज्योतिष में सावन दिन या अहर्गण के नाम से भी जाना जाता हैं। वारों का प्रचलित क्रम पुरे विश्व में एक समान है।

सात वारों के नाम सात ग्रहों के नाम पर रखे गए हैं। इन सात वारों का क्रम होरा क्रम के आधार पर रखे गए है और होरा क्रम ब्रहमांड में स्थित सूर्यादि ग्रहों के कक्ष क्रम के अनुसार निर्धारित किए गए हैं।

नक्षत्र :

ज्योतिष शास्त्र में 12 राशियां अर्थात भचक्र 360 अंश को 27 नक्षत्रों के 27 भागों में बांटा गया हैं। हर भाग एक नक्षत्र का कारक है और हर एक भाग को नक्षत्रों का एक निर्धारित नाम दिया गया है।

कुछ विद्वानो के मतानुशार 27 नक्षत्रों के अतिरिक्त एक और नक्षत्र हैं जिसे अभिजित नक्षत्र के नाम से जाना जाता हैं इस लिए उनके मत से कुल मिलाकर 28 होते हैं।

सूर्य सिद्धांत के अनुसार एक नक्षत्र का मान 360 अंश /27 नक्षत्र अर्थात एक नक्षत्र के लिए 13 अंश 20 कला शेष रहता हैं।

विद्वानों के कथन अनुसार उत्तराषाढ़ा नक्षत्र की अंतिम 15 तथा श्रवण नक्षत्र की प्रथम 4 घटियां के बिच का काल अभिजित नक्षत्र की होती हैं। इस तरह अभिजित नक्षत्र का मान कुल मिलाकर 19 है। लेकिन प्रायः पंचांगों में इस नक्षत्र की गणना देखने को नहीं मिलती हैं।

बृहत्संहिता में चंद्र का नक्षत्रों से योग बताते हुए उल्लेख किया गया हैं:-

षडनागतानिपौष्णाद् द्वादशरौद्राच्चमध्ययोगीनि।
जेष्ठाद्यानिनवर्क्षाण्यफडुपतिनातीत्य युज्यन्ते॥

इस श्लोक के अनुसार भी 27 नक्षत्रों वाला मत प्रामाणिक माना जाता हैं।

ज्योतिष में 27 नक्षत्रों को 12 राशियों में विभाजित किया जाता हैं। प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण (भाग) किए गए हैं। जिससे प्रत्येक चरण का मान 13 अंश 20 कला माना गया हैं जिसे उसके चार चरण से भाग देने पर 3 अंश 20 कला शेष बचती हैं। (13 अंश 20 ÷ 4 = 3 अंश 20 कला)

इस प्रकार 27 नक्षत्रों में कुल 108 चरण होते हैं।

वृहज्जातकम् के अनुसार प्रत्येक राशि में 108 चरण को 12 राशि में भाग देने से 9 चरण होंगे। (108÷ 12 = 9) विद्वानो के मत से चंद्र लगभग 27 दिन 7 घंटे 43 मिनट में 27 नक्षत्र की परिक्रमा पूर्ण कर लेता हैं। इस लिए चंद्र लगभग 1 दिन (60 घटी) में एक नक्षत्र में भ्रमण करता हैं। लेकिन अपनी गति कम-ज्यादा होने कारण चंद्र एक नक्षत्र को अपनी कम से पार करने में लगभग 67 घटी एवं अपनी अधिकतम गति से पार करने में लगभग 52 घटी का समय लेता हैं।

योग :

पंचांग में मुख्यतः योग दो प्रकार के माने गए हैं

(१) आनंदादि योग और

(२) विष्कंभादि योग

जिस प्रकार सूर्य और चंद्र के राशि अंतर से तिथि का निर्धारण होता हैं, उसी प्रकार सूर्य और चंद्र के राशि अंतर के योग करने से विष्कंभादि योग का निर्धारण होता हैं। यहां स्पष्ट किया जा रहा हैं, की योग ब्रहमांड के किसी प्रकार के तारा समूह अर्थात ग्रह नक्षत्र नहीं हैं। वरन चंद्र एवं सूर्य के अंतर का योग निर्धारण की स्थिती का नाम हैं।

आकाश में निरयन इत्यादि बिंदुओं से सूर्य और चंद्र को संयुक्त रूप से 13 अंश 20 कला अर्थात 800 कला का पूरा भोग करने में जितना समय लगता है, वह योग कहलाता है। इस प्रकार के किसी भी एक योग का मान नक्षत्र की भांति 800 कला होता हैं।

विष्कंभादि योगों की कुल संख्या 27 हैं।

योग का दैनिक मान लगभग 60 घटी 13 पल होता है। सूर्य और चंद्र की गतियों की असमानता के कारण मध्यम मान में न्यूनता एवं धिकता बनती हैं। इन योगों में वैधृति एवं व्यतिपात नामक योगों को महापातक कहते हैं।

वार और नक्षत्र के संयोग से तात्कालिक आनंदादि योग बनते हैं। पौराणिक ग्रथों में इनकी संख्या 28 दर्शाई है। इन्हें स्थिर योग भी कहते हैं। इनकी गणितीय क्रिया नहीं है। ये योग सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक रहते हैं। इन योगों का निर्धारण वार विशेष को निर्दिष्ट नक्षत्र से विद्यमान नक्षत्र (अभिजित नक्षत्र के साथ) तक की गणना द्वारा होता है।

करण:

किसी भी तिथि का आधा भाग करण कहलाता हैं। सूर्य और चंद्र में 60 अंश का अंतर होने में जितना समय लगता उस अंतर से करण का निर्धारण किया जाता हैं। किसी-किसी पंचांगों में करण का वर्णन केवल सूर्योदयकालीन समय से किया जाता हैं, तो किसी-किसी पंचांगों में तिथि की संपूर्ण अवधि को दो समान भाग करके विशेश तौर पर करणों का निर्धारण कर देते हैं। एक तिथि में दो करण होते हैं। इनकी कुल संख्या ११ है।

करण को दो भागों में बांटा गया हैं चर और स्थिर।

बव, बालव, कौलव, तैत्तिल, गर, वणिज एवं विष्टि (भद्रा) चर और किंस्तुन, शकुनि, चतुष्पद एवं नाग स्थिर संज्ञक करण हैं।

करण की शुरुआत स्थिर करण अर्थात किंस्तुन से होती हैं जब भचक्र में सूर्य और चंद्र के बीच अंश का अंतर शून्य होता हैं, तो प्रतिपदा तिथि के साथ ही स्थिर किंस्तुन करण का शुरु होता हैं। जब चंद्र गति सूर्य से 6 अंश आगे निकल जाती हैं, तब किंस्तुन करण की समाप्ति होती हैं। अर्थात सूर्य और चंद्र में 6 अंश का अंतर होने में जो समय लगता हैं, उसे किंस्तुन करण कहा जाता हैं। इसी प्रकार क्रमशः 6-6 अंश के अंतर पर करण बदल जाते हैं।

करण तिथि का आधा भाग होता हैं।

तिथि के पूर्वार्द्ध अर्थात पहले आधे भाग में एक करण, उत्तरार्द्ध अर्थात दूसरे आधे भाग का एक करण। इस प्रकार एक तिथि में 2 करण होते हैं।

सूर्य और चन्द्रमा के बीच 6° अंश का अन्तर होने से एक करण होता हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार करण की कुल संख्या 11 होती हैं। 11 चरण को दो भागो में बाटा गया हैं चर करण और स्थिर करण।

चर करण में

1) बव
2) बालव
3) कौलव
4) तैतिल
5) गर
6) वणिज
7) विष्टि का समावेश किया गया हैं।

स्थिर करण में

1) शकुनि 2) चतुष्पद 3) नाग
4) किस्तुघ्न का समावेश किया गया हैं।

जब सूर्य और चन्द्रमा की गति में 13°-20' का अन्तर होने से एक योग होता हैं। कुल मिला कर 27 योग होते हैं आकाश की स्थिति से इन योगो का कोइ सम्बन्ध नहीं हैं। वैसे भी योगो की आवश्यकता विशेष रुप से यात्रा, मुहुर्त इत्यादि प्रसंगों में पडती हैं।

योगो के नाम

1) विष्कुम्भ
2) प्रीति
3) आयुष्मान
4) सौभाग्य
5) शोभन
6) अतिगड
7) सुकर्मा
8) घृति
9) शूल
10) गंड
11) वृद्धि
12) ध्रुव
13) व्याघात
14) हर्षण
15) वज्र
16) सिद्धि
17) व्यतीपात
18) वरीयान
19) परिध
20) शिव
21) सिद्ध
22) साध्य
23) शुभ
24) शुक्ल
25) ब्रहम
26) ऐन्द्र
27) वैधृति

चान्द्र मास

चान्द्र मास में कुल 30 तिथियाँ होती हैं जिनमें 15 तिथियाँ शुक्ल पक्ष की और 15 कृष्ण पक्ष की होती हैं। तिथियाँ निम्न प्रकार की हैं।

1) प्रतिपदा	9) नवमी
2) द्वितीया	10) दशमी
3) तृतीया	11) एकादशी
4) चतुर्थी	12) द्वादशी
5) पंचमी	13) त्रयोदशी
6) षष्टी	14) चतुर्दशी
7) सप्तमी	15) पूर्णिमा
8) अष्टमी	30) अमावस्या

तिथियाँ शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से गिनी जाती हैं। पूर्णिमा को 15 तथा अमावस्या को 30 तिथि कहते हैं। जिस दिन सूर्य व चन्द्रमा में 180° अंश का अन्तर (दूरी) होता हैं अर्थात सूर्य व चन्द्र आमने-सामने हो जाते हैं तो उसे पूर्णिमा तिथि कहा जाता हैं और जब सुर्य व चन्द्रमा एक ही स्थान परहोते हैं अर्थात 0° का अन्तर होता हैं तो अमावस्या तिथि कहते हैं। भचक्र का कुलमान 360° हैं, तो एक तिथि= $360 \div 30 = 12^{\circ}$ अर्थात सूर्य-चन्द्र में 12° का अन्तर पडने पर एक तिथि होती हैं।

उदाहरण स्वरुप:

0° से 12° तक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा 12° से 24° तक द्वितीय तथा क्रमशः तिथि वृद्धि होकर अंत में 330° से 360° तक कृष्ण पक्ष की अमावस्या को अंत होती हैं।

भारतीय ज्योतिष की परम्परा में तिथि की वृद्धि एवं तिथि का क्षय भी होता हैं। यदि किसी तिथिमें दो बार सूर्योदय हो जाता हैं, तो उसे तिथि वृद्धि कहलाती हैं तथा जिस तिथि में सूर्योदय न हो तो उसे तिथिका क्षय हो जाना कहा जाता हैं।

उदाहरण के लिए एक तिथि सूर्योदय से पूर्व प्रारम्भ होती हैं तथा संपूर्ण दिन रहकर अगले दिन सूर्योदय के 2 घंटे पश्चात तक भी रहती हैं तो यह तिथि दो सूर्योदय को स्पर्श कर लेती हैं।

इसलिए इस तिथिमें वृद्धि हो जाती हैं। इसी प्रकार एक अन्य तिथि सूर्योदय के पश्चात प्रारम्भ होती है तथा दूसरे दिन सूर्योदय से पहले समाप्त हो जाती हैं, तो यह तिथि एक भी सूर्योदय को स्पर्श नहीं करती इस कारण उसे क्षय होने से तिथिक्षय कहा जाता हैं।

कैलेण्डर युग की उत्पत्ति कब हुई ?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

साधारणतः कैलेण्डर का उपयोग दिनांकों (तारीखों) महिने, वर्ष का हिसाब रखने के लिए किया जाता हैं। कैलेण्डर का उद्‌गम कब हुवा और कैलेण्डर का उपयोग मानव समाज कब से कर रहा हैं यह दावे के साथ कोई नहीं कह सकता! क्योकि, जब पौराणिक काल में जब आदि मानव वन-बीहड़ों और गुफाओं में रहते थे तो, यहं देख कर अवश्य आश्चर्यचकित हुए होंगे कि, प्रतिदिन सूरज उदय होता हैं और शाम को अस्त हो जाता हैं, चांद निकलता है और छूप जाता हैं। कभी भयंकर गर्मी पड़ती हैं, तो कभी जोरों की वर्षा होने लगती हैं। और फिर, कभी हिला कर रख देने वाली ठंड पड़ने लगती हैं। उसने जरूर सोचा होगा कि प्रकृति में समय-समय पर ऐसे बदलाव क्यों होते हैं? क्यों ऋतुएं आती-जाती हैं?

जब आदि मानव ने खेती करना शुरू किया होगा तब, उसने जमीन में बीज बोये होंगे तो उसने देखा होगा कि फसल उगती हैं, बढ़ती है और समय के साथ-साथ पक जाती है। फिर उस फसल की कटाई कर लेता होगा। पुनः बीज बोने का समय आने पर फिर से बीज बोए होंगे। इस तरह फसल की बोआई-कटाई का क्रम चलता रहा होगा। इस क्रम से शायद उसने पहली बार इस बात का अंदाजा लगाना शुरू किया होगा कि फसल बोने के कितने समय बाद फिर से नई फसल के बीज बोने हैं। धीरे-धीरे आदि मानव नें इस तरह शायद पहली बार पूरे वर्ष का हिसाब लगाया होगा। आदि काल से ही किसी भी तरह विश्व की विभिन्न सभ्यताओं ने निश्चित तौर पर अपने-अपने ढंग से समय का हिसाब लगाया होगा।

मिस्रवासीयों के मत से:

अनुमानिक तौर पर एसा माना जाता हैं की वर्ष का पहला हिसाब सबसे 6,000 वर्ष पहले मिस्र के निवासियों ने लगाया था। हर साल जब नील नदी में बाढ़ आती थी तो उसके बाद वे फसलों की बोआई करते थे। बाढ़ आने के बाद जब नील नदी में दुबारा बाढ़ आती थी तो उन्होंने देखा कि उस दौरान चांद 12 बार उगता था। यानी, 12 चंद्र-माहों के बाद बाढ़ आती थी और तब वे फसल की बोआई करते थे। मिस्र के कुछ विद्वानो ने देखा कि जब बाढ़ आती है तो आसमान में एक तेज चमकदार तारा भी दिखाई देने लगता है। उन्होंने गणना की तो पता लगा कि 365 दिन-रात के बाद फिर ऐसा ही होता है। फिर तारा चमकने लगता है। मिस्र के निवासियों ने 365 दिन के वर्ष को 30 दिन के 12 महीनों में बांट दिया। वर्ष के अंत में पांच दिन बच गए। इस तरह मिस्र के निवासियों ने कैलेंडर का आविष्कार कर लिया होगा।

अभी तक हुए ऐतिहासिक शोध से जुलियन और ग्रेगोरीयन कैलेंडर महत्वपूर्ण माने जाते हैं। जुलियन कैलेंडर रोम के शासक जुलियस सीजर ने तैयार किया था। आगे चल कर पोप ग्रेगोरी तेरहवें ने इस कैलेण्ड में सुधार करके ग्रेगोरीयन कैलेंडर तैयार किया था।

45 ईस्वी पूर्व से अर्थात इस समय से पहले तक रोम साम्राज्य में रोमन कैलेंडर प्रचलित था। रोमन कैलेंडर में वर्ष का प्रारंभ 1 मार्च से होता था। प्रारंभ में रोमन कैलेंडर में वर्ष 10 माह का होता था फिर उसे 12 महिनो का किया गया।

जब रोमन कैलेंडर में 10 माह होते थे तो उस में 10 माह क्रमशः मार्टिअस, एप्रिलिस, मेअस, जूनिअस, क्विंटिलिस, सैक्सिटिलिस, सेप्टेंबर, अक्टूबर, नवंबर तथा दिसंबर।

रोमन कैलेंडर को 10 माह से जब 2 माह मिला कर उसे 12 महिनो का किया गया तो उस में 12 माह क्रमशः लान्युआरीअस, फेब्रुआरीअस, मार्टिअस, एप्रिलिस, मेअस, जूनिअस, क्विंटिलिस, सैक्सिटिलिस, सेप्टेंबर, अक्टूबर, नम्बबर तथा दिसबबर थे।

रोमन कैलेंडर के 10 महीनों के वर्ष में केवल 304 दिन होते थे। एसा माना जाता है कि रोम के सम्राट 'नुमा पोम्पिलिअस' ने दिसंबर और मार्च महीनों के बीच फरवरी और जनवरी माह जोड़े। जिससे वर्ष 354 या 355 दिनों का हो गया। हर दो वर्ष बाद अधिमास जोड़ कर 366 दिन का वर्ष मान लिया जाता था। समय के साथ-साथ इसमें सुधार होते रहे।

जिससे कैलेंडर की गणनाएं चंद्रमा के बजाय दिनों के आधार पर होने लगीं। पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा की गणना के आधार पर वर्ष में दिनों की संख्या 365.25 हो गई। इस सवा अर्थात् एक चौथाई दिन से गणना में बड़ा भ्रम पैदा होने लगा।

उस समय रोम के शासक जुलियस सीजर ने रोमन कैलेंडर में विशेष सुधार किया। ईस्वी पूर्व 44 में क्विंटिलिस माह का नाम बदल कर जूलियस सीजर के सम्मान में 'जुलाई' रख दिया गया। जुलियस सीजर ने कैलेंडर को सुधारने में मिस्र के खगोलविद सोसिजेनीज की मदद ली। फिर वर्ष 1 जनवरी से शुरू किया गया। जिस में हर चौथे वर्ष को छोड़ कर प्रत्येक वर्ष 365 दिन का होगा। चौथा वर्ष लीप वर्ष होगा और उसमें 366 दिन होंगे। फरवरी को छोड़ कर प्रत्येक माह में 31 या 30 दिन होंगे। फरवरी में 28 दिन होंगे लेकिन लीप वर्ष में फरवरी में 29 दिन माने जाएंगे। अनुमान है कि 8 ईस्वी पूर्व में सम्राट ऑगस्टस के नाम पर सेक्सटिलिस माह का नाम 'अगस्त' रख दिया गया।

माना जाता हैं की जूलियन कैलेंडर के अनुशार ईस्टर का त्यौहार और अन्य धार्मिक तिथियां संबंधित ऋतुओं में सही समय पर नहीं आती थीं। जिससे कैलेंडर में अतिरिक्त दिन जमा हो गए थे। पोप ग्रेगोरी 1572 से 1585 तक तेरहवें पोप रहे। सन् 1582 तक वर्नल इक्विनॉक्स 10 दिन पिछड़ चुका था।

पोप ग्रेगोरी तेरहवें ने जूलियन कैलेंडर की 10 दिनों की त्रुटि को सुधारने के लिए उस वर्ष 5 अक्टूबर की तिथि को 15 अक्टूबर मानने का सुझाव दिया। जिसके फलस्वरुप जूलियन कैलेंडर में से 10 दिन घटा दिए गए। उस समय लीप वर्ष शताब्दी के अंत में रखा गया बशर्ते वह 400 की संख्या से विभाजित होता हो। इसीलिए 1700, 1800 और 1900 लीप वर्ष नहीं थे जबकि वर्ष 2000 लीप वर्ष था। इस संशोधन से ग्रेगोरीय कैलेंडर की शुरूआत हुई जिसे आज विश्व के अधिकांश देशों में अपनाया जा रहा है।

इसके बावजूद विश्व के कई देश समय की गणना के लिए अभी भी अपने परंपरागत पंचांग या कैलेंडर का उपयोग कर रहे हैं। हिन्दु, चीनी, इस्लामी या हिजरी और यहूदी कैलेंडर इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

पौराणिक काल में पंचांग गणना कैसे होती थी?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

यजुर्वेद काल में भारतीयों ने मासों के 12 नाम क्रमशः मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभ, नभस्य, इष, ऊर्ज, सह, सहस्र, तप तथा तपस्य रखे थे।

मधुश्च माधवश्च शुक्रश्च शुचिश्च
नभश्च नभस्यश्चेषश्चोर्जश्च सहश्च
सहस्यश्च तपश्च तपस्यश्चोपयामगृहीतोसि
सहं सर्वोस्यहं हस्पत्याय त्वा॥

(तित्तिर संहिता 1.4.14)

यजुर्वेद के ऋषि थे वैशम्पायन के शिष्य के शिष्य तित्तिर संहिता (उपनिषय) में संवत्सर के मासों के 13 महिनो के नाम क्रमशः- अरुण, अरुणरज, पुण्डरीक, विश्वजित्, अभिजित्, आर्द्र, पिन्वमान्, अन्नवान्, रसवान्, इरावान्, सर्वौषध, संभर, महस्वान् थे।

बाद में यही नाम पूर्णिमा के दिन चंद्रमा के नक्षत्र के आधार पर चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फाल्गुन हो गए।

यजुर्वेद में नक्षत्रों की पूरी संख्या तथा उनकी अधिष्टात्री देवताओं के नाम का उल्लेख किया गया हैं। यजुर्वेद में तिथि तथा पक्षों, उत्तर तथा दक्षिण अयन और विषुव दिन का भी उल्लेख मिलता है। विषुव दिन वह है जिस दिन सूर्य विषुवत् तथा क्रांतिवृत्त के संपात में रहता है।

विद्वानो के मतानुसार यजुर्वेद कालिक आर्यों को गुरु, शुक्र तथा राहु केतु का ज्ञान था। यजुर्वेद के रचनाकाल के विषय में विद्वानों में मतभेद होने के उपरांत भी यदि हम पाश्चात्य पक्षपाती, कीथ का मत भी लें तो यजुर्वेद की रचना 600 वर्ष ईसा पूर्व हो चुकी थी। इसके पश्चात् वेदांग ज्योतिष का काल आता है, जो ई. पू. 400 वर्षों से लेकर ई. पू. 1,400 वर्ष तक है।

वेदांग ज्योतिष के अनुसार पाँच वर्षों का एक युग माना गया है, जिसमें 1830 माध्य सावन दिन, 62 चंद्र मास, 1860 तिथियाँ तथा 67 नाक्षत्र मास होते हैं।

युग के पाँच वर्षों के नाम:

- संवत्सर,
- परिवत्सर,
- इदावत्सर,
- अनुवत्सर तथा
- इद्ववत्सर।

इसके अनुसार तिथि तथा चंद्र नक्षत्र की गणना होती थी। इसके अनुसार मासों के माध्य सावन दिनों की गणना भी की गई है। वेदांग ज्यातिष में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है वह युग की कल्पना, जिसमें सूर्य और चंद्रमा के प्रत्यक्ष वेधों के आधार पर मध्यम गति ज्ञात करके इष्ट तिथि आदि निकाली गई है। आगे आनेवाले सिद्धांत ज्योतिष के ग्रंथों में इसी प्रणाली को अपनाकर मध्यम ग्रह निकाले गए हैं।

वेदांग ज्योतिष और सिद्धांत ज्योतिष काल के भीतर कोई ज्योतिष काल के भीतर कोई ज्योतिष गणना का ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता। किंतु इस बीच के साहित्य में ऐसे प्रमाण मिलते हैं जिनसे यह स्पष्ट है कि ज्योतिष के ज्ञान में वृद्धि अवश्य होती रही है, उदाहरण के लिये, महाभारत में कई स्थानों पर ग्रहों की स्थिति, ग्रहयुति, ग्रहयुद्ध आदि का वर्णन है। इससे इतना स्पष्ट है कि महाभारत के समय में भारतवासी ग्रहों के वेध तथा उनकी स्थिति से परिचित थे।

सिद्धांत ज्योतिष प्रणाली से लिखा हुआ प्रथम पौरुष ग्रंथ आर्यभट प्रथम की आर्यभटीयम् (शक सं. 421) है। तत्पश्चात् वराहमिहिर (शक सं.427) द्वारा संपादित सिद्धांतपंचिका है, जिसमें पेतामह, वासिष्ठ, रोमक, पुलिश तथा सूर्यसिद्धांतों का संग्रह है। इससे यह तो पता चलता है कि वराहमिहिर से पूर्व ये सिद्धांतग्रंथ

प्रचलित थे, किंतु इनके निर्माणकाल का कोई निर्देश नहीं है। सामान्यत: भारतीय ज्योतिष ग्रंथकारों ने इन्हें अद्भुत माना हैं। आधुनिक विद्वानों ने अनुमानों से इनके कालों को निकाला है, और ये परस्पर भिन्न हैं। इतना निश्चित है कि ये वेदांग ज्योतिष तथा वराहमिहिर के समय के भीतर प्रचलित हो चुके थे। इसके बाद लिखे गए सिद्धांतग्रंथों में मुख्य हैं : ब्रह्मगुप्त (शक सं. 520) का ब्रह्मसिद्धांत, लल्ल (शक सं. 560) का शिष्यधीवृद्धिद, श्रीपति (शक सं. 961) का सिद्धांतशेखर, भास्कराचार्य (शक सं. 1036) का सिद्धांत शिरोमणि, गणेश (1420 शक सं.) का ग्रहलाघव तथा कमलाकर भट्ट (शक सं. 1530) का सिद्धांत-तत्व-विवेक।

प्रश्नव्याकरणांग में बारह महिनो की बारह पूर्णमासी और बारह अमावस्याओं के नाम और उनके फल इस प्रकार से बताये हैं।

ता कहंते पुण्णमासी आहितेति वदेज्जा तत्थ खलु
इमातो बारस पुण्णमासीओ बारस अमावसाओ
पण्णत्ताओ तं जहा संविट्ठी, पोट्ठवती, आसोई,
कत्तिया, मगसिरा, पोसी, माही, फग्गुणी, चेत्ती,
विसाही, जेट्ठामुला, असाढी॥

अर्थात: श्रावण मास की श्रविष्ठा, भाद्रपद् की पौष्ठवती, आश्विन की असोई, कार्तिक की, कृत्तिका, मार्गशीर्ष की मृगशिरा, पौष की पौषी, माघ की माघी, फाल्गुन की फाल्गुनी, चैत्र की चैत्री, वैशाख की वैशाखी, ज्येष्ठ की मूली एवं अषाढ़ की आषाढ़ी पूर्णिमा बतायी गयी हैं। कहीं-कहीं पूर्णमासियों के नामों के आधारप मासों के नाम भी लिए गए हैं।

ऋतु विचार:

ई.पू. 8000 में वसन्त ऋतु ही प्रारंभिक ऋतु मानी जाती थी, लेकिन ई.पू. 500 में प्रारंभिक ऋतु वर्षा ऋतु मानी जाने लगी थी। तैत्तिरीय संहिता में कहा गया हैं।

मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू शुक्रश्च शुचिश्च
ग्रैष्मावृतू नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतू इषश्चोर्जश्च
शारदावृतू सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू तपश्च
तपस्यश्च शैशिरावृतू।

(तित्तिर संहिता 4.4.11)

अर्थात: मधु और माधव वसंत ऋतु, शुक्र और शुचि ग्रीष्म ऋतु, नभस् और नभस्य वर्षा ऋतु, इष और उर्ज शरद् ऋतु, सहस और सहस्य हेमंत ऋतु एवं तपस और तपस्य शिशिर ऋतुवाले मास हैं।

तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुशार:

तस्य ते वसंतः शिरः। ग्रीष्मो दक्षिणः पक्षः।
वर्ष पुच्छम्। शरदुत्तरः पक्ष। हेमंतो मध्यम्।

(तैतिर ब्राह्मण 3.10.4.1)

अर्थात: वर्ष का सिर वसंत, दाहिना पंख ग्रीष्म, बायां पंख शरद, पूंछ वर्षा और हेमंत को मध्य भाग कहा गया हैं। इस का तात्पर्य हैं की तैत्तिरीय ब्राह्मण काल में वर्ष को पक्षी के रुप में माना गया हैं और ऋतुओं को उसका विभिन्न अंग बतलाया हैं।

इसी प्रकार ऋग्वेद में ऋतु शब्द का प्रयोग कई स्थान पर किया गया हैं। ऋतु शब्द का प्रयोग वहां वर्ष के रुप में हुवा हैं। ऎतरेय ब्राह्मण में पांच ही ऋतु बतायी गई हैं। उसमें हेमंत और शिशिर इन दोनों ऋतुओं को एक ही रुप में माना गया हैं।

द्वादशमासाः पच्चर्तवो हेमंतशिशिरयोः समासेन।

(ऎतरेय ब्राह्मण 1.1)

विषुवद् वृत्त का महत्व:

विषुवद् वृत्त में एक समगति से चलनेवाले मध्यम सूर्य (लंकोदयासन्न) के एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक एक मध्यम सावन दिन होता है। यह वर्तमान कालिक अंग्रेजी के सिविल डे जैसा है। एक सावन दिन में 60 घटी; 1 घटी 24 मिनिट साठ पल; 1 पल 24 सेंकेड 60 विपल तथा 2 1/2 विपल 1 सेंकेंड होते हैं। सूर्य के किसी स्थिर बिंदु (नक्षत्र) के सापेक्ष पृथ्वी की परिक्रमा के काल को सौर वर्ष कहते हैं। यह स्थिर बिंदु मेषादि है। ईसा के पाँचवे शतक के आसन्न तक यह बिंदु कांतिवृत्त तथा विषुवत् के संपात में था।

अब यह उस स्थान से लगभग 23 पश्चिम हट गया है, जिसे अयनांश कहते हैं। अयनगति विभिन्न ग्रंथों में एक सी नहीं है। यह लगभग प्रति वर्ष 1 कला

मानी गई है। वर्तमान सूक्ष्म अयनगति 50.2 विकला है। सिद्धांतग्रथों का वर्षमान 365 दि० 15 घ० 31 प० 31 वि० 24 प्रति वि० है। यह वास्तव मान से 8।34।37 पलादि अधिक है। इतने समय में सूर्य की गति 8.27 होती है। इस प्रकार हमारे वर्षमान के कारण ही अयनगति की अधिक कल्पना है।

वर्षों की गणना के लिये सौर वर्ष का प्रयोग किया जाता है। मासगणना के लिये चंद्र मासों का। सूर्य और चंद्रमा जब राश्यादि में समान होते हैं तब वह अमांतकाल तथा जब 6 राशि के अंतर पर होते हैं तब वह पूर्णिमांतकाल कहलाता है।

एक अमांत से दूसरे अमांत तक एक चंद्र मास होता है, किंतु शर्त यह है कि उस समय में सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में अवश्य आ जाय। जिस चंद्र मास में सूर्य की संक्रांति नहीं पड़ती वह अधिमास कहलाता है। ऐसे वर्ष में 12 के स्थान पर 13 मास हो जाते हैं।

इसी प्रकार यदि किसी चंद्र मास में दो संक्रांतियाँ पड़ जायँ तो एक मास का क्षय हो जाएगा। इस प्रकार मापों के चंद्र रहने पर भी यह प्रणाली सौर प्रणाली से संबंद्ध है।

चंद्र दिन की इकाई को तिथि कहते हैं। यह सूर्य और चंद्र के अंतर के 12वें भाग के बराबर होती है। हमारे धार्मिक दिन तिथियों से संबद्ध है1 चंद्रमा जिस नक्षत्र में रहता है उसे चंद्र नक्षत्र कहते हैं।

अति प्राचीन काल में वार के स्थान पर चंद्र नक्षत्रों का प्रयोग होता था। काल के बड़े मानों को व्यक्त करने के लिये युग प्रणाली अपनाई जाती है।

युग प्रणाली इस प्रकार है:

- कृतयुग (सत्ययुग) 17,28,000 वर्ष
- द्वापर 12,96,000 वर्ष
- त्रेता 8, 64,000 वर्ष
- कलि 4,32,000 वर्ष
- योग महायुग 43,20,000 वर्ष
- कल्प 1000 महायुग 4,32,00,00,000 वर्ष

सूर्य सिद्धांत में बताए आँकड़ों के अनुसार कलियुग का आरंभ 17 फरवरी, 3102 ई० पू० को हुआ था। युग से अहर्गण (दिनसमूहों) की गणना प्रणाली, जूलियन डे नंबर के दिनों के समान, भूत और भविष्य की सभी तिथियों की गणना में सहायक हो सकती है।

गणित ज्योतिष के ग्रंथों के दो वर्गीकरण हैं :

सिद्धांतग्रंथ तथा करणग्रंथ। सिद्धांतग्रंथ युगादि अथवा कल्पादि पद्धति से तथा करणग्रंथ किसी शक के आरंभ की गणनापद्धति से लिखे गए हैं। गणित ज्योतिष ग्रंथों के मुख्य प्रतिपाद्य विषय है: मध्यम ग्रहों की गणना, स्पष्ट ग्रहों की गणना, दिक्, देश तथा काल, सूर्य और चंद्रगहण, ग्रहयुति, ग्रहच्छाया, सूर्य सांनिध्य से ग्रहों का उदयास्त, चंद्रमा की श्रृंगोन्नति, पातविवेचन तथा वेधयंत्रों आदि की विवेचना की गई हैं।

पोराणिक शास्त्रों में उल्लेख हैं:

सप्त च वै शतानि विशतिश्च संवत्सरस्याहोराचयः।

अर्थात: वर्ष में सात सौ बीस दिन और रात होते हैं।

जानकारों का कथन हैं की इश्वर द्वारा स्थापित काल के पहिये का बारह मास के रुप में बारह अरों वाला चक्र निरन्तर सूर्य के चारों ओर घूम रहा है। इसमें दिन-रात के जोड़े रूप पुत्र सात सौ बीस विद्यमान रहते हैं, अर्थात् एक वर्ष में बारह महीने होते हैं और 360 दिन तथा 360 रातें मिलकर 720 अहोरात्र निरन्तर गति करते रहते हैं।

वैदिक पंचांग का इतिहास?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारतीय ज्योतिष ग्रहनक्षत्रों की गणना की अत्यंत शूक्ष्म पद्धति है जिसका भारत में उद्‍गम एवं विकास हुवा हैं। आजकल भी हिन्दु संस्कृति में इसी पद्धति से पंचांग बनाएं जाते हैं। जिनके आधार पर देश भर में धार्मिक कार्य संपन्न किए जाते तथा विभिन्न व्रत-पर्व-त्यौहार मनाए जाते हैं। भारतीय संस्कृति में वर्तमान समय में अधिकांश पंचांग सूर्यसिद्धांत, ग्रह सारणियों तथा ग्रहलाघव की विधि से प्रस्तुत किए जाते हैं। कुछ ऐसे भी पंचांग बनते हैं अन्य पद्धति के आधार पर प्रस्तुत किया जाता हैं, प्राय: इन्हें भारतीय निरयण पद्धति के अनुकूल बना दिया जाता हैं।

हिन्दु पंचांग अर्थात हिन्दु कैलेंडर के बारे में विस्तार से जानते हैं। हमारे देश में लगभग 5,000 वर्ष पूर्व से ही ग्रह, नक्षत्र, आदि के आधार पार काल अर्थात समय की सूक्ष्म गणना की जाती थी। उस काल में हमारें विद्वान आचार्यों को इस बात का ज्ञान हो चुका था की एक चंद्र-मास में ठीक 30 दिन नहीं होते, इस लिए एक चंद्र वर्ष में 360 से कुछ कम दिन होते हैं।

आज के आधुनिक युग में भारतीय पंचांग के विषय में वैज्ञानिक मत हैं, की भारत का प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य वैदिक साहित्य हैं। विद्वानो के का मत हैं की वैदिक कालीन भारतीय ऋषि-मुनि यज्ञ किया करते थे।

इस विषय में शास्त्रोक्त मत इस प्रकार हैं:-

वेदास्तावद यज्ञकर्मप्रवृता: यज्ञा प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण,
शास्त्रादस्मात काबोधो यत: स्याद वेदांगत्वम्
ज्योतिषस्योक्तमस्सात्।
शब्दशास्त्रम् मुखम् ज्योतिषम् चक्षुषी श्रोत्रमुक्तम् निरुक्तम् कल्प: करौ,
या तु शिक्षास्य वेदस्य नासिका पादपद्मद्वयम् छन्दम् आद्यैर्बुधै:॥
वेदचक्षु: किलेदम् स्मृतम् ज्यौतिषम् मुख्यता चान्गमध्येस्य तेनोच्यते,
संयुतोपीतरै: कर्णनासादिभिश्चक्षुषागेंन हीनो न किंचित कर:।
तस्मात द्विजैर्ध्ययनीयमेतत पुण्यम् रहस्यम् परमन्च तत्वम,
यो ज्योतिषाम् वेत्ति नर: स सम्यक धर्मार्थकामान लभते यशश्च॥

अर्थातः समग्र वेदों का मूल तात्पर्य यज्ञ कर्मो से है, यज्ञों का संपादन शुभ समय में होता है। इस लिए शुभ समय या अशुभ समय का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र द्वारा ही संभव होने से ज्योतिष शास्त्र का नाम वेदांग ज्योतिष कहा जाता है। वेद रूप को वेद पुरुष के मुख्य छ: अंगों में व्याकरण शास्त्र वेद का मुख ज्योतिष शास्त्र दोनो नेत्र निरुक्त दोनो कान कल्प शास्त्र दोनो हाथ शिक्षा शास्त्र वेद की नासिका और छन्द शास्त्र वेद पुरुष के दोनो पैर कहे गये हैं। लेकिन पुरुष रूप में वेदशास्त्र का ज्योतिष शास्त्र नेत्र समान स्थानीय होने से ज्योतिष शास्त्र ही वेद का मुख्य अंग हो जाता है।हाथ पैर कान आदि समस्त इन्दियों की स्थिति के उपरांत नेत्र स्थानीय ज्योतिष शास्त्र की अनभिज्ञता किसी की नही होती इसलिए सर्वशास्त्रों के अध्ययन की सत्ता होते हुवे भी ज्योतिष शास्त्र में ज्ञान की परिपक्वता से वेदोक्त धर्म और कर्म नीति भूत-भविष्यादि ज्ञान के साथ निश्चित रूप से धर्म अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अतः यज्ञों के विशिष्ट फल प्राप्त करने के लिये यज्ञों का निर्धारित समय पर होना आवश्यक था इसलिये वैदिककाल से ही भारतीयों ने वेधों द्वारा सूर्य और चंद्रमा की स्थितियों से काल का ज्ञान प्राप्त करना शुरू कर लिया था। भारतीय पंचांग सुधारसमिति के आख्या में दिए गए विवरण के अनुसार ऋग्वेद काल में भारतीय आचार्यों ने चंद्र सौर वर्ष गणना पद्धति का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उस काल से वे 12 चंद्र मास तथा चंद्र मासों को सौर वर्ष से सामंजस्य स्थापित करनेवाले अधिमास को भी जानते थे। दिन को चंद्रमा के नक्षत्र से दर्शाते थे। उन्हें चंद्रगतियों के ज्ञान उपयोगी चंद्र राशिचक्र का ज्ञान था। वर्ष के दिनों की संख्या 366 थी, जिनमें से चंद्र वर्ष के लिये 12 दिन घटा देते थे। जानकारो के अनुसार ऋग्वेद कालीन आर्यों

का समय कम से कम 1,200 वर्ष ईसा पूर्व अवश्य होना चाहिए।

अन्य विद्वानो का कथ हैं, हिन्दु ज्योतिष में एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय सावन दिन कहलाता हैं। उस समय उन्हे सावन मास और चंद्र मास का भी विशेष ज्ञान प्राप्त हो चुका था। समय के साथ उन्हें नक्षत्र और फिर तिथि का ज्ञान प्राप्त हुआ।

एसा अनुमान है की शक संवत् से लगभग 1400 वर्ष पूर्व तक तिथि और नक्षत्र, समय के इन दो अंगों का ही ज्ञान था। उसके बाद करण, योग और वार का ज्ञान प्राप्त हुआ होगा! जिसके बाद तिथि, नक्षत्र, वार, करण और योग, समय के इन पांच अंगों से 'पंचांग' अर्थात कैलेंडर का विकास हुआ होगा।

अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की आवश्यकताओं और धार्मिक तिथियों की गणना के लिए देश के विभिन्न प्रांतों में कई प्रकार के पंचांग बनाए गए जिनमें से अनेक पंचांग आज भी प्रचलित हैं। लेकिन, प्रशासनिक तथा मानव समाज से संबंधी विशेष उद्देश्य के लिए संशोधित और मानक भारतीय राष्ट्रीय कैलेंडर का प्रयोग किया जाता है।

भारतीय राष्ट्रीय कैलेंडर का निर्माण में प्रोफेसर मेघनाद साहा जैसे समर्पित वैज्ञानिक के सतत प्रयासों का फल माना जाता है। क्योकि, कैलेंडर सुधार का सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विश्वासों पर सीधा प्रभाव पड़ने का खतरा मोल लेते हुए भी उन्होंने कैलेंडर में वैज्ञानिक सुधार का बीड़ा उठाया और हमारे कैलेंडर को वैज्ञानिक और प्रामाणिक आधार प्रदान किया।

प्रोफेसर मेघनाद साहा ने भारतीय पंचांगों और कैलेंडर सुधार की आवश्यकता पर विभिन्न प्रसिद्ध विज्ञान पत्रिकाओं में लेख लिख कर इस विषय की ओर सरकार और आम लोगों का ध्यान आकर्षित किया। कैलेंडर से संबंधित उनके कुछ प्रमुख लेख इस प्रकार थेः कैलेंडर (पंचांग) सुधार की आवश्यकता, 'कालांतर में संशोधित कैलेंडर तथा ग्रेगोरीय कैलेंडर 'भारतीय कैलेंडर का सुधार', 'विश्व कैलेंडर योजना' इत्यादि लेख प्रकाशित हुए। 'प्राचीन एवं मध्ययुगीन भारत में काल निर्धारण की विभिन्न विधियां तथा शक संवत् की उत्पत्ति', 'शक संवत् की शुरुआत' इत्यादि लेखो पर व्याख्यान दिया। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप 1952 में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् ने एक कैलेंडर सुधार समिति गठित की। समिति को देश के विभिन्न प्रांतों में प्रचलित पंचांगों का अध्ययन करके सरकार को सटीक वैज्ञानिक सुझाव देने की जिम्मेदारी सौंपी गई ताकि पूरे देश में एक समान नागरिक कैलेंडर लागू किया जा सके। प्रो. मेघनाद साहा इस कैलेंडर सुधार समिति के अध्यक्ष नियुक्त किए गए। समिति के प्रमुख सदस्य में ए.सी.बनर्जी, के.के.दफ्तरी, जे.एस.करंडीकर, गोरख प्रसाद, आर.वी.वैद्य तथा एन.सी. लाहिड़ी सामिल थे।

पंचांगों में सबसे प्रमुख त्रुटि थी वर्ष में दिन की अधिकता। पंचांग प्राचीन 'सूर्य सिद्धांत' पर आधारित होने के कारण वर्ष के कुल दिन 365.258756 दिन होते है। वर्ष की 0.258756 यह अधिकता वैज्ञानिक गणना पर आधारित सौर वर्ष से .01656 दिन अधिक हैं। प्राचीन सिद्धांत अपनाने के कारण ईस्वी सन् 500 से वर्ष 23.2 दिन आगे बढ़ चुका है। भारतीय सौर वर्ष 'वसंत विषुव' औसतन 21 मार्च के अगले दिन मतलब 22 मार्च से शुरु होने के बजाय 13 या 14 अप्रैल से शुरु होता है। इसी तौर पर यूरोप में जूलियस सीजर द्वारा शुरू किए गए 'जुलियन कैलेंडर ' में भी वर्ष में कुल 365.25 दिन निर्धारित किए गए थे, जिसके कारण 1582 ईस्वी आते-आते 10 दिन की त्रुटि हो चुकी थी। तब पोप ग्रेगरी तेरहवें ने कैलेंडर सुधार के लिए आदेश दे दिया कि उस वर्ष 5 अक्टूबर को 15 अक्टूबर घोषित कर दिया जाए। लीप वर्ष भी स्वीकार कर लिया गया। लेकिन, भारत में सदियों से पंचांग यानी कैलेंडर में इस प्रकार का कोई संशोधन नहीं हुआ था।

कैलेंडर सुधार समिति के सदस्यों ने विश्व कैलेंडर योजना का भी सुझाव दिया और 1954 में जेनेवा में आयोजित यूनेस्को के 18वें अधिवेशन में 'विश्व कैलेंडर ' सुधार के लिए प्रस्ताव भेजा। कैलेंडर सुधार समिति ने 1955 में अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की। समिति ने प्रशासनिक तथा नागरिक कैलेंडर के लिए

महत्वपूर्ण सुझाव दिए। इन सुझावों के अनुसार राष्ट्रीय कैलेंडर में शक संवत् का प्रयोग किया जाना चाहिए। जिस कारण इसकी गणनाएं शक संवत् से की जाती हैं। शक संवत् की प्रथम तिथि ईस्वी सन् 79 के वसंत विषुव से प्रारंभ होती हैं। हमारे राष्ट्रीय कैलेंडर में शक संवत् 1879 (अठारह सौ उनासी) के चैत्र मास की प्रथम तिथि को आधार माना गया हैं, जो ग्रेगोरीय कैलेंडर की गणना के अनुसार 22 मार्च ईस्वी सन् 1957 है। यानी, हमारा संशोधित राष्ट्रीय कैलेंडर 22 मार्च 1957 से शुरू होता है।

सुधार समिति ने सुझाव दिया कि वर्ष में 365 दिन तथा लीप वर्ष में 366 दिन होंगे। लीप वर्ष की परिभाषा देते हुए सुझाव दिया गया कि शक संवत् में 78 जोड़ने पर जो संख्या मिले वह अगर 4 से विभाजित हो जाए तो वह लीप वर्ष होगा। लेकिन, अगर वर्ष 100 का गुणज तो है लेकिन 400 का गुणज नहीं है तो वह लीप वर्ष नहीं माना जाएगा। राष्ट्रीय परंपरागत भारतीय मास 12 हैं : चैत्र, वैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्र, आश्विन, कार्तिक, अग्रहायण, पौष, माघ और फाल्गुन।

समिति ने यह भी सिफारिशों की कि वर्ष का प्रारंभ वसंत विषुव के अगले दिन से होना चाहिए। कैलेंडर में चैत्र मास वर्ष का प्रथम मास होगा। चैत्र से भाद्र तक प्रत्येक मास में 31 दिन और आश्विन से फाल्गुन तक प्रत्येक मास में 30 दिन होंगे। लीप वर्ष में, चैत्र मास में 31 दिन होंगे अन्यथा सामान्य वर्षों में 30 दिन ही रहेंगे। लीप वर्ष में चैत्र मास की प्रथम तिथि 22 मार्च के बजाय 21 मार्च होगी। समिति ने कहा कि जो उत्सव और अन्य महत्वपूर्ण तिथियां 1400 वर्ष पहले जिन ऋतुओं में मनाई जाती थीं, वे 23 दिन पीछे हट चुकी हैं। फिर भी धार्मिक उत्सवों की तिथियां परंपरागत पंचांगों से ही तय की जा सकती हैं। समिति ने धार्मिक पंचांगों के लिए भी दिशा निर्देश दिए। ये पंचांग सूर्य और चंद्रमा की गतियों की गणनाओं के आधार पर तैयार किए जाते हैं। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग प्रति वर्ष भारतीय खगोल पंचांग प्रकाशित करता है। छुट्टियों की तिथियों की गणना इसी के आधार पर की जाती है। हमारे राष्ट्रीय कैलेंडर के लीप वर्ष विश्व भर में प्रचलित ग्रेगोरी कैलेंडर के समान हैं। ग्रेगोरीय कैलेंडर में 21 मार्च की तिथि वसंत विषुव यानी वर्नल इक्विनॉक्स मानी गई है।

कैलेंडर व पंचांग में क्या अंतर हैं?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

आधुनिक (ग्रेगोरियन) कैलेंडर में वार, दिनांक मास, वर्ष का समावेश होता हैं। आधुनिक कैलेंडर में हर चार साल के बाद एक लीप वर्ष होता है, लीप वर्ष 100 वर्ष पश्चात नहीं होता एवं 400 वर्ष के बाद पुनः लीप वर्ष होता हैं। इस प्रकार कैलेंडर में एक वर्ष में कुल 365.2425 दिन होते है जो कि सायन कैलेंडर के एक वर्ष के कुल 365.2422 दिन के अधिक करीब है और जिस कारण करीबन 3000 वर्षों बाद दोनों कैलेंडरों में 1 दिन का अंतर आता है।

आधुनिक कैलेंडर की तुलना में भारतीय पंचांग में तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण आदि पांच प्रमुख अंगों का समावेश होता हैं। इसके उपरांत एक एक उन्नत कैलेंडर में सूर्योदय-सूर्यास्त समय ज्ञान, सूर्य, चंद्र आदि ग्रहों का राशि प्रवेश, शुभ-अशुभ मुहूर्त, आदि विशेष जानकारीयां समाहित होती हैं।

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार निरयण वर्ष मे कुल 365.2563 दिन होते है जो कि सूर्य के एक राशि में प्रवेश से अगले वर्ष उसी राशि में प्रवेश का समय होता हैं। निरयण वर्ष सायन वर्ष से 0.0142 दिन बड़ा है। इस लिए 100 वर्षों में 1.42 दिनों का अंतर हो जाता है। इस कारण पंचांग प्रति 100 वर्षों से कैलेंडर से लगभग डेढ़ दिन आगे निकल जाता है। इस कारण मकर संक्रांति आदि दिनांक, तिथि, सूर्यराशि के अनुरुप मनाए जाने वाले त्यौहारों में अंतर आ जाता है और हिंदू पर्व, जो तिथि के अनुसार मनाए जाते हैं, धीरे-धीरे आगे निकलते जाते हैं।

सायन व नियरण गणना क्या हैं? और दोनों में क्या अंतर हैं?

पृथ्वी अपनी धुरी पर सूर्य की परिक्रमा एकलिप्टिक (Ecliptic) पर लगाती है। लेकिन यह लगभग 23.4 डिग्री झुकी होती है। पृथ्वी के इस झुकाव के कारण ही पृथ्वी पर गर्मी व सर्दी पड़ती हैं। झुकाव से पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सीधे सामने रहता है वहां गर्मी रहती है। क्योंकि ऋतु में अंतर अयन व सूर्योदय इत्यादि पृथ्वी के झुकाव से होने वाले बदलाव के कारण होते हैं। पृथ्वी की परिक्रमा के कारण ऋतु में अंतर नहीं पडता ऋतु में अंतर पृथ्वी के झुकाव के कारण पडता हैं। इस लिए सायन कैलेंडर बनाया जाता हैं।

पृथ्वी का भूमध्य भाग एकलिप्टिक (Ecliptic) के साथ एक रेखा पर काटता है, जिसका एक बिंदु वसंत विषुव व दूसरा शरद विषुव कहलाता है। यह रेखा पृथ्वी की धुरी के दोलन के कारण वह 50.3 प्रतिवर्ष की गति से पश्चिम की ओर खिसकती है।

पृथ्वी के पूर्ण 360 डिग्री चलने को निरयण और उसके पुनः उसी झुकाव में आने को सायन वर्ष कहते हैं। इस कारण शरद विषुव पर पृथ्वी को पुनः आने में 360 डिग्री से लगभग 50" कम घुमना पड़ता है। यह अंतर ही अयनांश कहलाता है।

एसा माना जाता हैं की सायन कैलेंडर व निरयण पंचांग 23 मार्च 285 को एक समान थे। तब से लेकर आज तक अंदाजन दोनो में 24 दिनों का अंतर हो गया है।

इस लिए चैत्र मास, जो पहले फरवरी व मार्च में आता था, अब चैत्र मास मार्च व अप्रैल में पड़ता हैं। इस लिए क्रमशः सभी मास में अंतर हो गया हैं। जिससे सभी ऋतुओं एवं महिनों में अंतर होने लगे हैं।

साधारणतः यह प्रश्न उठता हैं की क्या

निरयण पंचांग और सायन कैलेंडर को एक समान कर देना चाहिए?

इस पर विद्वानो का एकमत उत्तर नहीं होगा, क्योकि दोनों निरयण पंचांग और सायन कैलेंडर अपने स्थान पर ठीक हैं।

कैलेंडर का निर्माण आम लोगो की सुविधा एवं आवश्यक्ता के अनुरुप किया गया है, इस लिए उसका सायन होना ही ठीक है। इस कारण ऋतुएं व सूर्योदय आदि स्थितीयां तारीख के अनुसार एक समान बने रहते हैं।

पंचांग धार्मिक कार्यों से जुडे लोग, पंडित व ज्योतिषों आदि के लिए हैं, क्योकि पंचांग से तिथि, ग्रह, नक्षत्र योग आदि से ग्रहों की स्पष्ट स्थिति जानी जाती है व शुद्ध गणना की जा सकती है। ग्रहों की स्थिति राशि अनुसार ही जानी जाती है, इस लिए गणना का निरयण होना सहज है।

इस लिए इसे सायन नहीं कर सकते। इसी कारण सभी पंचांग निरयण ही होते हैं। ग्रहों की गणना के लिए सूर्य को आधार लेकर फिर अयनांश घटाकर ग्रह स्पष्ट करना अति सुलभ होता है। अतः गणना के लिए प्रथम सायन गणना कर अयनांश घटाकर निरयण गणना कर ली जाती है। ग्रह स्पष्ट की सायन सारणियां उपल्बध होती हैं। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि ग्रह सायन गणनानुसार राशि में भ्रमण करते हैं। सभी ग्रह आकाश मंडल में निरयण गति के अनुसार ही चलते हैं और ज्योतिष, जो कि राशियों, नक्षत्रों पर आधारित है, पूर्णतया निरयण ही है। इस लिए जो गणनाएं की जा रही हैं, वे पूर्ण सत्य हैं, उन्हें गलत मानकर फेरबदल करने से अनेको भ्रामक स्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। इस लिए कैलेंडर व पंचांग में मतभेद एक स्वाभाविक स्थिती है।

पंचांग निर्माण में आधुनिक प्रणाली आवश्यक?

पंचांगों के समान होने में मुख्य आवश्यक्ता होती हैं, ग्रह स्पष्ट सिद्धांत को एक करना। देश में कुछ स्नानीय पंचांग पौराणिक सूर्य सिद्धांत या अन्य सिद्धांतों के आधार पर ही गणना करते हैं, लेकिन आज के आधुनिक युग में आधुनिक गणना को गलत मानना केवल परम्परानिष्ठता है। जिस कारण ज्योतिष के फलित में गणनाओं का गलत आना प्रमुख कारण होता हैं। इसमें हमें केवल फलित के सिद्धांतों में बदलाव लाने चाहिए गणित सिद्धांतो में नहीं। विशेष कर फलित गणित का कोई ठोस आधार नहीं हो सकता, लेकिन गणित के आधार पर ही फलित के प्रमुख सूत्र सुनिश्चित किए जाने चाहिए।

विद्वानो के मत से सभी पंचांगों को अंतर्राष्ट्रीय मानक प्राप्त ग्रह स्पष्ट करने वाले कम्प्यूटर प्रोग्राम से गणना करनी चाहिए, जिससे देश के विभिन्न धार्मिक एवं स्थानीय पंचांगों में अंतर समाप्त हो और सार्वजनिक तौर पर मानव जाति को इस पंचांग से लाभ प्राप्त हो और पौराणिक भ्रमित करने वाली धारणाए समाप्त हो। विभिन्न अयनांश में मतभेद से ही ग्रह स्पष्ट एक समान नही होते। लेकिन आज जब सिर्फ सायन और निरयण के भेद में उलझे रहेंगे, तो अयनांश में मतभेद रखने से क्या फायदा। एसा मानाजाता हैं की कुछ अयनांश केवल नाम के कारण चलन में हैं। उनमें अंतर इतने कम हैं कि ज्योतिष के द्वारा इसका सत्यापन करना अत्यंत दुस्साध्य हैं। इस लिए मतभेद को त्यागकर गणना के लिए चित्रापक्षीय अर्थात लहरी अयनांश ही अपनाना चाहिए। फलित कथन के लिए ज्योतिषी के अपने-अपने निर्णय हो सकते हैं व उसके लिए कुछ भी जोड़ा या घटाया जा सकता है।

पंचांग की भिन्नता:

पंचांग की भिन्नता का प्रमुख कारण हैं तिथि निर्णय में की अलग-अलग विधि। जिसके कारण पर्वों को लेकर देश के विभिन्न स्थानो में के लोगों की अलग-अलग मान्यता हैं। साधारणतः तिथि निर्णय में सूर्योदय की भूमिका प्रमुख होती हैं। अलग-अलग स्थान के अनुसार सूर्योदय का समय बदल जाता है। यदि सूर्योदय समय के आसपास तिथि बदल रही हो, तो स्थान के अनुसार तिथि में परिवर्तन हो जाता है और पंचांग में भी अंतर होता हैं। जिससे तिथि पर निर्धारित पर्वों में भी अंतर आ जाता है। इस लिए पंचांग की गणना स्थानीय सूर्योदय समय के अनुरुप तिथि का निर्णय कर पर्व की गणना होती हैं। कभी-कभी एक पर्व दो तारीखों को पड़ता है। ऐसा अक्सर जन्माष्टमी व दीपावली के साथ होता है। कारण है दोनों पर्वों में मध्यरात्रि कालीन तिथि, नक्षत्र आदि का लिया जाना। प्रायः प्रातःकाल में तिथि दूसरी होती है। अतः गणना के लिए केवल तिथि के अनुसार पर्व की गणना कर देने के कारण यह अंतर आता है। यदि पर्व की गणना विधिवत्की जाए, तो इस प्रकार के अंतर नहीं आएंगे। हिंदू धर्म ग्रंथों में पर्व गणना के लिए विस्तृत सूत्र उपलब्ध हैं, जिससे गणना में कोई संदेह मुमकिन नहीं है।

ज्योतिष के अनुशार शुभ-अशुभ मुहूर्त का प्रभाव?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज की अत्याधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार ब्रह्माण्ड में समय अर्थात काल व अनंत आकाश के अतिरिक्त समस्त वस्तुएं मर्यादा युक्त हैं। इस लिए समय का न ही कोई प्रारंभ है न ही कोई अंत है। अन्य शब्दों में समझे तो हम एसे कोई भी विशेष क्षण को चिन्हित नहीं कह सकते कि कब समय अस्तित्व में आया या समय इस क्षण से आरंभ होता है। इसी तरह हम यह भी नहीं कह सकते है कि, इस क्षण के बाद समय का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा?, या समय यहाँ रुक जाएगा।

क्योकि अनंत आकाश की समय की तरह कोई मर्यादा नहीं है, इस लिए तो इसका कहीं भी प्रारंभ या अंत नहीं होता हैं।

आधुनिक मानव ने इन दोनों तत्वों को हमेशा समझने का व अपने अनुसार इनमें विचरण करने का प्रयास किया है, लेकिन उसे भी तक कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई है।

ये दोनों तत्व विभिन्न रुपोंमें अपना महातम्य मनुष्य पर जमाते आए है। यह दोनों तत्व मानव जीवन को अत्यंत ही महत्वपूर्ण तरीके से मानुष्य को प्रभावित करते है।

प्राचीन ऋषी-मुनियों को इन दोनों तत्वों का भली भांति बोध था। इस लिए उन्होंने अपने आत्मीय एवं मनोबलस से सामर्थ्य, चित्त की एकाग्रता व केन्द्रित ध्यान से, पूर्ण चैतन्य व अर्द्ध चैतन्य शक्ति व बल से एवं उच्चकोटि के ज्ञान व अपनी दिव्य ज्ञानचक्षु से इन तत्वों को समझ लिया था जो कि आज कि अत्याधुनिक तकनीक से कोसों दूर हैं।

उन्होंने देखा व जाना कैसे समय व अनंत ब्रह्मांड कि शक्तियां हमें प्रभावित करती है, कैसे नक्षत्रा व ग्रहों का मेल हमारे जीवन को महत्त्वपूर्ण दिशा व परिवर्तन देता है।

उन्होंने सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह समझी कि मनुष्य आकाशीय पिंडों के सहयोग से कितने आश्चर्यजनक रुप से अपने महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्ति के लिए एवं जीवन क्रम को अर्थात अपने भविष्य को उज्जवल कर सकता हैं। एक शुभ मुहूर्त में प्रारंभ किया गया कोभी कार्य मनुश्य को शीघ्र ही जीवन में सभी प्रकार सुख को प्राप्त कर अनेको उपलब्धियां दिलाने में समर्थ होता हैं।

मुहूर्त हमारे विद्वानो द्वारा खोज की गई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण परिकल्पना है। मुहूर्त का अर्थ है किसी भी कार्य को करने के लिए सबसे सर्वाधिक उत्तम समय या शुभ समय व तिथि का चयन करना।

कार्य पूर्णतः फलदायक हो इसके लिए समस्त ग्रहों व अन्य ज्योतिष तत्वों का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है कि वे दुष्प्रभावों को विफल कर देते है। वे मनुष्य की जन्म कुण्डली की समस्त बाधाओं को दूर करने में व दुर्योगों को हटाने में सहायक होते हैं।

मुहूर्त मनुष्य के लिए ग्रह, नक्षत्र एवं योग का ऎसा अनूठा संगम है कि वह कार्य करने वाले मनुष्य को पूर्णतः सफलता की ओर उन्मुख कर देता है।

इस लिए विद्वानो का मत हैं की मनुष्य जब भी अपने जीवन में ऎसा महत्वपूर्ण कार्य करने जा रहा हों, जिसमें उसका अधिक समय व शक्ति प्रयोग में हुवा हो अथवा इस कार्य का मनुष्य के जीवन पर काफी समय तक प्रभाव रहने वाला हो, तब उसे यह कार्य शुभ मुहूर्त में ही करना चाहिए। जिससे यह कार्य अति शीघ्र फलदायक होगा व वहँ अधिक सुखमयी व संतुष्ट जीवन व्यतीत कर सके।

ज्योतिष विद्या में कार्य का प्रारंभ समय, कुण्डली व उसकी गणना करके किया जाता है। इस लिए किसी भी शुभकार्य करने के लिए उसके प्रारंभ करने का समय अर्थात मुहूर्त अति महत्वपूर्ण होता है। मनुष्य का भविष्य एवं जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ इस बात पर निर्भर करती हैं कि उसका जन्म किस समय हुआ था। लेकिन मनुष्य कि विडम्बना तो यह

है कि मनुष्य का स्वयं के जन्म समय पर कोई नियंत्रण नहीं है। लेकिन जीवन के अन्य क्रिया-कलापों पर उसका पूर्ण नियंत्रण है। इस लिए वह कार्य करने का समय स्वयं सुनिश्चित कर सकता है। यही मुहूर्त की परिभाषा है। यदि कार्य प्रारंभ का समय शुभ हैं तो कार्यफल निश्चित रुप से फलदायक एवं इच्छित होगा। इस लिए तो कहाँ जाता हैं की शुभ प्रारंभ अर्थात आधा कार्य स्वतः पूर्ण होना।

शुभ योग

मुहूर्त अच्छे व बुरे दोनों योगों का मिश्रण है। कोई भी मुहूर्त अपने आप में पूर्ण रुप से शुभ नहीं होता है, जिस पर कोई भी बुरा प्रभाव न हो। लेकिन ग्रहों के विशेष योगादि के शुभत्व का सूक्ष्म अध्ययन करके कुछ योग ऐसे भी होते हैं जो कि किसी दोष विशेषों को हटाने वाले योगों होते हैं, जो हजारों बुरे प्रभाव हटा देते है। इस तरह से, पंचांग तत्वों के शुभत्व के अतिरिक्त भी वे समस्त घटक कि अवश्य जाँच करनी चाहिए, जो मुहूर्त पर शुभ प्रभाव डालते हैं।

अशुभ योग

जैसा की हमने बताया की अशुभ तत्त्व भी हमेशा ही मौजूद होते हैं। आवश्यकता है किसी एसी युक्ति की जो अशुभ घटकों को अधिक से अधिक कम कर सकेए अधिक अशुभ घटकों को हटा सके तथा उपस्थित अशुभ घटकों को प्रभावहीन कर सके। अतः अशुभ व दोषपूर्ण संयोजन को देख ही किसी मुहूर्त का चयन करना चाहिए, इस प्रकार सभी परिस्थितियों का पूर्ण अध्ययन करना आवश्यक होता है।

***



भद्रा विचार

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

एसी पौराणिक मान्यता हैं की पुर्व काल में देव दानव युद्ध में शिव शंकर के देह से यह भद्रा उत्पन्न हुई हैं। अन्य मान्यता के अनुशार भद्रा भगवान सूर्य देव की पुत्री और शनिदेव की बहन है। शनि की तरह ही इसका स्वभाव भी क्रूर माना गया है। इस उग्र स्वभाव को नियंत्रित करने के लिए ही भगवान ब्रह्मा ने उसे कालगणना अर्थात पंचाग के एक प्रमुख अंग करण में स्थापीत किया।

भद्रा की उत्पत्ति के विषय में एसा माना जाता हैं की दैत्यों को मारने के लिये भद्रा गर्दभ (गधा) के मुख और लंबे पुछँ सहित और तीन पैर युक्त उत्पन्न हुई है। सिंह जैसी मुर्दे पर चढी हुई सात हाथ और शुष्क पेटवाली महाभयंकर, विकराल मुखी, कार्य का नाश करने वाली, अग्नि, ज्वाला सहित देवों द्वारा भेजी गई भद्रा पृथ्वी पर उतरी है। अतः शुभ कार्यों में भद्रा त्यागना ही सर्वश्रेष्ठ है।

भद्रा पंचांग के पांच अंगों में से एक अंग-'करण' पर आधारित है यह एक अशुभ योग है। भद्रा (विष्टि करण) में अग्नि लगाना, किसी को दण्ड देना इत्यादि समस्त दुष्ट कर्म तो किये जा सकते हैं किंतु किसी भी मांगलिक कार्य के लिए भद्रा सर्वथा त्याज्य है।

पौराणिक कथा के अनुसार भद्रा भगवान सूर्य नारायण की कन्या है, भद्रा सूर्य की पत्नी छाया से उत्पन्न है। भद्राका स्वरुप काले वर्ण, लंबे केश तथा बड़े-बड़े दांतों वाली तथा भयंकर रूप वाली कन्या है।

जन्म लेते ही भद्रा यज्ञों में विघ्न-बाधा पहुंचाने लगी और उत्सवों तथा मंगल-यात्रा आदि में उपद्रव करने लगी तथा संपूर्ण जगत को पीड़ा पहुंचाने लगी। उसके दुष्ट स्वभाव को देख सूर्य को उसके विवाह की चिंता होने लगी और वे सोचने लगे कि इस स्वेच्छा चारिणी, दुष्टा, कुरुपा कन्या का विवाह किसके साथ किया जाय। सूर्य ने जिस-जिस देवता, असुर, किन्नर आदि से भद्रा के विवाह का प्रस्ताव रखा, सभी ने उनके प्रस्ताव ठुकरा दिया। यहां तक कि भद्रा ने सूर्य देव द्वारा बनवाये गये अपने विवाह मण्डप, तोरण आदि नष्ट कर दिया तथा सभी लोगों को और भी अधिक कष्ट देने लगी।

उसी समय देव-दानव-मानव के दुःख को देखकर ब्रह्मा जी सूर्य के पास आये। सूर्य से अपनी कन्या को सन्मार्ग पर लाने के लिए ब्रह्मा जी से उचित परामर्श देने को कहा। तब ब्रह्मा जी ने विष्टि को बुलाकर कहा- 'भद्रे, बव, बालव, कौलव आदि करणों के अंत में तुम निवास करो और जो व्यक्ति यात्रा, गृह प्रवेश तथा अन्य मांगलिक कार्य तुम्हारे समय के दौरान करे, तो तुम उन्हीं में विघ्न करो, जो तुम्हारा आदर न करे, उनका कार्य तुम बिगाड़ देना। इस प्रकार विष्टि को उपदेश देकर ब्रह्मा जी अपने लोग चले गये।

ब्रह्माजी के बात सुनकर विष्टि अपने समय में देव-दानव-मानव समस्त प्राणियों को कष्ट देती हुई घूमने लगी। इस प्रकार भद्रा की उत्पत्ति हुई।

भद्रा का दुसरा नाम विष्टी करण हैं। कृष्णपक्ष की तृतीया, दशमी और शूक्ल पक्ष की चतुर्थी एकादशी के उत्तरार्ध में एवं कृष्णपक्ष की सप्तमी, चतुर्दशी, शुक्लपक्ष की अष्टमी, पुर्णिमा के पुर्वार्ध में भद्रा रहती है। जिस भद्रा के समय चँद्रमा मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक राशि में स्थित हो तो भद्रा निवास स्वर्ग में रहता है। चंद्रमा कन्या,तुला, धनु, मकर राशि में हो तो भद्रा पाताल में वास करती हैं और कर्क, सिंह, कुंभ, मीन राशी का चंद्रमा हो तो भद्रा का भुलोक पर निवास रहता है। शास्त्रों के अनुसार भुलोक की भद्रा ही अशुभ मानी जाती है। तिथी के पुर्वार्ध में (कृष्णपक्ष की सप्तमी एवं चतुर्दशी और शुक्लपक्ष की अष्टमी पूर्णिमा तिथी) दिन की भद्रा कहलाती है। तिथी के उत्तरार्ध की (कृष्णपक्ष की तृतीया एवं दशमी और शुक्लपक्ष की चतुर्थी एवं एकादशी) की भद्रा रात्री की भद्रा कहलाती है। यदि दिन की भद्रा रात्री के समय और रात्री की भद्रा

दिन के समय आ जाये तो उसे विद्वानो ने शुभ माना है। अति आवश्यक कार्य आ जाए तो भद्रा की प्रारम्भ की 5 घटी जो भद्रा का मुख होती है, अवश्य ही त्यागनी चाहिए। श्रेष्ठ तो यही है की भद्रा को त्याग करके ही मांगलीक कार्य सम्पन्न करने चाहिए।

भद्रा फल

भद्रा का मुख और पूंछ:

भद्रा पांच घड़ी मुख में, दो घड़ी कण्ठ में, ग्यारह घड़ी हृदय में, चार घड़ी पुच्छ में स्थित रहती है।

शास्त्रोक्त मत से

- जब भद्रा मुख में रहती है तो कार्य का नाश होता हैं।
- जब भद्रा कण्ठ में रहती है तो धन का नाश होता हैं।
- जब भद्रा हृदय में रहती है तो प्राण का नाश होता हैं।
- जब भद्रा नाभि में रहती है तो कलह होता हैं।
- जब भद्रा कटि में रहती है तो अर्थनाश होता हैं।
- लेकिन जब भद्रा पुच्छ में होती हैं, तो विजय की प्राप्त एवं कार्य सिद्ध होते है।

ज्योतिष के अनुशार विष्टि करण को चार भागों में विभाजित करके भद्रा मुख और पूंछ सरलता से ज्ञात किया जा सकता हैं।

भद्राकी प्रकृति अति दुष्ट है इसलिए मांगलिक कार्यों में भद्राकाल का अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

भद्राकाल में विवाह, मुंडन, गृहप्रवेश, यज्ञोपवित, रक्षाबंधन या कोई भी नया काम शुरू करना वर्जित माना गया है। लेकिन भद्राकाल में तंत्र कार्य, ऑपरेशन करना, मुकदमा करना, राजनैतिक चुनाव, किसी वस्तु का कटना, यज्ञ करना, वाहन खरीदना आदि कर्म शुभ माने गए हैं।

विद्वानो के मत से:

- सोमवार और शुक्रवार की भद्रा को कल्याणी,
- शनिवार की भद्रा को वृश्चिकी,
- गुरुवार की भद्रा को पुण्यैवती,
- रविवार, बुधवार और मंगलवार की भद्रा को भद्रिका माना हैं।
- विशेष कर शनिवार की भद्रा अशुभ मानी जाती हैं।

भद्रा व्रत

भद्रा के अशुभ प्रभाव से रक्षा के लिए व्रत आदि के विधान बताए गए हैं, किंतु आसान उपायों हैं, सुबह भद्रा के द्वादश नाम अर्थात 12 नाम मंत्र का स्मरण कार्यसिद्धि के साथ विघ्न, रोग, भय को दूर कर ग्रहदोषों को भी शांत करने वाला माना गया है।

भद्रा योग में कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग किए जाने वाला मंत्र:

धन्या दधिमुखी भद्रा महामारी खराननना।
कालरात्रिर्महारुद्रा विष्टिश्च कुलपुत्रिका॥
भैरवी च महाकाली असुराणां क्षयंकरी।
द्वादशैव तु नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्॥
न च व्याधिर्भवेत् तस्य रोगी रोगात्प्रमुच्यते।
ग्रहयः सर्वेनुकूलाः स्युर्न च विघ्नादि जायते॥

शास्त्रोक्त मत हैं, की जो व्यक्ति प्रातः भद्रा के इन बारह नामों का स्मरण करता है उसे किसी भी व्याधि का भय नहीं होता और उसके सभी ग्रह अनुकूल हो जाते हैं। उसके कार्यों में कोई विघ्न नहीं होता। युद्ध में वह विजय प्राप्त करता है, जो विधि पूर्वक विष्टि का पूजन करता है, निःसंदेह उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

भद्रा के व्रत की शास्त्रोक्त विधि :

जिस दिन भद्रा हो, उस दिन व्रत-उपवास करना चाहिए। यदि रात्रि के समय भद्रा हो तो दो दिन तक उपवास करना चाहिए। स्त्री अथवा पुरुष दोनो के लिए व्रत अधिक उपयुक्त होता हैं।

व्रत के दिन व्रती को सर्वोषधि युक्त जल से स्नान करना चाहिए या नदी पर जाकर विधि पूर्वक स्नान करना चाहिए। देवता तथा पितरों का तर्पण एवं पूजन कर कुशा की भद्रा की मूर्ति बनायें और गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से उसकी पूजन करना

चाहिए। भद्रा के बारह नामों से 108 बार हवन करके ब्राह्मण को भोजन करवाना चाहिए स्वयं भी तिल मिश्रित भोजन ग्रहण करना चाहिए।

पूजन की समाप्ती पर इस मन्त्र से प्रार्थना करनी चाहिए।

छाया सूर्यसुते देवि विष्टिरिष्टार्थ दायिनी।
पूजितासि यथाशक्त्या भद्रे भद्रप्रदा भव॥

इस प्रकार सत्रह भद्राव्रत करने के पश्चयात अंत में उद्यापन करना चाहिए। लोहे की पीठ पर भद्रा की मूर्ति स्थापित करनी चाहिए, काला वस्त्र अर्पित करके गन्ध, पुष्प आदि से विधिवत पूजन कर प्रार्थना करनी चाहिए। लोहा, बैल, तिल, बछड़ा सहित काली गाय, काला कंबल और यथाशक्ति दक्षिणा के साथ वह मूर्ति ब्राह्मण को दान करनी चाहिए या उसका विसर्जन कर दें। इस प्रकार जो भी व्यक्ति भद्रा व्रत एवं तदंतर विधि पूर्वक व्रत का उद्यापन करता है उसके किसी भी कार्य में विध्न नहीं पड़ता तथा उसे प्रेत, ग्रह, भूत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी, यक्ष, गंधर्व, राक्षस आदि आसुरी शक्ति से किसी प्रकार का कष्ट नहीं हो सकता।

दिशाशूल विचार

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दिशाशूल के विषय में शास्त्रोक्त मत:

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वा, दक्षिणां च दिशां गुरौ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमाम्च, बुधे भौमे तथोत्तरम्॥

अर्थात: शनिवार और चन्द्रवार अर्थात सोमवार को पूर्व दिशा को दिशाशूल होती हैं। बृहस्पतिवार (गुरुवार) को दक्षिण दिशा में, इतवार (रविवार) और शुक्रवार को पश्चिम में और मंगल तथा बुधवार को उत्तर दिशा में शूल होती हैं। इस लिये जिस वार को जिस दिशा में दिशाशूल हो उस दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिये।

अन्य मत से:

सोम शनिचर पूरब ना चालू। मंगल बुध उत्तरदिसिकाल॥
रवि शुक्र जो पश्चिम जाय। हानि होय पथ सुख नहिं पाय॥
गुरौ दक्खिन करे पयाना, फिर नहीं समझो ताको आना॥

अर्थात: सोमवार एवं शनिवार को पूरब दिशा में तथा मंगल एवं बुधवार को उत्तर दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिये। रविवार एवं शुक्रवार को पश्चिम दिशा में यात्रा करना सर्वदा हानिकारक होता है। गुरूवार के दिन तो दक्षिण दिशा में यात्रा करना अशुभ है। ये दिशाशुल कहलाते है। शास्त्रोक्त मान्यता के अनुशार दिशाशूल वाली दिशा में यात्रा करने से कार्य सिद्धी नहीं होता|

दिशाशूल परिहार के लिए

- रविवार को घी पीकर।
- सोमवार को दूध पीकर।
- मंगलवार को गुड खाकर।
- बुधवार को तिल खाकर।
- गुरुवार को दही खाकर।
- शुक्रवार को जौ खाकर।
- शनिवार को उडद खाकर यात्रा करने से दिशाशूल का दोष परिहार माना जाता हैं।

दिशाशूल परिहार के अन्य उपाय

- दिशाशूल परिहार के लिए
- रविवार को पान का दान।
- सोमवार को चंदन का दान।
- मंगलवार को छाछ का दान।
- बुधवार को पुष्प का दान।
- गुरवार को दही का दान।
- शुक्रवार को धृत (घी) का दान।
- शनिवार को काले तिल का दान करने से दिशाशूल परिहार हो जाता हैं।

***

दिशाशूल महत्वपूर्ण या कर्तव्य महत्वपूर्ण है?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक बार एक राजा के ऊपर उसके प्रतिद्वंदी राजा ने हमला कर दिया। राजा ने राज ज्योतिषी को बुलाया और उनसे पूछा कि इस वक्त हमें क्या करना चाहिए। ज्योतिषी ने उत्तर दिया महाराज जिस दिशा से हमला हुआ हे वह दिशा पूर्व हैं और आज उस दिशा में दिशाशूल हे, आज हमें उस दिशा में नहीं जाना चाहिये। ज्योतिषी की बात को वज़ीर बीच में काट कर बराबर कह रहा हे कि महाराज फौरन हमला करो। राजा ने कहा नहीं हम को ज्योतिषी की बात मननी है। ज्योतिशी ने कहा हम को इस समय उलटी दिशा में अर्थात पश्चिम दिशा में जाना चाहिए। और वो पश्चिम की और चल दिए।

रास्ते में उनका वज़ीर बार-बार कह रहा था महारज हमला करो। लेकिन वज़ीर की बात को राजा ने नहीं सुना।

रासते में उन्हें एक किसान मिला जो पूर्व दिशा की और जा रह था। ज्योतिषी ने उसे रोका और कहाँ आज इधर दिशाशूल है इधर मत जाओ । किसान बोला पंडितजी इस दिशा में तो मैंने जब होश सम्भाला हैं अपने खेत पर जाता रहा हूँ और मेरे पिताजी से लेकर दादा परदादा भी जाते रहे हैं। ज्योतिषी ने कहा अच्छा अपना हाथ दिखा। किसान ने ज्योतिषी को अपना हाथ उलटा दिखाया ज्योतिषी ने कहा सीधा कर के दिखाओ।

किसान बोला हम भिखारी नही हैं जो हाथ फेलाए। हमारे क्षेत्र मे साक्षात शिवजी का वास हे हम को किसी चिज का डर नहीं हैं। वह किसान जय महाकाल बोल कर चला गया।

किसान की बात से राजा को भी अकल आइ और उसने मंत्री से कहा वापस चलो और हमला बोलो, राजा ने भी जय महकाल का नारा लगा कर हमला बोल दिया और जीत गया।

नोट: दिशाशूल मात्र से अपने कर्तव्य से पीछे हटना कोरी मूर्खत होती हैं। इस लिए आकस्मिक प्रसंगो एवं घटनाओं से निपटने के लिए दिशाशूल का विचार त्याग कर अपनी बुद्धि एवं विवेक से कार्य करना चाहिए।

राम नाम की महिमा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक कथा के अनुशार:

एक संत महात्मा श्यामदासजी रात्रि के समय में 'श्रीराम' नाम का अजपाजाप करते हुए अपनी मस्ती में चले जा रहे थे। जाप करते हुए वे एक गहन जंगल से गुजर रहे थे।

विरक्त होने के कारण वे महात्मा बार-बार देशाटन करते रहते थे। वे किसी एक स्थान में अधिक समय नहीं रहते थे। वे इश्वर नाम प्रेमी थे। इस लिये दिन-रात उनके मुख से राम नाम जप चलता रहता था। स्वयं राम नाम का अजपाजाप करते तथा औरों को भी उसी मार्ग पर चलाते।

श्यामदासजी गहन जंगल में मार्ग भूल गये थे पर अपनी मस्ती में चले जा रहे थे कि जहाँ राम ले चले वहाँ....। दूर अँधेरे के बिच में बहुत सी दीपमालाएँ प्रकाशित थीं। महात्मा जी उसी दिशा की ओर चलने लगे।

निकट पहुँचते ही देखा कि वटवृक्ष के पास अनेक प्रकार के वाद्ययंत्र बज रहे हैं, नाच -गान और शराब की महफिल जमी है। कई स्त्री पुरुष साथ में नाचते-कूदते-हँसते तथा औरों को हँसा रहे हैं। उन्हें महसूस हुआ कि वे मनुष्य नहीं प्रेतात्मा हैं। श्यामदासजी को देखकर एक प्रेत ने उनका हाथ पकड़कर कहाः ओ मनुष्य ! हमारे राजा तुझे बुलाते हैं, चल। वे मस्तभाव से राजा के पास गये जो सिंहासन पर बैठा था। वहाँ राजा के इर्द-गिर्द कुछ प्रेत खड़े थे। प्रेतराज ने कहाः तुम इस ओर क्यों आये? हमारी मंडली आज मदमस्त हुई है, इस बात का तुमने विचार नहीं किया? तुम्हें मौत का डर नहीं है?

अट्टहास करते हुए महात्मा श्यामदासजी बोलेः मौत का डर? और मुझे? राजन् ! जिसे जीने का मोह हो उसे मौत का डर होता हैं। हम साधु लोग तो मौत को आनंद का विषय मानते हैं। यह तो देहपरिवर्तन हैं जो प्रारब्धकर्म के बिना किसी से हो नहीं सकता।

प्रेतराजः तुम जानते हो हम कौन हैं?

महात्माजीः मैं अनुमान करता हूँ कि आप प्रेतात्मा हो।

प्रेतराजः तुम जानते हो, लोग समाज हमारे नाम से काँपता हैं।

महात्माजीः प्रेतराज ! मुझे मनुष्य में गिनने की गलती मत करना। हम जिंदा दिखते हुए भी जीने की इच्छा से रहित, मृततुल्य हैं। यदि जिंदा मानों तो भी आप हमें मार नहीं सकते। जीवन-मरण कर्माधीन हैं। मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूँ?

महात्मा की निर्भयता देखकर प्रेतों के राजा को आश्चर्य हुआ कि प्रेत का नाम सुनते ही मर जाने वाले मनुष्यों में एक इतनी निर्भयता से बात कर रहा हैं। सचमुच, ऐसे मनुष्य से बात करने में कोई हरकत नहीं। प्रेतराज बोलाः पूछो, क्या प्रश्न है?

महात्माजीः प्रेतराज ! आज यहाँ आनंदोत्सव क्यों मनाया जा रहा है?

प्रेतराजः मेरी इकलौती कन्या, योग्य पति न मिलने के कारण अब तक कुआँरी हैं। लेकिन अब योग्य जमाई मिलने की संभावना हैं। कल उसकी शादी हैं इसलिए यह उत्सव मनाया जा रहा हैं।

महात्मा ने हँसते हुए कहाः तुम्हारा जमाई कहाँ हैं? मैं उसे देखना चाहता हूँ।"

प्रेतराजः जीने की इच्छा के मोह के त्याग करने वाले महात्मा ! अभी तो वह हमारे पद (प्रेतयोनी) को प्राप्त नहीं हुआ हैं।

वह इस जंगल के किनारे एक गाँव के श्रीमंत (धनवान) का पुत्र हैं। महादुराचारी होने के कारण वह इसवक्त भयानक रोग से पीड़ित हैं।

कल संध्या के पहले उसकी मौत होगी। फिर उसकी शादी मेरी कन्या से होगी। इस लिये रात भर गीत-नृत्य और मद्यपान करके हम आनंदोत्सव मनायेंगे।

श्यामदासजी वहाँ से विदा होकर श्रीराम नाम का अजपाजाप करते हुए जंगल के किनारे के गाँव में पहूँचे। उस समय सुबह हो चुकी थी।

एक ग्रामीण से महात्मा नें पूछाः इस गाँव में कोई श्रीमान् का बेटा बीमार हैं?

ग्रामीणः हाँ, महाराज ! नवलशा सेठ का बेटा सांकलचंद एक वर्ष से रोगग्रस्त हैं। बहुत उपचार किये पर उसका रोग ठीक नहीं होता।

महात्माः क्या वे जैन धर्म पालते हैं?

ग्रामीणः उनके पूर्वज जैन थे किंतु भाटिया के साथ व्यापार करते हुए अब वे वैष्णव हुए हैं।

महात्मा नवलशा सेठ के घर पहुंचे सांकलचंद की हालत गंभीर थी। अन्तिम घड़ियाँ थीं फिर भी महात्मा को देखकर माता-पिता को आशा की किरण दिखी। उन्होंने महात्मा का स्वागत किया। सेठपुत्र के पलंग के निकट आकर महात्मा रामनाम की माला जपने लगे। दोपहर होते-होते लोगों का आना-जाना बढ़ने लगा। महात्मा ने पूछाः क्यों, सांकलचंद ! अब तो ठीक हो?

सांकलचंद ने आँखें खोलते ही अपने सामने एक प्रतापी संत को देखा तो रो पड़ा। बोलाः बापजी ! आप मेरा अंत सुधारने के लिए पधारे हो। मैंने बहुत पाप किये हैं। भगवान के दरबार में क्या मुँह दिखाऊँगा? फिर भी आप जैसे संत के दर्शन हुए हैं, यह मेरे लिए शुभ संकेत हैं। इतना बोलते ही उसकी साँस फूलने लगी, वह खाँसने लगा।

बेटा ! निराश न हो भगवान राम पतित पावन है। तेरी यह अन्तिम घड़ी हैं। अब काल से डरने का कोई कारण नहीं। खूब शांति से चित्तवृत्ति के तमाम वेग को रोककर श्रीराम नाम के जप में मन को लगा दे। अजपाजाप में लग जा।

शास्त्र कहते हैं-

चरितम् रघुनाथस्य शतकोटिम् प्रविस्तरम्।
एकैकम् अक्षरम् पूण्या महापातक नाशनम्।।

अर्थातः सौ करोड़ शब्दों में भगवान राम के गुण गाये गये हैं। उसका एक-एक अक्षर ब्रह्महत्या आदि महापापों का नाश करने में समर्थ हैं।

दिन ढलते ही सांकलचंद की बीमारी बढ़ने लगी। वैद्य-हकीम बुलाये गये। हीरा भस्म आदि कीमती औषधियाँ दी गयीं। किंतु अंतिम समय आ गया यह जानकर महात्माजी ने थोड़ा नीचे झुककर उसके कान में रामनाम लेने की याद दिलायी। राम बोलते ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये। लोगों ने रोना शुरु कर दिया। श्मशान यात्रा की तैयारियाँ होने लगीं। मौका पाकर महात्माजी वहाँ से चल दिये।

नदी तट पर आकर स्नान करके नामस्मरण करते हुए वहाँ से रवाना हुए। शाम ढल चुकी थी। फिर वे मध्यरात्रि के समय जंगल में उसी वटवृक्ष के पास पहुँचे। प्रेत समाज उपस्थित था। प्रेतराज सिंहासन पर हताश होकर बैठे थे। आज गीत, नृत्य, हास्य कुछ न था। चारों ओर करुण आक्रंद हो रहा था, सब प्रेत रो रहे थे। हास्य कुछ न था। चारों ओर करुण आक्रंद हो रहा था, सब प्रेत रो रहे थे।

महात्मा ने पूछाः प्रेतराज ! कल तो यहाँ आनंदोत्सव था, आज शोक-समुद्र लहरा रहा हैं। क्या कुछ अहित हुआ हैं?

प्रेतराजः हाँ भाई ! इसीलिए रो रहे हैं। हमारा सत्यानाश हो गया। मेरी बेटी की आज शादी होने वाली थी। अब वह कुँआरी रह जायेगी

महात्मा ने पूछाः प्रेतराज ! तुम्हारा जमाई तो आज मर गया हैं। फिर तुम्हारी बेटी कुँआरी क्यों रही?

प्रेतराज ने चिढ़कर कहाः तेरे पाप से। मैं ही मूर्ख हूँ कि मैंने कल तुझे सब बता दिया। तूने हमारा सत्यानाश कर दिया।

महात्मा ने नम्रभाव से कहाः मैंने आपका अहित किया यह मुझे समझ में नहीं आता। क्षमा करना, मुझे मेरी भूल बताओगे तो मैं दुबारा नहीं करूँगा।

प्रेतराज ने जलते हृदय से कहाः यहाँ से जाकर तूने मरने वाले को नाम स्मरण का मार्ग बताया और अंत समय भी राम नाम कहलवाया। इससे उसका उद्धार हो गया और मेरी बेटी कुँआरी रह गयी।

महात्माजीः क्या? सिर्फ एक बार नाम जप लेने से वह प्रेतयोनि से छूट गया? आप सच कहते हो?

प्रेतराजः हाँ भाई ! जो मनुष्य राम नामजप करता हैं वह राम नामजप के प्रताप से कभी हमारी योनि को प्राप्त नहीं होता। भगवन्नाम जप में नरकोद्धारिणी शक्ति हैं। प्रेत के द्वारा रामनाम का यह प्रताप सुनकर महात्माजी प्रेमाश्रु बहाते हुए भाव समाधि में लीन हो गये। उनकी आँखे खुलीं तब वहाँ प्रेत-समाज नहीं था, बाल सूर्य की सुनहरी किरणें वटवृक्ष को शोभायमान कर रही थीं।

कबीर पुत्र कमाल की एक कथा हैं।

एक बार राम नाम के प्रभाव से कमाल द्वारा एक कोढ़ी का कोढ़ दूर हो गया। कमाल समझते हैं कि रामनाम की महिमा मैं जान गया हूँ। कमाल के इस कार्य से किंतु कबीर जी प्रसन्न नहीं हुए। कबीरजी ने कमाल को तुलसीदास जी के पास भेजा।

तुलसीदासजी ने तुलसी के पत्र पर रामनाम लिखकर वह तुलसी पत्र जल में डाला और उस जल से 500 कोढ़ियों को ठीक कर दिया।

कमान समझ ने लगा कि तुलसीपत्र पर एक बार रामनाम लिखकर उसके जल से 500 कोढ़ियों को ठीक किया जा सकता है, रामनाम की इतनी महिमा हैं। किंतु कबीर जी इससे भी संतुष्ट नहीं हुए और उन्होंने कमाल को भेजा संत सूरदास जी के पास।

संत सूरदास जी ने गंगा में बहते हुए एक शव के कान में **राम** शब्द का केवल **र** कार कहा और शव जीवित हो गया। तब कमाल ने सोचा कि **राम** शब्द के **र** कार से मुर्दा जीवित हो सकता हैं। यह राम शब्द की महिमा हैं।

तब कबीर जी ने कहाः यह भी नहीं। इतनी सी महिमा नहीं है राम शब्द की।

भृकुटि विलास सृष्टि लय होई।

जिसके भृकुटि विलास मात्र से प्रलय हो सकता है, उसके नाम की महिमा का वर्णन तुम क्या कर सकोगे?

राम नाम महिमा में एक अन्य कथा:

समुद्रतट पर एक व्यक्ति चिंतातुर बैठा था, इतने में उधर से विभीषण निकले। उन्होंने उस चिंतातुर व्यक्ति से पूछाः क्यों भाई ! तुम किस बात की चिंता में पड़े हो?

मुझे समुद्र के उस पार जाना हैं परंतु मेरें पास समुद्र पार करने का कोई साधन नहीं हैं। अब क्या करूँ मुझे इस बात की चिंता हैं। अरे भाई, इसमें इतने अधिक उदास क्यों होते हो?

ऐसा कहकर विभीषण ने एक पत्ते पर एक नाम लिखा तथा उसकी धोती के पल्लू से बाँधते हुए कहाः इसमें मेनें तारक मंत्र बाँधा हैं। तू इश्वर पर श्रद्धा रखकर तनिक भी घबराये बिना पानी पर चलते आना। अवश्य पार लग जायेगा।

विभीषण के वचनों पर विश्वास रखकर वह व्यक्ति समुद्र की ओर आगे बढ़ने लगा। वहं व्यक्ति सागर के सीने पर नाचता-नाचता पानी पर चलने लगा। वह व्यक्ति जब समुद्र के बीचमें आया तब उसके मन में संदेह हुआ कि विभीषण ने ऐसा कौन सा तारक मंत्र लिखकर मेरे पल्लू से बाँधा हैं कि मैं समुद्र पर सरलता से चल सकता हूँ। इस मुझे जरा देखना चाहिए।

उस व्यक्ति ने अपने पल्लू में बँधा हुआ पत्ता खोला और पढ़ा तो उस पर दो अक्षर में केवल **राम** नाम लिखा हुआ था। **राम** नाम पढ़ते ही उसकी श्रद्धा तुरंत ही अश्रद्धा में बदल गयीः अरे ! यह कोई तारक मंत्र हैं ! यह तो सबसे सीधा सादा राम नाम हैं ! मन में इस प्रकार की अश्रद्धा उपजते ही वह व्यक्ति डूब कर मरगया।

कथा सार: इस लिये विद्वानो ने कहां हैं श्रद्धा और विश्वास के मार्ग में संदेह नहीं करना चाहिए क्योकि अविश्वास एवं अश्रद्धा ऐसी विकट परिस्थितियाँ निर्मित हो जाती हैं कि मंत्र जप से काफी ऊँचाई तक पहुँचा हुआ साधक भी विवेक के अभाव में संदेहरूपी षड्यंत्र का शिकार होकर अपना अति सरलता से पतन कर बैठता हैं। इस लिये साधारण मनुष्य को तो संदेह की आँच ही गिराने के लिए पर्याप्त हैं। हजारों-लाखों-करोडों मंत्रो की साधना जन्मों-जन्म की साधना अपने सदगुरु पर संदेह करने मात्र से नष्ट हो जाती है।

तुलसीदास जी कहते हैं-

राम ब्रहम परमारथ रूपा।

अर्थात्: ब्रहम ने ही परमार्थ के लिए राम रूप धारण किया था।

रामनाम की औषधि खरी नियत से खाय।

अंगरोग व्यापे नहीं महारोग मिट जाय।।

क्या श्राप के कारण मिला राम अवतार?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक बार शिव जी कैलास पर्वत पर एक विशाल बरगद के वृक्ष के नीचे बाघ चर्म बिछाकर आनन्द पूर्वक बैठे थे। उचित अवसर जानकर माता पार्वती भी वहाँ आकर उनके पास बैठ गईं। पार्वती जी ने शिव जी से कहा, हे नाथ! पूर्व जन्म में मुझे एसा मोह हो गया था और मैंने श्री राम की परीक्षा ली थी। मेरा वह मोह अब समाप्त हो चुका है किन्तु मैं अभी भी भ्रमित हूँ कि यदि श्री राम राजपुत्र हैं तो ब्रह्म कैसे हो सकते हैं? आप कृपा करके मुझे श्री राम की कथा सुनाएँ और मेरे भ्रम को दूर करें।

पार्वती जी के प्रश्न से प्रसन्न होकर शिव जी बोले, हे पार्वती! श्री रामचन्द्र जी की कथा कामधेनु के समान सभी सुखों को प्रदान करने वाली हैं। अतः मैं उस कथा को, जिसे काकभुशुण्डि जी ने गरुड़ को सुनाया था, उस कथा को मैं तुम्हें सुनाता हूँ। हे सुमुखि! जब-जब धर्म का ह्रास होता है और देवताओं, ब्राहमणों पर अत्याचार करने वाले दुष्ट व नीच अभिमानी राक्षसों की वृद्धि हो जाती है तब-तब कृपा के सागर भगवान श्री विष्णु भाँति-भाँति के अवतार धारण कर सज्जनों की पीड़ा को हरते हैं। वे असुरों को मार कर देवताओं की सत्ता को स्थापित करते हैं।

भगवान श्री विष्णु का श्री रामचन्द्र जी के रुप में अवतार लेने का भी यही कारण हैं। उनकी कथा अत्यन्त विचित्र है। मैं उनके जन्मों की कहानी तुम्हें सुनाता हूँ। श्री हरि के जय और विजय नामक दो प्रिय द्वारपाल हैं। एक बार सनकादि ऋषियों ने उन्हें मृत्युलोक में चले जाने के लिये शाप दे दिया। शापवश उन्हें मृत्युलोक में तीन बार राक्षस के रूप में जन्म लेना पड़ा। पहली बार उनका जन्म हिरण्यकश्यपु और हिरण्याक्ष के रूप में हुआ। उन दोनों के अत्याचार बहुत अधिक बढ़ जाने के कारण श्री हरि ने वराह का शरीर धारण करके हिरण्याक्ष का वध किया और नरसिंह रूप धारण कर के हिरण्यकश्यपु को मारा।

उन्हीं दोनों ने रावण और कुम्भकर्ण के रूप में फिर से जन्म लिया और अत्यन्त पराक्रमी राक्षस बने। तब कश्यप मुनि और अदिति, जो के दशरथ और कौशल्या के रूप में अवतरित हुए थे, का पुत्र बनकर श्री हरि ने उनका वध किया।

एक कल्प में जलन्धर नामक दैत्य ने समस्त देवतागण को परास्त कर दिया तब शिव जी ने जलन्धर से युद्ध किया। उस दैत्य की स्त्री परम पतिव्रता थी अतः शिव जी भी उस दैत्य से नहीं जीत सके।

तब श्री विष्णु ने छलपूर्वक उस स्त्री का व्रत भंग कर देवताओं का कार्य किया। तब उस स्त्री ने श्री विष्णु को मनुष्य देह धारण करने का शाप दिया था।

श्री विष्णु के श्री राम के रूप में अवतरित होने का एक कारण यह भी था। वही जलन्धर दैत्य अगले जन्म में रावण के रुप में अवतरित हुआ जिसे श्री राम ने युद्ध में मार कर परमपद प्रदान किया।

अन्य एक कथा के अनुसार एक बार नारद ने श्री विष्णु को मनुष्यदेह धारण करने का शाप दिया था जिसके कारण श्री राम का अवतार हुआ।"

धन्य तो यह लक्ष्मण है?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

रामजी, सीताजी और लक्ष्मणजी जंगल में एक वृक्ष के नीचे बैठे थे। उस वृक्ष और डाली पर एक लता छाई हुई थी। लता के नयी कोमल-कोमल कोंपलें निकल रही थी और कहीं-कहीं पर ताम्रवर्ण के पत्ते निकल रहे थे। पुष्प और पत्तों से लता छाई हुई थी जिस्से वृक्ष की सुन्दर शोभा बढा रहे थे। वृक्ष बहुत ही सुहावना लग रहा था। उस वृक्ष की शोभा को देखकर भगवान श्रीरामजी ने लक्ष्मण जी से कहा, देखो लक्ष्मण ! यह लता अपने सुन्दर-सुन्दर फल, सुगन्धित फूल और हरी-हरी पत्तियों से इस वृक्ष की कैसी शोभा बढा रही है ! जंगल के अन्य सब वृक्षों से यह वृक्ष कितना सुन्दर दिख रहा है ! इतना ही नहीं, इस वृक्ष के कारण ही सारे जंगल की शोभा हो रही है। इस लता के कारण ही पशु-पक्षी इस वृक्ष का आश्रय लेते हैं। धन्य है यह लता ! भगवान श्रीराम के मुख से लता की प्रशंसा सुनकर सीताजी लक्ष्मण से बोलीःदेखो लक्ष्मण भैया ! तुमने ख्याल किया कि नहीं ? देखो, इस लता का ऊपर चढ़ जाना, फूल पत्तों से छा जाना, तन्तुओं का फैल जाना, ये सब वृक्ष के आश्रित हैं, वृक्ष के कारण ही हैं। इस लता की शोभा भी वृक्ष के ही कारण है। अतः मूल में महिमा तो वृक्ष की ही है। आधार तो वृक्ष ही है। वृक्ष के सहारे बिना लता स्वयं क्या कर सकती है ? कैसे छा सकती है ? अब बोलो लक्ष्मण भैया ! तुम्हीं बताओ, महिमा वृक्ष की ही हुई न ? वृक्ष का सहारा पाकर ही लता धन्य हुई न ?

राम जी ने कहाः क्यों लक्ष्मण ! यह महिमा तो लता की ही हुई न ? लता को पाकर वृक्ष ही धन्य हुआ न ?

लक्ष्मण जी बोलेः हमें तो एक तीसरी ही बात सूझती है।

सीता जी ने पूछाः वह क्या है देवर जी ?

लक्ष्मणजी बोलेः न वृक्ष धन्य है न लता धन्य है। धन्य तो यह लक्ष्मण है जो आप दोनों की छाया में रहता है।

जब कबीरजी को मिली राम मंत्र दीक्षा?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

संत कबीर किसी पहुचे हुए गुरु से मंत्रदीक्षा प्राप्त करना चाहते थे। उस समय काशी में रामानंद स्वामी बड़े उच्च कोटि के महापुरुष माने जाते थे। कबीर जी ने उनके आश्रम के मुख्य द्वार पर आकर द्वारपाल से विनती कीः मुझे गुरुजी के दर्शन करा दो। उस समय जात-पाँत का बड़ा बोलबाला था। और फिर काशी जैसी पावन नगरी में पंडितों और पंडे लोगों का अधिक प्रभाव था। कबीरजी किसके घर पैदा हुए थे – हिंदू के या मुसलिम के? कुछ पता नहीं था। कबीर जी एक जुलाहे को तालाब के किनारे मिले थे। उसने कबीर जी का पालन-पोषण करके उन्हें बड़ा किया था। जुलाहे के घर बड़े हुए तो जुलाहे का धंधा करने लगे। लोग मानते थे कि कबीर जी मुसलमान की संतान हैं।

द्वारपालों ने कबीरजी को आश्रम में नहीं जाने दिया। कबीर जी ने सोचा कि अगर पहुँचे हुए महात्मा से गुरुमंत्र नहीं मिला तो मनमानी साधना से हरि के दास बन सकते हैं पर हरिमय नहीं बन सकते। कैसे भी करके मुझे रामानंद जी महाराज से ही मंत्रदीक्षा लेनी है।

कबीरजी ने देखा कि स्वामी रामानंदजी हररोज सुबह 3-4 बजे खड़ाऊँ पहन कर टप...टप आवाज करते हुए गंगा में स्नान करने जाते हैं। कबीर जी ने गंगा के घाट पर उनके जाने के रास्ते में सब जगह बाड़ कर दी और आने-जाने का एक ही मार्ग रखा। उस मार्ग में सुबह के अँधेरे में कबीर जी सो गये। गुरु महाराज आये तो अँधेरे के कारण स्वामी रामानंदजी का कबीरजी पर पैर पड़ गया। उनके मुख से स्वतः उदगार निकल पड़ेः राम..... राम...!

कबीरजी का तो काम बन गया। गुरुजी के दर्शन भी हो गये, उनकी पादुकाओं का स्पर्श तथा गुरुमुख से राम मंत्र भी मिल गया। गुरुदीक्षा के बाद अब दीक्षा में बाकी ही क्या रहा? कबीर जी नाचते, गुनगुनाते घर वापस आये। राम नाम की और गुरुदेव के नाम की रट लगा दी। अत्यंत स्नेहपूर्ण हृदय से गुरुमंत्र का जप करते, गुरुनाम का कीर्तन करते हुए साधना करने लगे। दिनोंदिन कबीर जी मस्ती बढ़ने लगी। काशी के पंडितों ने देखा कि यवन का पुत्र कबीर राम नाम जपता हैं, स्वामी रामानंद के नाम का कीर्तन करता हैं। उस यवन को राम नाम की दीक्षा किसने दी? क्यों दी? उसने मंत्र को भ्रष्ट कर दिया !

पंडितों ने कबीर जी से पूछाः तुमको रामनाम की दीक्षा किसने दी? कबीरजी बोले, स्वामी रामानंदजी महाराज के श्रीमुख से मिली। पंडितों ने फिर पूछाः कहाँ दी दीक्षा?, कबीरजी बोले, गंगा के घाट पर।

पंडित पहुँचे रामानंदजी के पासः आपने यवन को राममंत्र की दीक्षा देकर मंत्र को भ्रष्ट कर दिया, सम्प्रदाय को भ्रष्ट कर दिया। गुरु महाराज ! यह आपने क्या किया? गुरु महाराज ने कहाः मैंने तो किसी को दीक्षा नहीं दी।

वह यवन जुलाहा तो रामानंद..... रामानंद..... मेरे गुरुदेव रामानंद...की रट लगाकर नाचता हैं, आपका नाम बदनाम करता हैं। रामानंदजी बोले भाई ! मैंने तो उसको कुछ नहीं कहा। उसको बुला कर पूछा जाय। पता चल जायगा।

काशी के पंडित इकट्ठे हो गये। जुलाहा सच्चा कि रामानंदजी सच्चे यह देखने के लिए भीड़ इक्कठी हो गयी। कबीर जी को बुलाया गया। गुरु महाराज मंच पर विराजमान हैं। सामने विद्वान पंडितों की सभा हैं।

रामानंदजी ने कबीर से पूछाः मैंने तुम्हें कब दीक्षा दी? मैं कब तेरा गुरु बना? कबीरजी बोलेः महाराज ! उस दिन प्रभात को आपने मुझे पादुका-स्पर्श कराया और राममंत्र भी दिया, वहाँ गंगा के घाट पर।

रामानंद स्वामी ने कबीरजी के सिर पर धीरे से खड़ाऊँ मारते हुए कहाः राम... राम.. राम.... मुझे झूठा बनाता है? गंगा के घाट पर मैंने तुझे कब दीक्षा दी थी ?

कबीरजी बोल उठेः गुरु महाराज ! तब की दीक्षा झूठी तो अब की तो सच्ची....! मुख से राम नाम का मंत्र भी मिल गया और सिर पर आपकी पावन पादुका का स्पर्श भी हो गया। स्वामी रामानंदजी उच्च कोटि के संत महात्मा थे। उन्होंने पंडितों से कहाः चलो, यवन हो या कुछ भी हो, मेरा पहले नंबर का शिष्य यही है।

जब भक्त के लिये स्वयं भगवान मरने को तैयार होते हैं?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक प्रसंग के अनुशार

जब विभीषण भगवान श्रीराम के चरणों की शरण में हो जाता है, तब भगवान श्रीराम विभीषण के दोषों को अपने ही दोष मानते हैं। एक समय विभीषण समुद्र लांघ कर समुद्र के दूसरे छोर पर आये। वहाँ विप्रघोष नामक गाँव में उनसे अज्ञात ही एक ब्रह्महत्या हो गई। जब बाकी के गाँव वालो को इस बात का पता लगा तो वहाँ के सभी ब्राह्मणों ने इकट्ठे होकर विभीषण को खूब मारा-पीटा, पर विभीषण मरे नहीं। फिर ब्राह्मणों ने विभीषण को जंजीरों से बाँधकर जमीन के भीतर एक गुफा में ले जाकर बंध कर दिया।

जब भगवान श्रीराम को पता लगा की तो श्रीराम जी पुष्पक विमान के द्वारा तत्काल, गाँव में पहुँचे। ब्राह्मणों ने राम जी का बहुत आदर-सत्कार किया और कहा कि, महाराज ! इसने ब्रह्महत्या कर दी है। इसको हमने बहुत मारा, पर यह मरा नहीं।

भगवान राम ने कहाः हे ब्राह्मणों ! विभीषण को मैंने कल्प तक की आयु और राज्य दे रखा हैं, वह कैसे मारा जा सकता है ! और उसको मारने की जरूरत ही क्या हैं? वह तो मेरा भक्त हैं।

मेरें भक्त के लिए मैं स्वयं मरने को तैयार हूँ। हमारे यहाँ विधान है कि दास के अपराध की जिम्मेवारी उसके स्वामी पर होती हैं। स्वामी ही उसके दण्ड का पात्र होता हैं। इसलिए विभीषण के बदले आप लोग मेरें को ही दण्ड दें। भगवान की यह शरणागत वत्सलता देखकर सब ब्राह्मण आश्चर्य करने लगे और उन सब ने उसी क्षण भगवान श्रीराम की शरण ले ली।



श्री राम शलाका प्रश्नावली

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	ब	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रें	बस	है	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जै	इ	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	हुँ	ह	ब	ब	प	चि	स	य	स	तु
म	का	◌ा	र	र	मा	मि	मी	म्हा	◌ा	जा	हू	हीं	◌ा	जू
ता	रा	रे	री	ह्न	का	फ	खा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	म	जि	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	मि	सम	रि	ग	द	न	ख	म	खि	जि	नि	त	जं
सिं	मु	न	न	कौ	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	◌ा	न	ब	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	ढा	र	ल	का	ए	तू	र	न	नु	व	थ
सि	ह	सु	म्ह	र	र	स	हिं	र	त	न	ख	◌ा	◌ा	◌ा
र	सा	◌ा	ला	धी	◌ा	री	जा	हू	हीं	षा	जू	ई	रा	रे

विधि-

श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान कर अपने प्रश्न को मन में दोहरायें। फिर ऊपर दी गई सारणी में से किसी एक अक्षर अंगुली रखें। अब उससे अगले अक्षर से क्रमशः नौवां अक्षर लिखते जायें जब तक पुनः उसी जगह नहीं पहुँच जायें। इस प्रकार एक चौपाई बनेगी, जो अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगी।

यहां हमने आपकी अनुकूलता हेतु नौवे अक्षर के कोष्टक को एक समान रंग में रंगने का प्रयास किया हैं जिससे आपको हर नौवे अक्षरको गिनती करने की आवश्यक्ता न रहें आप सीधे एक समान रंगो के कोष्टक में लीखे अक्षरोको मिलाले/लिख ले और जो चौपाई बने उस चौपाई को भी देखने में आपको आसानी हो इस उद्देश्य से उसी रंग में रंगने का प्रयास किया हैं।

1 सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।

फलः -प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

यह चौपाई बालकाण्ड में श्रीसीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरीजी ने श्रीसीताजी को आशीर्वाद दिया है।

2 प्रबिसि नगर कीजै सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।

फलः-भगवान् का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।

यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमानजी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।

3 उघरें अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू।।

फलः-इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य की सफलता में सन्देह है।

यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।

4 बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं।।

फलः-खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य की सफलता में सन्देह है।

यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।

5 होइ है सोई जो राम रचि राखा। को करि तरक बढ़ावहिं साषा।।

फलः-कार्य होने में सन्देह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयष्कर है।

यह चौपाई बालकाण्डान्तर्गत शिव और पार्वती के संवाद में है।

6 मुद मंगलमय संत समाजू। जिमि जग जंगम तीरथ राजू।।

फलः-प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

यह चौपाई बालकाण्ड में संत-समाजरुपी तीर्थ के वर्णन में है।

7 गरल सुधा रिपु करय मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।।

फलः-प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

यह चौपाई श्रीहनुमान् जी के लंका प्रवेश करने के समय की है।

8 बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काह न धीरा।।

फलः-कार्य पूर्ण होने में सन्देह है।

यह चौपाई लंकाकाण्ड में रावन की मृत्यु के पश्चात् मन्दोदरी के विलाप के प्रसंग में है।

9 सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। राम लखनु सुनि भए सुखारे।।

फलः-प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

यह चौपाई बालकाण्ड पुष्पवाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्रजी का आशीर्वाद है।

जब श्रीराम ने किय विजया एकादशी व्रत?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक बार युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण से **पूछा हे प्रभु** फाल्गुन (गुजरात-महाराष्ट्र में माघ) के कृष्णपक्ष को किस नाम की एकादशी होती हैं और उसका व्रत करने की विधि क्या हैं? कृपा करके बताइये ।

फाल्गुन के कृष्णपक्ष की एकादशी को 'विजया एकादशी' के नाम से जाना जाता हैं।

भगवान श्रीकृष्ण पुनः बोले: युधिष्ठिर ! एक बार नारदजी ने ब्रह्माजी से फाल्गुन के कृष्णपक्ष की 'विजया एकादशी' के व्रत से होनेवाले पुण्य के बारे में पूछा था तथा ब्रह्माजी ने इस व्रत के बारे में नारदजी को जो कथा और विधि बतायी थी, उसे सुनो :



ब्रह्माजी ने कहा : नारद ! यह व्रत बहुत ही प्राचीन, पवित्र और पाप नाशक हैं । यह एकादशी राजाओं को विजय प्रदान करती हैं, इसमें तनिक भी संदेह नहीं हैं ।

त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी जब लंका पर चढ़ाई करने के लिए समुद्र के किनारे पहुँचे, तब उन्हें समुद्र को पार करने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था ।

उन्होंने लक्ष्मणजी से पूछा : 'सुमित्रानन्दन ! किस उपाय से इस समुद्र को पार किया जा सकता है ? यह अत्यन्त अगाध और भयंकर जल जन्तुओं से भरा हुआ है । मुझे ऐसा कोई उपाय नहीं दिखायी देता, जिससे इसको सुगमता से पार किया जा सके ।

लक्ष्मणजी बोले : हे प्रभु ! आप ही आदिदेव और पुराण पुरुष पुरुषोत्तम हैं । आपसे क्या छिपा हैं? यहाँ से आधे योजन की दूरी पर कुमारी द्वीप में बकदाल्भ्य नामक मुनि रहते हैं । आप उन विद्वान मुनीश्वर के पास जाकर उन्हींसे इसका उपाय पूछिये ।

श्रीरामचन्द्रजी महामुनि बकदाल्भ्य के आश्रम पहुँचे और उन्होंने मुनि को प्रणाम किया ।

महर्षि ने प्रसन्न होकर श्रीरामजी के आगमन का कारण पूछा ।

श्रीरामचन्द्रजी बोले : ब्रह्मन् ! मैं लंका पर चढ़ाई करने के उद्धेश्य से अपनी सेनासहित यहाँ आया हूँ ।

मुने ! अब जिस प्रकार समुद्र पार किया जा सके, कृपा करके वह उपाय बताइये ।

बकदाल्भय मुनि ने कहा : हे श्रीरामजी ! फाल्गुन के कृष्णपक्ष में जो 'विजया' नाम की एकादशी होती है, उसका व्रत करने से आपकी विजय होगी। निश्चय ही आप अपनी वानर सेना के साथ समुद्र को पार कर लेंगे । राजन् ! अब इस व्रत की फलदायक विधि सुनिये :

एकादशी के एक दिन पूर्व दशमी के दिन सोने, चाँदी, ताँबे अथवा मिट्टी का एक कलश स्थापित कर उस कलश को जल से भरकर उसमें पल्लव डाल दें । उस कलश के ऊपर भगवान नारायण के सुवर्णमय विग्रह की स्थापना करें । फिर एकादशी के दिन प्रात: काल स्नान करें । कलश को पुन: स्थापित करें । माला, चन्दन, सुपारी तथा नारियल आदि के द्वारा विशेष रुप से उसका पूजन करें ।

कलश के ऊपर सप्तधान्य और जौ रखें । गन्ध, धूप, दीप और भाँति-भाँति के नैवेघ से भगवान नारायण का

पूजन करें । कलश के सामने बैठकर उत्तम कथा वार्ता आदि के द्वारा सारा दिन व्यतीत करें और रात में भी वहाँ जागरण करें । अखण्ड व्रत की सिद्धि के लिए घी का दीपक जलायें ।

फिर द्वादशी के दिन सूर्योदय होने पर उस कलश को किसी जलाशय के समीप स्थापित करें और उसकी विधिवत् पूजा करके देव प्रतिमासहित उस कलश को वेदवेत्ता ब्राह्मण के लिए दान कर दें । कलश के साथ ही और भी बड़े बड़े दान देने चाहिए । श्रीराम ! आप अपने सेनापतियों के साथ इसी विधि से प्रयत्नपूर्वक 'विजया एकादशी' का व्रत कीजिये ।

इससे आपकी विजय होगी ।

ब्रह्माजी कहते हैं : नारद ! यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजी ने मुनि के कथनानुसार उस समय 'विजया एकादशी' का व्रत किया । उस व्रत के करने से श्रीरामचन्द्रजी विजयी हुए । उन्होंने संग्राम में रावण को मारा, लंका पर विजय पायी और सीता को प्राप्त किया । बेटा ! जो मनुष्य इस विधि से व्रत करते हैं, उन्हें इस लोक में विजय प्राप्त होती है और उनका परलोक भी अक्षय बना रहता हैं।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : युधिष्ठिर ! इस कारण 'विजया' का व्रत करना चाहिए । इस प्रसंग को पढ़ने और सुनने से वाजपेय यज्ञ के समान फल मिलता हैं।

स्वयंप्रभा ने की रामदूतो की सहायता?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

माँ सीता की खोज करते-करते हनुमान, जाम्बंत, अंगद आदि स्वयंप्रभा के आश्रम में पहुँचे। उन्हें जोरों की भूख और प्यास लगी थी। उन्हें देखकर स्वयंप्रभा ने पूछा किः क्या तुम हनुमान हो? श्रीरामजी के दूत हो? सीता जी की खोज में निकले हो?"

हनुमानजी ने कहाः "हाँ, माँ! हम सीता माता की खोज में इधर तक आये हैं।"

फिर स्वयंप्रभा ने अंगद की ओर देखकर कहाः तुम सीता जी को खोज तो रहे हो, किन्तु आँखें बंद करके खोज रहे हो या आँखें खोलकर?"

अंगद बोलाः हम क्या आँखें बन्द करके खोजते होंगे? हम तो आँखें खोलकर ही माता सीता की खोज कर रहे हैं।

स्वयंप्रभा बोलीः सीताजी को खोजना है तो आँखें खोलकर नहीं बंद करके खोजना होगा। सीता जी अर्थात् भगवान की अर्धांगिनी, सीताजी यानी ब्रह्मविद्या, आत्मविद्या। ब्रह्मविद्या को खोजना है तो आँखें खोलकर नहीं आँखें बंद करके ही खोजना पड़ेगा। आँखें खोलकर खोजोगे तो सीताजी नहीं मिलेंगीं। तुम आँखें बन्द करके ही सीताजी (ब्रह्मविद्या) को पा सकते हो। ठहरो मैं तुम्हे बताती हूँ कि सीता जी अभी कहाँ हैं।

ध्यान करके स्वयंप्रभा ने बतायाः सीताजी यहाँ कहीं भी नहीं, वरन् सागर पार लंका में हैं। अशोकवाटिका में बैठी हैं और राक्षसियों से घिरी हैं। उनमें त्रिजटा नामक राक्षसी हैं तो रावण की सेविका, किन्तु सीताजी की भक्त बन गयी है। सीताजी वहीं रहती हैं।"

रामदूत वानर सोचने लगे कि भगवान राम ने तो एक महीने के अंदर सीता माता का पता लगाने के लिए कहा था। अभी तीन सप्ताह से ज़्यादा समय तो यहीं हो गया हैं। वापस क्या मुँह लेकर जाएँ? सागर तट तक पहुँचते-पहुँचते कई दिन लग जाएँगे। अब क्या करें?

उनके मन की बात जानकर स्वयंप्रभा ने कहाः चिन्ता मत करो। अपनी आँखें बंद करो। मैं योगबल से एक क्षण में तुम्हें वहाँ पहुँचा देती हूँ।

हनुमान, अंगद और अन्य वानर अपनी आँखें बन्द करते हैं और स्वयंप्रभा अपनी योगशक्ति से उन्हें सागर-तट पर कुछ ही पल मैं पहुँचा देती हैं।

इस लिये श्रीरामचरितमानस में उल्लेख हैं।

ठाड़े सकल सिंधु के तीरा।

अंगद ने रावण के घमंडको चूर किया

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

लंका पहूँच कर अगले दिन सुबेल पर्वत पर विश्राम कर प्रातःकाल श्री रघुनाथजी उढे और सब मंत्रियों को बुलाकर सलाह में पूछा की शीघ्र बताइए अब क्या उपाय करना चाहिए? जाम्बवान्‌ने श्री रामजी के चरणों में सिर नवाकर कहा हे सब कुछ जानने वाले। हे सबके हृदय में निवास करने वाले अंतर्यामी! हे बुद्धि, बल, तेज, धर्म और गुणों के अधिपति सुनिए! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार सलाह देता हूँ कि बालिकुमार अंगद को दूत बनाकर रावण की लंका में भेजा जाए।

यह अच्छी सलाह सबके मन में जँच गई। कृपा के निधान श्री रामजी ने अंगद से कहा हे बल, बुद्धि और गुणों के धाम बालिपुत्र! हे तात! तुम मेरे काम के लिए लंका जाओ। तुमको अधिक समझाकर क्या कहूँ! मैं जानता हूँ, तुम परम चतुर हो। शत्रु से वही बातचीत करना, जिससे हमारा काम हो और उसका कल्याण हो जाए।

प्रभु श्री रामकी आज्ञा में सिर चढ़कर और उनके चरणों की वंदना करके अंगदजी उठे और बोले हे भगवान्‌श्री रामजी आप जिस पर कृपा करें, वही गुणों का समुद्र हो जाता है। स्वामी सब कार्य अपने-आप सिद्ध हैं, यह तो प्रभु ने मुझ को कार्य दिया है। ऐसे विचार करते हूँए युवराज अंगद का हृदय हर्षित और शरीर पुलकित हो गया। चरणों की वंदना करके रमाजी की प्रभुता हृदय में धारणकर अंगद सबको प्रणाम कर चले।

लंका में प्रवेश करते ही रावण के पुत्र से अंगद की भेंट हो गई, जो वहाँ खेल रहा था। बातों ही बातों में दोनों में झगड़ा बढ़ गया, रावण के पुत्र ने अंगद पर लात उठाई। अंगद ने तब पैर पकड़कर उसे घुमाकर जमीन पर दे पटक कर मार गिराया। यह द्रष्ट देख कर राक्षसो के समूह अंगद को देखकर जहाँ-तहाँ भाग गएं, वे डर के मारे उनके मुख से शब्द नहीं निकल रहे थे।

एक-दूसरे से असली बात नहीं बतलाते, रावण के पुत्र की मृत्यु समझकर सब चुप रह जाते हैं। रावण पुत्र की मृत्यु जानकर और राक्षसों को भय के मारे भागते देखकर नगरभर में कोलाहल मच गया कि जिसने लंका जलाई थी, वही वानर फिर आ गया है। सब अत्यंत भयभीत होकर विचार करने लगे कि विधाता अब न जाने क्या करेगा। वे बिना पूछे ही अंगद को रावण के दरबार में जाने का रास्ता बता देते हैं। जिसे ही वे देखते हैं, वही डर के मारे सूख जाते।

श्री रामजी के चरणकमलों का स्मरण करके अंगद रावण की सभा के द्वार पर गए और वे धीर, वीर और बल की राशि अंगद सिंह की तरह इधर-उधर देखने लगे।

तुरंत ही अंगदने एक राक्षस को भेजा और रावण को अपने आने का समाचार सूचित किया। सुनते ही रावण हँसकर बोला- बुला लाओ, देखें कहाँ का बंदर है।

आज्ञा पाकर बहुत से दूत दौड़े और वानरों के बीच में हाथी के समान अंगद को बुला लाए। अंगद की

भुजाएँ वृक्षों के और सिर पर्वतों के शिखरों के समान हैं। रोमावली मानो बहुत सी लताएँ हैं। मुँह, नाक, नेत्र और कान पर्वत की कन्दराओं और खोहों के बराबर हैं। अत्यंत बलवान्‌बाँके वीर बालिपुत्र अंगद सभा में गए, वे मन में जरा भी नहीं झिझके। अंगद को देखते ही सब सभासद्‌ उठ खड़े हुए। यह देखकर रावण के हृदय में बड़ा क्रोध हुआ।

जैसे मतवाले हाथियों के झुंड में सिंह निःशंक होकर चला जाता हैं, उसी प्रकार श्री रामजी के प्रताप का हृदय में स्मरण करके अंगद निर्भय होकर सभा में बैठ गए। रावण ने कहा अरे बंदर! तू कौन है?, अंगद ने कहा हे दशग्रीव! मैं श्री रघुवीर का दूत हूँ। मेरे पिता से तुम्हारी मित्रता थी, इसलिए हे भाई! मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही आया हूँ।

तुम्हारा उत्तम कुल है, पुलस्त्य ऋषि के तुम पौत्र हो। शिवजी की और ब्रह्माजी की तुमने बहुत प्रकार से पूजा की है। उनसे वर पाए हैं और सब काम

सिद्ध किए हैं। लोकपालों और सब राजाओं को तुमने जीत लिया है।

राजमद से या मोहवश तुम जगज्जननी सीताजी को हर लाए हो। अब तुम मेरे शुभ वचन अर्थात मेरी सलाह सुनो! उसके अनुसार चलने से प्रभु श्री रामजी तुम्हारे सब अपराध माफ कर देंगे। दाँतों में तिनका दबाओ, गले में कुल्हाड़ी डालो और कुटुम्बियों सहित अपनी स्त्रियों को साथ लेकर, आदरपूर्वक जानकीजी को आगे करके, इस प्रकार सब भय छोड़कर चलो-और 'हे शरणागत के पालन करने वाले रघुवंश शिरोमणि श्री रामजी! मेरी रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए। इस तरह प्रार्थना करो। अंतर पुकार सुनते ही प्रभु तुमको निर्भय कर देंगे। रावण ने कहा अरे बंदर के बच्चे! सँभालकर बोल! मूर्ख! मुझ देवताओं के शत्रु को तूने जाना नहीं? अरे भाई! अपना और अपने बाप का नाम तो बता। किस नाते से मित्रता मानता है?

अंगद ने कहा- मेरा नाम अंगद है, मैं बालि का पुत्र हूँ। उनसे कभी तुम्हारी भेंट हुई थी? अंगद का वचन सुनते ही रावण कुछ सकुचा गया और बोला-हाँ, मैं जान गया मुझे याद आ गया, बालि नाम का एक बंदर था। अरे अंगद! तू ही बालि का लड़का है? अरे कुलनाशक! तू तो अपने कुलरूपी बाँस के लिए अग्नि रूप ही पैदा हुआ! गर्भ में ही क्यों न नष्ट हो गया तू? व्यर्थ ही पैदा हुआ जो अपने ही मुँह से तपस्वियों का दूत कहलाया। अब बालि की कुशल तो बता, वह आजकल कहाँ है? तब अंगद ने हँसकर कहा बस कुछ दिन बीतने पर स्वयं ही बालि के पास जाकर, अपने मित्र को हृदय से लगाकर, उसी से कुशल पूछ लेना। श्री रामजी से विरोध करने पर जैसी कुशल होती है, वह सब तुमको वे सुनावेंगे। हे मूर्ख! सुन, भेद उसी के मन में पड़ सकता है, भेद नीति उसी पर अपना प्रभाव डाल सकती है जिसके हृदय में श्री रघुवीर न हों। सच है, मैं तो कुल का नाश करने वाला हूँ और हे रावण! तुम कुल के रक्षक हो। अंधे-बहरे भी ऐसी बात नहीं कहते, तुम्हारे तो बीस नेत्र और बीस कान हैं। शिव, ब्रह्मा आदि देवता और मुनियों के समुदाय जिनके चरणों की सेवा करना चाहते हैं, उनका दूत होकर मैंने कुल को डुबा दिया? अरे ऐसी बुद्धि होने पर भी तुम्हारा हृदय फट नहीं जाता?

अंगद की कठोर वाणी सुनकर रावण आँखें तिरछी करके बोला- अरे दुष्ट! मैं तेरे सब कठोर वचन इसीलिए सह रहा हूँ कि मैं नीति और धर्म को जानता हूँ और उन्हीं की रक्षा कर रहा हूँ। अंगद ने कहा- तुम्हारी धर्मशीलता मैंने भी सुनी है। जैसे की तुमने पराई स्त्री की चोरी की है! और दूत की रक्षा की बात तो अपनी आँखों से देख ली। ऐसे धर्म के व्रत को धारण (पालन) करने वाले तुम डूबकर मर क्यों नहीं जाते। नाक-कान से रहित बहिन को देखकर तुमने धर्म विचारकर ही तो क्षमा कर दिया था! तुम्हारी धर्मशीलता जगजाहिर है। मैं भी बड़ा भाग्यवान्हूँ, जो मैंने तुम्हारा दर्शन पाया?। रावण ने कहा- अरे जड़ जन्तु वानर! व्यर्थ बक-बक न कर, अरे मूर्ख! मेरी भुजाएँ तो देख। ये सब लोकपालों के विशाल बल रूपी चंद्रमा को ग्रसने के लिए राहु के समान हैं। फिर तूने सुना ही होगा कि आकाश रूपी तालाब में मेरी भुजाओं रूपी कमलों पर बसकर शिवजी सहित कैलास हंस के समान शोभा को प्राप्त हुआ था। अरे अंगद! सुन, तेरी सेना में बता, ऐसा कौन योद्धा है, जो मुझसे भिड़ सकेगा। तेरा मालिक तो स्त्री के वियोग में बलहीन हो रहा है और उसका छोटा भाई उसी के दुःख से दुःखी और उदास है।

तुम और सुग्रीव, दोनों नदी तट के वृक्ष हो रहा मेरा छोटा भाई विभीषण, सो वह भी बड़ा डरपोक है। मंत्री जाम्बवान्बहुत बूढ़ा है। वह अब लड़ाई में क्या कर सकता है?। नल-नील तो शिल्प-कर्म जानते हैं वे लड़ना क्या जानें?, हाँ, एक वानर जरूर महान्बलवान् है, जो पहले आया था और जिसने लंका जलाई थी। यह वचन सुनते ही बालि पुत्र अंगद ने कहा-हे राक्षसराज! सच्ची बात कहो! क्या उस वानर ने सचमुच तुम्हारा नगर जला दिया? रावण जैसे जगविजयी योद्धा का नगर एक छोटे से वानर ने जला दिया। ऐसे वचन सुनकर उन्हें सत्य कौन कहेगा

हे रावण! जिसको तुमने बहुत बड़ा योद्धा कहकर सराहा है, वह तो सुग्रीव का एक छोटा सा दौड़कर चलने वाला हरकारा है। वह बहुत चलता है, वीर नहीं है। उसको तो

हमने केवल खबर लेने के लिए भेजा था। क्या सचमुच ही उस वानर ने प्रभु की आज्ञा पाए बिना ही तुम्हारा नगर जला डाला? मालूम होता है, इसी डर से वह लौटकर सुग्रीव के पास नहीं गया और कहीं छिपा रहा!

हे रावण! तुम सब सत्य ही कहते हो, मुझे सुनकर कुछ भी क्रोध नहीं है। सचमुच हमारी सेना में कोई भी ऐसा नहीं है, जो तुमसे लड़ने में शोभा पाए। प्रीति और वैर बराबरी वाले से ही करना चाहिए, नीति ऐसी ही है। सिंह यदि मेंढकों को मारे, तो क्या उसे कोई भला कहेगा

यद्यपि तुम्हें मारने में श्री रामजी की लघुता है और बड़ा दोष भी है तथापि हे रावण! सुनो, क्षत्रिय जाति का क्रोध बड़ा कठिन होता हैं। वक्रोक्ति रूपी धनुष से वचन रूपी बाण मारकर अंगद ने शत्रु का हृदय जला दिया। वीर रावण उन बाणों को मानो प्रत्युत्तर रूपी सँड़सियों से निकाल रहा है। तब रावण हँसकर बोला- बंदर में यह एक बड़ा गुण है कि जो उसे पालता है, उसका वह अनेकों उपायों से भला करने की चेष्टा करता है। बंदर को धन्य है, जो अपने मालिक के लिए लाज छोड़कर जहाँ-तहाँ नाचता है। नाच-कूदकर, लोगों को रिझाकर, मालिक का हित करता है। यह उसके धर्म की निपुणता है। हे अंगद! तेरी जाति स्वामिभक्त है फिर भला तू अपने मालिक के गुण इस प्रकार कैसे न बखानेगा? मैं गुण ग्राहक गुणों का आदर करने वाला और परम समझदार हूँ, इसी से तेरी जली-कटी बक-बक पर ध्यान नहीं देता।

अंगद ने कहा- तुम्हारी सच्ची गुण ग्राहकता तो मुझे हनुमान्‌ने सुनाई थी। उसने अशोक वन में विध्वंस करके, तुम्हारे पुत्र को मारकर नगर को जला दिया था। तो भी तुमने अपनी गुण ग्राहकता के कारण यही समझा कि उसने तुम्हारा कुछ भी अपकार नहीं किया। तुम्हारा वही सुंदर स्वभाव विचार कर, हे दशग्रीव! मैंने कुछ धृष्टता की है। हनुमान्‌ने जो कुछ कहा था, उसे आकर मैंने प्रत्यक्ष देख लिया कि तुम्हें न लज्जा है, न क्रोध है और न चिढ़ है। (रावण बोला-अरे वानर! जब तेरी ऐसी बुद्धि है, तभी तो तू बाप को खा गया। ऐसा वचन कहकर रावण हँसा। अंगद ने कहा- पिता को खाकर फिर तुमको भी खा डालता, परन्तु अभी तुरंत कुछ और ही बात मेरी समझ में आ गई।

अरे नीच अभिमानी! बालि के निर्मल यश का कारण जानकर तुम्हें मैं नहीं मारता। रावण! यह तो बता कि जगत्‌में कितने रावण हैं? मैंने जितने रावण अपने कानों से सुन रखे हैं, उन्हें सुन एक रावण तो बलि को जीतने पाताल में गया था, तब बच्चों ने उसे घुड़साल में बाँध रखा। बालक खेलते थे और जा-जाकर उसे मारते थे।

बलि को दया लगी, तब उन्होंने उसे छुड़ा दिया फिर एक रावण को सहस्रबाहु ने देखा, और उसने दौड़कर उसको एक विशेष प्रकार के विचित्र जन्तु की तरह समझकर पकड़ लिया। तमाशे के लिए वह उसे घर ले आया। तब पुलस्त्य मुनि ने जाकर उसे छुड़ाया। एक रावण की बात कहने में तो मुझे बड़ा संकोच हो रहा है- वह बहुत दिनों तक बालि की काँख में रहा था। इनमें से तुम कौन से रावण हो? खीझना छोड़कर सच-सच बताओ।

रावण ने कहा-अरे मूर्ख! सुन, मैं वही बलवान्‌रावण हूँ, जिसकी भुजाओं की करामात कैलास पर्वत जानता है। जिसकी शूरता उमापति महादेवजी जानते हैं, जिन्हें अपने सिर रूपी पुष्प चढ़ा-चढ़ाकर मैंने पूजा था। सिर रूपी कमलों को अपने हाथों से उतार-उतारकर मैंने अगणित बार त्रिपुरारि शिवजी की पूजा की है।

अरे मूर्ख! मेरी भुजाओं का पराक्रम दिक्पाल जानते हैं, जिनके हृदय में वह आज भी चुभ रहा है। दिग्गज मेरी छाती की कठोरता को जानते हैं। जिनके भयानक दाँत, जब-जब जाकर मैं उनसे जबरदस्ती भिड़ा, मेरी छाती में कभी नहीं फूटे, बल्कि मेरी छाती से लगते ही वे मूली की तरह टूट गए। जिसके चलते समय पृथ्वी इस प्रकार हिलती है जैसे मतवाले हाथी के चढ़ते समय छोटी नाव! मैं वही जगत प्रसिद्ध प्रतापी रावण हूँ। अरे झूठी बकवास करने वाले! क्या तूने मुझको कानों से कभी सुना। महान प्रतापी और जगत प्रसिद्ध मुझे तू छोटा कहता है और मनुष्य की बड़ाई करता

है? अरे दुष्ट, असभ्य, तुच्छ बंदर! अब मैंने तेरा ज्ञान जान लिया।

रावण के ये वचन सुनकर अंगद क्रोध सहित वचन बोले- अरे नीच अभिमानी! सँभलकर बोल। जिनका फरसा सहस्रबाहु की भुजाओं रूपी अपार वन को जलाने के लिए अग्नि के समान था। जिनके फरसा रूपी समुद्र की तीव्र धारा में अनगिनत राजा अनेकों बार डूब गए, उन परशुरामजी का गर्व जिन्हें देखते ही भाग गया, अरे अभागे दशशीश! वे मनुष्य क्यों कर हैं?,

क्यों रे मूर्ख उद्दण्ड! श्री रामचंद्रजी मनुष्य हैं? कामदेव भी क्या धनुर्धारी है? और गंगाजी क्या नदी हैं? कामधेनु क्या पशु है? और कल्पवृक्ष क्या पेड़ है? अन्न भी क्या दान है? और अमृत क्या रस है? गरुड़जी क्या पक्षी हैं? शेषजी क्या सर्प हैं? अरे रावण! चिंतामणि भी क्या पत्थर है? अरे ओ मूर्ख! सुन, वैकुण्ठ भी क्या लोक है? और श्री रघुनाथजी की अखण्ड भक्ति क्या लाभ है? सेना समेत तेरा मान मथकर, अशोक वन को उजाड़कर, नगर को जलाकर और तेरे पुत्र को मारकर जो लौट गए और तू उनका कुछ भी न बिगाड़ सका क्यों रे दुष्ट! वे हनुमान्‌जी क्या वानर हैं?

अरे रावण! चतुराई छोड़कर सुन। कृपा के समुद्र श्री रघुनाथजी का तू भजन क्यों नहीं करता? अरे दुष्ट! यदि तू श्री रामजी का वैरी हुआ तो तुझे ब्रह्मा और रुद्र भी नहीं बचा सकेंगे।

हे मूढ़! व्यर्थ की डींग न हाँक। श्री रामजी से वैर करने पर तेरा ऐसा हाल होगा कि तेरे सिर समूह श्री रामजी के बाण लगते ही वानरों के आगे पृथ्वी पर पड़ेंगे और रीछ-वानर तेरे उन गेंद के समान अनेकों सिरों से चौगान खेलेंगे। जब श्री रघुनाथजी युद्ध में कोप करेंगे और उनके अत्यंत तीक्ष्ण बहुत से बाण छूटेंगे, तब क्या तेरा गाल चलेगा? ऐसा विचार कर कृपालु श्री रामजी को भज। अंगद के ये वचन सुनकर रावण बहुत अधिक जल उठा। मानो जलती हुई प्रचण्ड अग्नि में घी पड़ गया हो वह बोला- अरे मूर्ख! कुंभकर्ण- ऐसा मेरा भाई है, इन्द्र का शत्रु सुप्रसिद्ध मेघनाद मेरा पुत्र है! और मेरा पराक्रम तो तूने सुना ही नहीं कि मैंने संपूर्ण जड़-चेतन जगत्‌को जीत लिया है!

रे दुष्ट! वानरों की सहायता जोड़कर राम ने समुद्र बाँध लिया, बस, यही उसकी प्रभुता है। समुद्र को तो अनेकों पक्षी भी लाँघ जाते हैं। पर इसी से वे सभी शूरवीर नहीं हो जाते। अरे मूर्ख बंदर! सुन- मेरा एक-एक भुजा रूपी समुद्र बल रूपी जल से पूर्ण है, जिसमें बहुत से शूरवीर देवता और मनुष्य डूब चूके हैं। बता कौन ऐसा शूरवीर है, जो मेरे इन अथाह और अपार बीस समुद्रों का पार पा जाएगा?

अरे दुष्ट! मैंने दिक्पालों तक से जल भरवाया और तू एक राजा का मुझे सुयश सुनाता है! यदि तेरा मालिक, जिसकी गुणगाथा तू बार-बार कह रहा है, संग्राम में लड़ने वाला योद्धा है- तो फिर वह दूत किसलिए भेजता है? शत्रु से प्रीति करते उसे लाज नहीं आती?

पहले कैलास का मथन करने वाली मेरी भुजाओं को देख। फिर अरे मूर्ख वानर! अपने मालिक की सराहना करना। रावण के समान शूरवीर कौन है?

जिसने अपने हाथों से सिर काट-काटकर अत्यंत हर्ष के साथ बहुत बार उन्हें अग्नि में होम दिया! स्वयं गौरीपति शिवजी इस बात के साक्षी हैं।

मस्तकों के जलते समय जब मैंने अपने ललाटों पर लिखे हुए विधाता के अक्षर देखे, तब मनुष्य के हाथ से अपनी मृत्यु होना बाँचकर, विधाता के लेख कोअसत्य जानकर मैं हँसा। उस बात को स्मरण करके भी मेरे मन में डर नहीं है। क्योंकि मैं समझता हूँ कि बूढ़े ब्रह्मा ने बुद्धि भ्रम से ऐसा लिख दिया है। अरे मूर्ख! तू लज्जा और मर्यादा छोड़कर मेरे आगे बार-बार दूसरे वीर का बल कहता है!

अंगद ने कहा- अरे रावण! तेरे समान लज्जावान्‌जगत्‌में कोई नहीं है। लज्जाशीलता तो तेरा सहज स्वभाव ही है। तू अपने मुँह से अपने गुण कभी नहीं कहता।

सिर काटने और कैलास उठाने की कथा चित्त में चढ़ी हुई थी, इससे तूने उसे बीसों बार कहा। भुजाओं के उस बल को तूने हृदय में ही छिपा रखा है, जिससे तूने सहस्रबाहु, बलि और बालि को जीता था।अरे मंद बुद्धि! सुन, अब बस कर। सिर काटने से भी क्या कोई शूरवीर हो जाता है? इंद्रजाल रचने वाले को वीर नहीं कहा जाता,

यद्यपि वह अपने ही हाथों अपना सारा शरीर काट डालता है!।

अरे मंद बुद्धि! समझकर देख। पतंगे मोहवश आग में जल मरते हैं, गदहों के झुंड बोझ लादकर चलते हैं, पर इस कारण वे शूरवीर नहीं कहलाते।

अरे दुष्ट! अब बतबढ़ाव मत कर, मेरा वचन सुन और अभिमान त्याग दे! हे दशमुख! मैं दूत की तरह सन्धि करने नहीं आया हूँ। श्री रघुवीर ने ऐसा विचार कर मुझे भेजा है- कृपालु श्री रामजी बार-बार ऐसा कहते हैं कि स्यार के मारने से सिंह को यश नहीं मिलता। अरे मूर्ख! प्रभु के वचनों को मन में समझकर याद करके ही मैंने तेरे कठोर वचन सहे हैं।

नहीं तो तेरे मुँह तोड़कर मैं सीताजी को जबरदस्ती ले जाता। अरे अधम! देवताओं के शत्रु! तेरा बल तो मैंने तभी जान लिया, जब तू सूने में पराई स्त्री को हर लाया। तू राक्षसों का राजा और बड़ा अभिमानी है, परन्तु मैं तो श्री रघुनाथजी के सेवक सुग्रीव के सेवक का भी सेवक हूँ। यदि मैं श्री रामजी के अपमान से न डरूँ तो तेरे देखते-देखते ऐसा तमाशा करूँ कि- तुझे जमीन पर पटककर, तेरी सेना का संहार कर और तेरे गाँव को नष्ट-भ्रष्ट करके, अरे मूर्ख! तेरी युवती स्त्रियों सहित जानकीजी को ले जाऊँ। यदि ऐसा करूँ, तो भी इसमें कोई बड़ाई नहीं है। मरे हुए को मारने में कुछ भी पुरुषत्व नहीं है। वाममार्गी, कामी, कंजूस, अत्यंत मूढ़, अति दरिद्र, बदनाम, बहुत बूढ़ा, नित्य का रोगी, निरंतर क्रोधयुक्त रहने वाला, भगवान्‌विष्णु से विमुख, वेद और संतों का विरोधी, अपना ही शरीर पोषण करने वाला, पराई निंदा करने वाला और पाप की खान- ये चौदह प्राणी जीते ही मुरदे के समान हैं।

अरे दुष्ट! ऐसा विचार कर मैं तुझे नहीं मारता। अब तू मुझमें क्रोध न पैदा कर। अंगद के वचन सुनकर राक्षस राज रावण दाँतों से होठ काटकर, क्रोधित होकर हाथ मलता हुआ बोला- अरे नीच बंदर! अब तू मरना ही चाहता है! इसी से छोटे मुँह बड़ी बात कहता है।

अरे मूर्ख बंदर! तू जिसके बल पर कड़ुए वचन बक रहा है, उसमें बल, प्रताप, बुद्धि अथवा तेज कुछ भी नहीं है।

उसे गुणहीन और मानहीन समझकर ही तो पिता ने वनवास दे दिया। उसे एक तो उसका दुःख, उस पर युवती स्त्री का विरह और फिर रात-दिन मेरा डर बना रहता है। जिनके बल का तुझे गर्व है, ऐसे अनेकों मनुष्यों को तो राक्षस रात-दिन खाया करते हैं।

अरे मूढ़! जिद्द छोड़कर विचार कर। जब उसने श्री रामजी की निंदा की, तब तो कपिश्रेष्ठ अंगद अत्यंत क्रोधित हुए, क्योंकि शास्त्र ऐसा कहते हैं कि जो अपने कानों से भगवान्‌विष्णु और शिव की निंदा सुनता है, उसे गो वध के समान पाप लगता है।

वानर श्रेष्ठ अंगद बहुत जोर से कटकटाए और उन्होंने तमककर जोर से अपने दोनों भुजदण्डों को पृथ्वी पर दे मारा। तब पृथ्वी हिलने लगी, जिससे बैठे हुए सभासद्‌ गिर पड़े और भय रूपी भूत से ग्रस्त होकर भाग चले।

रावण गिरते-गिरते सँभलकर उठा। उसके अत्यंत सुंदर मुकुट पृथ्वी पर गिर पड़े। कुछ तो उसने उठाकर अपने सिरों पर ठिक कर रख लिए और कुछ अंगद ने उठाकर प्रभु श्री रामचंद्रजी के पास फेंक दिए। मुकुटों को आते देखकर वानर भागे। सोचने लगे विधाता! क्या दिन में ही उल्कापात होने लगा तारे टूटकर गिरने लगे? अथवा क्या रावण ने क्रोध करके चार वज्र चलाए हैं, जो बड़े धाए के साथ वेग से आ रहे हैं?। प्रभु ने उनसे हँसकर कहा- मन में डरो नहीं। ये न उल्का हैं, न वज्र हैं और न केतु या राहु ही हैं। अरे भाई! ये तो रावण के मुकुट हैं, जो बालिपुत्र अंगद के द्वार फेंके हुए आ रहे हैं।

पवन पुत्र श्री हनुमान्‌जी ने उछलकर उनको हाथ से पकड़ लिया और लाकर प्रभु के पास रख दिया। रीछ और वानर तमाशा देखने लगे। उनका प्रकाश सूर्य के समान था।

सभा में क्रोधयुक्त रावण सबसे क्रोधित होकर कहने लगा कि- बंदर को पकड़ लो और पकड़कर मार डालो। अंगद यह सुनकर मुस्कुराने लगे।

रावण फिर बोला-इसे मारकर सब योद्धा तुरंत दौड़ो और जहाँ कहीं रीछ-वानरों को पाओ, वहीं खा डालो। पृथ्वी को बंदरों से रहित कर दो और जाकर दोनों तपस्वी भाइयों राम-लक्ष्मण को जीते जी पकड़ लो।

रावण के ये कोपभरे वचन सुनकर युवराज अंगद क्रोधित होकर बोले- तुझे अपने गाल बजाते लाज नहीं आती! अरे निर्लज्ज! अरे कुलनाशक! गला काटकर आत्महत्या करके मर जा! मेरा बल देखकर भी क्या तेरी छाती नहीं फटती!।

अरे स्त्री के चोर! अरे कुमार्ग पर चलने वाले! अरे दुष्ट, पाप की राशि, मन्द बुद्धि और कामी! तू सन्निपात में क्या दुर्वचन बक रहा है? अरे दुष्ट राक्षस! तू काल के वश हो गया है!

इसका फल तू आगे वानर और भालुओं के चपेटे लगने पर पावेगा। राम मनुष्य हैं, ऐसा वचन बोलते ही, अरे अभिमानी! तेरी जीभें नहीं गिर पड़तीं?॥4॥

इसमें संदेह नहीं है कि तेरी जीभें अकेले नहीं पर तेरे सिरों के साथ रणभूमि में गिरेंगी।

रे दशकन्ध! जिसने एक ही बाण से बालि को मार डाला, वह मनुष्य कैसे है? अरे कुजाति, अरे जड़! बीस आँखें होने पर भी तू अंधा है। तेरे जन्म को धिक्कार है। श्री रामचंद्रजी के बाण समूह तेरे रक्त की प्यास से प्यासे हैं। वे प्यासे ही रह जाएँगे इस डर से, अरे कड़वी बकवाद करने वाले नीच राक्षस! मैं तुझे छोड़ता हूँ। मैं तेरे दाँत तोड़ने में समर्थ हूँ। पर क्या करूँ? श्री रघुनाथजी ने मुझे आज्ञा नहीं दी। ऐसा क्रोध आता है कि तेरे दसों मुँह तोड़ डालूँ और तेरी लंका को पकड़कर समुद्र में डुबो दूँ। तेरी लंका गूलर के फल के समान है। तुम सब कीड़े उसके भीतर निडर होकर बस रहे हो। मैं बंदर हूँ, मुझे इस फल को खाते क्या देर थी? पर कृपालु श्री रामचंद्रजी ने वैसी आज्ञा नहीं दी।

अंगद की युक्ति सुनकर रावण मुस्कुराया और बोला-अरे मूर्ख! बहुत झूठ बोलना तूने कहाँ से सीखा? बालि ने तो कभी ऐसा गाल नहीं मारा। जान पड़ता है तू तपस्वियों से मिलकर लबार हो गया है।

अंगद ने कहा-अरे बीस भुजा वाले! यदि तेरी दसों जीभें मैंने नहीं उखाड़ लीं तो सचमुच मैं लबार ही हूँ। श्री रामचंद्रजी के प्रताप को स्मरण करके अंगद क्रोधित हो उठे और उन्होंने रावण की सभा में प्रण करके दृढ़ता के साथ पैर जमा दिया। और कहा-अरे मूर्ख! यदि तू मेरा चरण हटा सके तो श्री रामजी लौट जाएँगे, मैं सीताजी को हार गया। रावण ने कहा- हे सब वीरो! सुनो, पैर पकड़कर बंदर को पृथ्वी पर पछाड़ दो।

इंद्रजीत, मेघनाद आदि अनेकों बलवान्योद्धा जहाँ-तहाँ से हर्षित होकर उठे। वे पूरे बल से बहुत से उपाय करके झपटते हैं। पर पैर टलता नहीं, तब सिर नीचा करके फिर अपने-अपने स्थान पर जा बैठ जाते हैं। काकभुशुण्डिजी कहते हैं- वे देवताओं के शत्रु राक्षस फिर उठकर झपटते हैं, परन्तु हे सर्पों के शत्रु गरुड़जी! अंगद का चरण उनसे वैसे ही नहीं टलता जैसे कुयोगी पुरुष मोह रूपी वृक्ष को नहीं उखाड़ सकते।

करोड़ों वीर योद्धा जो बल में मेघनाद के समान थे, हर्षित होकर उठे, वे बार-बार झपटते हैं, पर वानर का चरण नहीं उठता, तब लज्जा के मारे सिर नवाकर बैठ जाते हैं।

जैसे करोड़ों विघ्न आने पर भी संत का मन नीति को नहीं छोड़ता, वैसे ही अंगद का चरण पृथ्वी को नहीं छोड़ता। यह देखकर रावण का मद दूर हो गया!।

अंगद का बल देखकर सब हृदय में हार गए। तब अंगद के ललकारने पर रावण स्वयं उठा। जब वह अंगद का चरण पकड़ने लगा, तब बालि कुमार अंगद ने कहा- मेरा चरण पकड़ने से तेरा बचाव नहीं होगा। अरे मूर्ख- तू जाकर श्री रामजी के चरण क्यों नहीं पकड़ता? यह सुनकर रावण मन में बहुत ही सकुचाकर लौट गया। उसकी सारी श्री जाती रही। वह ऐसा तेजहीन हो गया जैसे मध्याह्न में चंद्रमा दिखाई देता है।

वह सिर नीचा करके सिंहासन पर जा बैठा। मानो सारी सम्पत्ति गँवाकर बैठा हो। श्री रामचंद्रजी जगत्भर के आत्मा और प्राणों के स्वामी हैं। उनसे विमुख रहने वाला शांति कैसे पा सकता है?

शिवजी कहते हैं-हे उमा! जिन श्री रामचंद्रजी के भौंह के इशारे से विश्व उत्पन्न होता है और फिर नाश को प्राप्त होता है, जो तृण को वज्र और वज्र को तृण बना देते हैं अत्यंत निर्बल को महान्प्रबल और महान्प्रबल को अत्यंत निर्बल कर देते हैं, उनके दूत का प्रण कहो, कैसे टल सकता है?।

फिर अंगद ने अनेकों प्रकार से नीति कही। पर रावण नहीं माना, क्योंकि उसका काल निकट आ गया

था। शत्रु के गर्व को चूर करके अंगद ने उसको प्रभु श्री रामचंद्रजी का सुयश सुनाया और फिर वह राजा बालि का पुत्र यह कहकर चल दिया- रणभूमि में तुझे खेला-खेलाकर न मारूँ तब तक अभी पहले से क्या बड़ाई करूँ।

अंगद ने पहले ही सभा में आने से पूर्व ही उसके पुत्र को मार डाला था। वह संवाद सुनकर रावण दुःखी हो गया। अंगद का प्रण देखकर सब राक्षस भय से अत्यन्त ही व्याकुल हो गए। शत्रु के बल का मर्दन कर, बल की राशि बालि पुत्र अंगदजी ने हर्षित होकर आकर श्री रामचंद्रजी के चरणकमल पकड़ लिए। उनका शरीर पुलकित है और नेत्रों में आनंदाश्रुओं का जल भरा है।

श्री राम के सिद्धमंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

अपनी आवश्यक्ता के अनुशारउपरोक्त मंत्र का नियमित जाप करने से लाभ प्ताप्त होता हैं। श्री रामचरित मानस मे गहरी आस्था रखने वाले व्यक्ति को विशेष एवं शीघ्र लाभ प्राप्त होता हैं।

विपत्ति नाश हेतु

मंत्र :-

राजिव नयन धरें धनु सायक।
भगत बिपति भंजन सुखदायक॥

संकट नाश हेतु

मंत्र :-

जौं प्रभु दीन दयालु कहावा।
आरति हरन बेद जसु गावा॥
जपहिं नामु जन आरत भारी।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी॥
दीन दयाल बिरिदु संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

क्लेश निवारण हेतु

मंत्र :-

हरन कठिन कलि कलुष कलेसू।
महामोह निसि दलन दिनेसू॥

विघ्न नाश हेतु

मंत्र :-

सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही।
राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही॥

आपत्ति के विनाश हेतु

मंत्र :-

प्रनवउँ पवन कुमार,खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदयँ आगार, बसहिं राम सर चाप धर॥

नजर झाड़ने हेतु

मंत्र :-

स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी।
निरखहिं छबि जननीं तृन तोरी॥

विष प्रभाव नाश हेतु

मंत्र :-

नाम प्रभाउ जान सिव नीको।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को॥

चिन्ता निवारण हेतु

मंत्र :-

जय रघुवंश बनज बन भानू।
गहन दनुज कुल दहन कृशानू॥

मस्तिष्क पीड़ा निवारण हेतु

मंत्र :-

हनूमान अंगद रन गाजे।
हाँक सुनत रजनीचर भाजे॥

रोगों निवारण एवं उपद्रव शांति हेतु

मंत्र :-

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज काहूहिं नहि ब्यापा॥

अकाल मृत्यु भय निवारण हेतु

मंत्र :-

नाम पाहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहि बाट॥

दरिद्रता निवारण हेतु

मंत्र :-

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद धन दारिद दवारि के॥

विद्या प्राप्ति हेतु

मंत्र :-

गुरु गृहँ गए पढ़न रघुराई।
अलप काल विद्या सब आई॥

ज्ञान-प्राप्ति हेतु

मंत्र :-

छिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित अति अधम सरीरा॥

शिक्षा में सफ़लता हेतु

मंत्र :-

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी।
कबि उर अजिर नचावहिं बानी॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती।
जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती॥

आजीविका प्राप्ति हेतु

मंत्र :-

बिस्व भरण पोषन कर जोई।
ताकर नाम भरत जस होई॥

शीघ्र विवाह हेतु

मंत्र :-

तब जनक पाइ वशिष्ठ आयसु ब्याह साजि सँवारि कै।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला, कुँअरि लई हँकारि कै॥

यात्रा में सफ़लता हेतु

मंत्र :-

प्रबिसि नगर कीजै सब काजा।
हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥

पुत्र प्राप्ति हेतु

मंत्र :-

प्रेम मगन कौसल्या निसिदिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान॥

सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु

मंत्र :-

जे सकाम नर सुनहि जे गावहि।
सुख संपत्ति नाना विधि पावहि॥

ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करने हेतु

मंत्र :-

साधक नाम जपहिं लय लाएँ।
होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ॥

सर्व प्रकार के सुख प्राप्ति हेतु

मंत्र :-

सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई।
लहहिं भगति गति संपति नई॥

मनोरथ सिद्धि हेतु

मंत्र :-

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥

कुशलता हेतु

मंत्र :-

भुवन चारिदस भरा उछाहू। जनकसुता रघुबीर बिआहू॥

मनोरथ सिद्धि हेतु

मंत्र :-

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥

कुशलता हेतु

मंत्र :-

भुवन चारिदस भरा उछाहू। जनकसुता रघुबीर बिआहू॥

खोयी हुई वस्तु पुनः प्राप्त करने हेतु

मंत्र :-

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू॥

मुकदमें में विजय प्ताप्ति हेतु

मंत्र :-

पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥

शत्रु को मित्र बनाने हेतु

मंत्र :-

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई।
गोपद सिंधु अनल सितलाई॥

शत्रुता नाश हेतु

मंत्र :-

बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई॥

खोयी हुई वस्तु पुनः प्राप्त करने हेतु

मंत्र :-

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू॥

मोक्ष-प्राप्ति हेतु

मंत्र :-

सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा। काल सर्प जनु चले सपच्छा॥

आकर्षण हेतु

मंत्र :-

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू॥

परस्पर प्रेम बढाने हेतु

मंत्र :-

सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

विचारो की शुद्धि हेतु

मंत्र :-

ताके जुग पद कमल मनाउँ।
जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ॥

भक्ति भाव उजागर हेतु

मंत्र :-

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपासिंधु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम॥

***

राम एवं हनुमान मंत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

राम गायत्री मंत्र:

ॐ दाशरथये विद्महे जानकी वल्लभाय धी महि॥

तन्नो रामः प्रचोदयात्॥

श्री राम मूल मंत्र:

ॐ ह्रां ह्रीं रां रामाय नमः॥

श्री राम तारक मंत्र:

ॐ जानकीकांत तारक रां रामाय नमः॥

राम मंत्र

रां रामय नमः।

फल: छः लाख मंत्र जप करने से यह मंत्र सिद्धि होता हैं और इस्से साधक की राम में भक्ति दृढ़ होती हैं।

भगवान राम का मंत्र:

ॐ रामाय नमः।

दशाक्षर राम मंत्र:

हुं जानकी वल्लभाय स्वाहा।

फल: यह मंत्र दस लाख जपने से सिद्ध होत हैं और यह मंत्र सभी प्रकार से साधक को सफलता एवं् मोक्ष प्रदान करने में सहायक हैं।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे हरे।

हरे राम हरे राम, राम-राम हरे हरे।

इस मंत्र को नियमित स्नान इत्यादि से निवृत होकर स्वच्छ कपडे पहन कर 108 बार जाप करने से व्यक्ति को जीवन मे समस्त भौतिक सुखो एवं मोक्ष प्राप्ति होती हैं।

हनुमत् गायत्री मंत्र:

ॐ अंजनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धी महि॥

तन्नो हनुमान प्रचोदयात्॥

श्री हनुमान मूल मंत्र:

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रैं ह्रौं ह्रः॥

द्वादशाक्षर हनुमान मंत्र:

हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट्।

फल: से इस मंत्र के बारे शास्त्रो में वर्णित हैं की यह मंत्र स्वतंत शिवजी ने श्रीकृष्ण को बताया और श्रीकृष्ण नें यह मंत्र अर्जुन को सिद्ध करवाया था जिस्से अर्जुन ने चर-अचर जगत् को जीत लिया था।

सीता जी को श्राप के फल से वनवास हुवा?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पद्म पुराण में वर्णित कथा इस प्रकार हैं।

एक समय की बात हैं राजा जनक की पुत्री सीता अपनी किशोर अवस्था में जानकी अपनी सखियों के साथ मिथिलानगरी के अपने उद्यान में खेल रही थी। सखियों के साथ खेलते-खेलते उनकी दृष्टि एक पेड पर बैठे हुए एक शुक पक्षी के जोडे पर पडी जो मनुष्यों की तरह बाते कर रहे थे। जानकी को दोनो पक्षी की बाते सुन कर हैरानी हुई। जानकी को उनकी बाते सुनने की उत्सुकता हुई और वहं उनकी बाते सुनने के लिये पेड़ के नीचे पहुंच गई।

दोनो पक्षी भगवान श्री राम और सीता (जानकी) के विषय में वार्तालाप कर रहे थे। दोनो बाते कर रहे थे की एक समय आयेगा जब पृथ्वी पर श्री राम नाम से प्रसिद्ध राजा होंगे। वह राजा अत्यंत तेजस्वी और सुंदर होंगे। श्री राम का विवाह परम सुंदरी राजा जनक की सुपुत्री जानकी से होगा और जानकी उनकी महारानी बन कर सीता के नाम से जगत में विख्यात होगी। भगवान श्री रामचंद्रजी बड़े बुद्धिमान, कर्तव्य निष्ठ एवं महाबलवान होंगे जो समस्त राजाओं को वश में रखते हुए अपनी पत्नी सीता के साथ ग्यारह हजार वर्षों तक राज्य करेंगे।

दोनो पक्षीओं के मुख से स्वयंके व श्रीरामजी के बारे में इतनी बाते सुनते ही जानकी से और रहा नहीं गया, उन्हों ने सोचा की यह दोनो पक्षी मेरे बारे में और भी बहुत कुछ जानते होंगे। यही विचार कर कर जानकी ने अपनी सखियों से कहाः कुछ भी करके इन पक्षियों को पकड़ लाओ। जानकी ने अपनी सखियों की सहायता से शुक पक्षी जे जोडे को पकड़ लिया।

उन्होंने दोनो पक्षियों से कहाः तुम दोनों डरो नहीं। बताओ, तुम कौन हो ? श्री राम कौन हैं और सीता कौन हैं? तुम यह बातें कैसे जानते हों? तुम कहां से आये हो? जानकीजी के प्रेमपूर्वक पूछने पर उन पक्षियों ने बताया, "देवि ! हम दोनो पति-पत्नी हैं। हम महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में रहते हैं। वे त्रिकालज्ञानी हैं। महर्षि ने रामायण नामक एक महाग्रंथ बनाया है। उन्होंने अपने शिष्यो को जो अध्ययन कराया, उसकी कथा मन को बड़ी प्रिय लगती है। इस लिये उसे हम दोनों ने भी सुनकर याद कर लिया।

जानकीजी ने पुनः पुछा तब हमें आगे और बताओ की ये राम कौन हैं? उनका विवाह सीता से कैसे होगा? आदि-आदि। जानकी ने उत्साहपूर्वक पुछा। शुकी ने आगे बाताया, भगवान विष्णु अपने तेज से चार अंश में प्रकट होंगे। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के रूप में वे अवधपुरी में अवतरि होंगे। राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम अपने अनुज एवं गुरु विश्वामित्र के साथ मिथिला में धनुष यज्ञ में आयेंगे। जब कोई धनुष उठा नहीं सकेगा तब अपने गुरु विश्वामित्र की आज्ञा पाकर श्रीराम धनुष को क्षण भर में उठाकर उसे तोड देंगे। उसी समय जनक की अत्यंत मनोहर रुपवती पुत्री सीता का विवाह श्रीरामजी से होगा। इतना कहते शुकी ने कहा, अब छोड दो हमें जाना हैं।

जानकी होली नहीं-नहीं अभी नहीं। जानकीजी ने पुनः पूछाः श्रीरामजी देखने में कैसे होंगे? उनके गुणों का वर्णन करो। तुम्हारी बातें मुझे बड़ी प्रिय लग रही हैं। शुकी बोली श्री राम विशाल बांहो बाले, कमल जैसे मुख जैसे नेत्र वाले, नासिका ऊचीं, पलती महोहारिणी होगी। उनका गला शंख के समान सुशोभित छोटा होगा। श्रीराम अपनी शांत, सौम्य दृष्टि से जिस पर भी डालेंगे, उसका चित्त प्रसन्न और उनकी तरफ आकर्षित हो जाये एसा व्यक्तित्व होगा। श्रीरामजी सब प्रकार के ऐश्वर्यमय गुणों से युक्त होंगे। श्रीराम के सौदर्य का वर्णन सौ मुखो से करना असंभव हैं। हम तो असमर्थ हैं, पक्षी जो हैं। शुकी ने प्रश्न किया देवी आप कौन हों जो इतनी उत्सुकता से श्रीराम के बारे में प्रश्न करती जा रही हैं और मुझे छोड नहीं रही हैं।

शुकी के प्रश्न का उत्तर देते हुए जानकी ने कहां तुम जिस जानकी सीता की बात कर रही हो, वह जनककुमारी मै ही हुं। तुम श्री राम की बातें बता रही हो, अब वे जब यहां आकर मुझे स्वीकार करेंगे तभी मैं तुम दोनों को मुक्त करुंगी, अन्यथा नहीं। तब तक तुम दोनो इच्छानुसार क्रीड़ा करते हुए मेरे महल में सुख से रहो और मीठे-मीठे पदार्थों का सेवन करो।

शुकी बोली, नहीं-नहीं देवी ऎसा मत करना। हम वन के पक्षी हैं। पेड़ों पर रहते हैं और सर्वत्र विचरण करते रहते हैं। हमें आपके महल में सुख नहीं मिलेगा। मैं गर्भिनी हूँ। मुझे जाना हैं, अभी वाल्मीकि जी के आश्रम में अपने स्थान पर जाकर बच्चों को जन्म देकर पुनः आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊंगी।

शुकी के पति शुक नें भी जानकी से विनति की कि उन्हें जाने दिया जाए। लेकिन जानकी ने उन पक्षीओं की बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। जानकी ने शुक से कहां कुछ भी हो, शुक तुम जा सकते हो। किंतु मैं शुकी को नहीं छोड़ुँगी।

शुक बोला मैं इसके बिना नहीं रह सकूंगा। अतः इसे छोड दो। शुक नें पुनः तडपते हुए विनती की आप मेरी प्रार्थना मानलो।

शुकी ने पुनः जानकी से कहा, जानकी, तुम मुझे नहीं छोडोगी तो मुझे क्रोध आ जयेगा।

इस पर जानकी बोली, मै तेरे क्रोध से डरने वाली नहीं। दोनों बहुत रोये-गिड़गिड़ाये किंतु जानकी उन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुईं।

शुकी बोली मैं महर्षि के आश्रम में रहती हूं इसलिए तुम्हें श्राप दे सकती हूं। शुकीने कडे शब्दों में चेतावनी दी।

जानकी नें हस्ते हुए उपेक्षा भाव से कहा मुझे डराती-धमकाती हैं। जा, मै, तुझे अब कतई नहीं छोडने वाली।

शुकी बोली अरे बावली! तू जिस प्रकार मुझ गर्भिणी को अपने पति से विलग कर रही हैं। वैसे ही तुझे भी गर्भावस्था में अपने पति श्रीराम से अलग रहना पड़ेगा। यह कहते हुएं पति वियोग के शोक से शुकी ने प्राण त्याग दिए।

शुक भी पत्नी वियोग से शोकाकुल हो उठा उसका ह्रदय पीडा व शोक के कारण फटने लगा। शुक ने कातर स्वर में सीता को लक्ष्य करते हुए बोलाः मैं मनुष्यों से भरी श्री रामजी की नगरी अयोध्या में जन्म लूँगा तथा प्रतिशोध लूंगा और मैं ऐसी अफवाह पैदा करूँगा कि प्रजा गुमराह हो जायेगी और प्रजापालक श्रीरामजी प्रजा का मान रखने के लिए तुम्हारा त्याग कर देंगे और तुम्हें अपने पति से वियोग सहना पड़ेगा और भारी दुख उढाना पडेगा।

क्रोध और जानकी से प्रतिशो लेने केलिये शुक का धोबी के घर जन्म हुआ। उस धोबी के कथन से ही सीता जी निंदित हुई और गर्भिणी अवस्था में उन्हें पति से अलग होकर वन में जाना पड़ा। कर्म का फल तो देव-असुर मानव हर किसी को भी भोगना पड़ता है। इसी से विदित होता है कि कर्म फल ही केवलम्।

रामरक्षा स्तोत्र

अस्य श्रीरामरक्षा स्तोत्र मन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः।
श्री सीतारामचंद्रो देवता । अनुष्टुप्छंदः। सीता शक्तिः।
श्रीमान हनुमान्कीलकम्। श्री सीतारामचंद्रप्रीत्यर्थे
रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः ।

अथ ध्यानम्:

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामांकारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं
नीरदाभं नानालंकार दीप्तं दधतमुरुजटामंडलं रामचंद्रम ।
चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥१॥
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमंडितम्॥२॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरांतकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम्॥३॥
रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥४॥
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥५॥
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवंदितः ।
स्कंधौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥६॥
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥७॥
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
उरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत्॥८॥
जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥९॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥१०॥
पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न दृष्टुमति शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥११॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥१२॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥१३॥
वज्रपंजरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमंगलम्॥१४॥
आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥१५॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः ॥१६॥
तरुणौ रूप सम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥१७॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥१८॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥१९॥
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतःपथि सदैव गच्छताम्॥२०॥
सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन्मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः ॥२१॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥२२॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥२३॥
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयाऽन्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥२४॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥२५॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्॥२६॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥२७॥
श्रीरामरामरघुनन्दनराम राम श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीरामरामरणकर्कशरामराम श्रीरामरामशरणं भव राम राम ॥२८॥
श्रीरामचन्द्रचरणौमनसास्मरामि श्रीरामचन्द्रचरणौवचंसागृणामि।

श्रीरामचन्द्रचरणौशिरसानमामिश्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये॥२९॥

मातारामोमत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।

सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयलुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥३०॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा ।

पुरतो मारुतिर्यस्य तं वंदे रघुनन्दनम्॥३१॥

लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम ।

कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचंद्रं शरणं प्रपद्ये ॥३२॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥३३॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।

आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥३४॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।

लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥३५॥

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।

तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम्॥३६॥

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रामेशं भजे

रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।

रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं

रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥३७॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।

सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥३८॥

॥ श्री बुधकौशिक विरचितम् श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्ण ॥

अथ श्री रामस्तोत्र

कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां
पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि परमपदप्राप्तये प्रस्थितस्य ।
विश्रामस्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानां
बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम ॥

रामाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं सीतापतिं
रघुकुलान्वयरत्नदीपम् ।
आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं रामं निशाचरविनाशकरं
नमामि ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे मध्ये पुष्पकमासने
मणिमये वीरासने सुस्थितम् ।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं व्याख्यान्तं
भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥

श्रीरामो रामभद्रश्च रामचन्द्रश्च शाश्वतः ।
राजीवलोचनः श्रीमान् राजेन्द्रो रघुपुङ्गवः ॥१॥

जानकीवल्लभो जैत्रो जितामित्रो जनार्दनः ।
विश्वामित्रप्रियो दान्तः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥२॥

वालिप्रमथनो वाग्मी सत्यवाक् सत्यविक्रमः ।
सत्यव्रतो व्रतधरः सदा हनुमदाश्रितः ॥३॥

कौसलेयः खरध्वंसी विराधवधपण्डितः ।
विभीषणपरित्राता हरकोदण्डखण्डनः ॥४॥

सप्ततालप्रभेत्ता च दशग्रीवशिरोहरः ।
जामदग्न्यमहादर्पदलनस्ताटकान्तकः ॥५॥

वेदान्तसारो वेदात्मा भवरोगस्य भेषजम् ।
दूषणत्रिशिरो हन्ता त्रिमूर्तिस्त्रिगुणात्मकः ॥६॥

त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा पुण्यचारित्रकीर्तनः ।
त्रिलोकरक्षको धन्वी दण्डकारण्यपावनः ॥७॥

अहल्याशापशमनः पितृभक्तो वरप्रदः ।
जितेन्द्रियो जितक्रोधो जितामित्रो जगद्गुरुः ॥८॥

ऋक्षवानरसंघाती चित्रकूटसमाश्रयः ।
जयन्तत्राणवरदः सुमित्रापुत्रसेवितः ॥९॥

सर्वदेवादिदेवश्च मृतवानरजीवनः ।
मायामारीचहन्ता च महादेवो महाभुजः ॥१०॥

सर्वदेवस्तुतः सौम्यो ब्रह्मण्यो मुनिसंस्तुतः ।
महायोगी महोदारः सुग्रीवेप्सितराज्यदः ॥११॥

सर्वपुण्याधिकफलः स्मृतसर्वाघनाशनः ।
आदिदेवो महादेवो महापूरुष एव च ॥१२॥

पुण्योदयो दयासारः पुराणपुरुषोत्तमः ।
स्मितवक्त्रो मिताभाषी पूर्वभाषी च राघवः ॥१३॥

अनन्तगुणगम्भीरो धीरोदात्तगुणोत्तमः ।
मायामानुषचारित्रो महादेवादिपूजितः ॥१४॥

सेतुकृज्जितवारीशः सर्वतीर्थमयो हरिः ।
श्यामाङ्गः सुन्दरः शूरः पीतवासा धनुर्धरः ॥१५॥

सर्वयज्ञाधिपो यज्वा जरामरणवर्जितः ।
शिवलिङ्गप्रतिष्ठाता सर्वावगुणवर्जितः ॥१६॥

परमात्मा परं ब्रह्म सच्चिदानन्दविग्रहः ।
परं ज्योतिः परंधाम पराकाशः परात्परः ॥१७॥

परेशः पारगः पारः सर्वदेवात्मकः परः ॥

राम सहस्रनाम स्तोत्रम्

राजीवलोचनः श्रीमान् श्रीरामो रघुपुङ्गवः ।
रामभद्रः सदाचारो राजेन्द्रो जानकीपतिः ॥१॥
अग्रगण्यो वरेण्यश्च वरदः परमेश्वरः ।
जनार्दनो जितामित्रः परार्थैकप्रयोजनः ॥२॥
विश्वामित्रप्रियो दान्तश्शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
सर्वज्ञः सर्वदेवादिः शरण्यो वालिमर्दनः ॥३॥
ज्ञानभाव्योऽपरिच्छेद्योवाग्मीसत्यव्रतः शुचिः ।
ज्ञानगम्यो दृढप्रज्ञः खरध्वंसी प्रतापवान् ॥४॥
द्युतिमानात्मवान् वीरो जितक्रोधोऽरिमर्दनः ।
विश्वरूपो विशालाक्षः प्रभुः परिवृढो दृढः ॥५॥

ईशः खड्गधरः श्रीमान् कौसलेयोऽनसूयकः ।
विपुलांसो महोरस्कः परमेष्ठी परायणः ॥६॥
सत्यव्रतः सत्यसंधो गुरुः परमधार्मिकः ।
लोकज्ञो लोकवन्द्यश्च लोकात्मालोककृत्परः ॥७॥
अनादिर्भगवान् सेव्यो जितमायो रघूद्वहः ।
रामो दयाकरो दक्षः सर्वज्ञः सर्वपावनः ॥८॥
ब्रह्मण्यो नीतिमान् गोप्ता सर्वदेवमयो हरिः ।
सुन्दरः पीतवासाश्च सूत्रकारः पुरातनः ॥९॥
सौम्यो महर्षिः कोदण्डी सर्वज्ञः सर्वकोविदः ।
कविः सुग्रीववरदः सर्वपुण्याधिकप्रदः ॥१०॥

भव्यो जितारिषड्वर्गो महोदरोऽघनाशनः ।
सुकीर्तिरादिपुरुषः कान्तः पुण्यकृतागमः ॥११॥
अकल्मषश्चतुर्बाहुः सर्वावासो दुरासदः ।
स्मितभाषी निवृत्तात्मा स्मृतिमान् वीर्यवान् प्रभुः ॥१२॥
धीरो दान्तो घनश्यामः सर्वायुधविशारदः ।
अध्यात्मयोगनिलयः सुमना लक्ष्मणाग्रजः ॥१३॥
सर्वतीर्थमयश्शूरः सर्वयज्ञफलप्रदः ।
यज्ञस्वरूपी यज्ञेशो जरामरणवर्जितः ॥१४॥
वर्णाश्रमकरो वर्णी शत्रुजित् पुरुषोत्तमः ।
विभीषणप्रतिष्ठाता परमात्मा परात्परः ॥१५॥

प्रमाणभूतो दुर्ज्ञेयः पूर्णः परपुरंजयः ।
अनन्तदृष्टिरानन्दो धनुर्वेदो धनुर्धरः ॥१६॥
गुणाकरो गुणश्रेष्ठः सच्चिदानन्दविग्रहः ।
अभिवन्द्यो महाकायो विश्वकर्मा विशारदः ॥१७॥
विनीतात्मा वीतरागः तपस्वीशो जनेश्वरः ।
कल्याणप्रकृतिः कल्पः सर्वेशः सर्वकामदः ॥१८॥
अक्षयः पुरुषः साक्षी केशवः पुरुषोत्तमः ।
लोकाध्यक्षो महामायो विभीषणवरप्रदः ॥१९॥
आनन्दविग्रहो ज्योतिर्हनुमत्प्रभुरव्ययः ।
भ्राजिष्णुः सहनो भोक्ता सत्यवादी बहुश्रुतः ॥२०॥

सुखदः कारणं कर्ता भवबन्धविमोचनः ।
देवचूडामणिर्नेता ब्रह्मण्यो ब्रह्मवर्धनः ॥२१॥
संसारोत्तारको रामः सर्वदुःखविमोक्षकृत् ।
विद्वत्तमो विश्वकर्ता विश्वहर्ता च विश्वकृत् ॥२२॥
नित्योनियतकल्याणः सीताशोकविनाशकृत् ।
काकुत्स्थः पुण्डरीकाक्षो विश्वामित्रभयापहः ॥२३॥
मारीचमथनो रामो विराधवधपण्डितः ।
दुस्स्वप्ननाशनो रम्यः किरीटी त्रिदशाधिपः ॥२४॥
महाधनुर्महाकायो भीमो भीमपराक्रमः ।
तत्त्वस्वरूपी तत्त्वज्ञः तत्त्ववादी सुविक्रमः ॥२५॥

भूतात्मा भूतकृत्स्वामी कालज्ञानी महापटुः ।
अनिर्विण्णो गुणग्राही निष्कलङ्कः कलङ्कहा ॥२६॥
स्वभावभद्रश्शत्रुघ्नः केशवः स्थाणुरीश्वरः ।
भूतादिः शम्भुरादित्यः स्थविष्ठश्शाश्वतोध्रुवः ॥२७॥
कवची कुण्डली चक्री खड्गी भक्तजनप्रियः ।
अमृत्युर्जन्मरहितः सर्वजित्सर्वगोचरः ॥२८॥
अनुत्तमोऽप्रमेयात्मा सर्वादिर्गुणसागरः ।
समः समात्मा समगो जटामुकुटमण्डितः ॥२९॥
अजेयः सर्वभूतात्मा विष्वक्सेनो महातपाः ।
लोकाध्यक्षो महाबाहुरमृतो वेदवित्तमः ॥३०॥

सहिष्णुः सद्गतिः शास्ता विश्वयोनिर्महाद्युतिः ।
अतीन्द्र ऊर्जितः प्रांशुरुपेन्द्रो वामनो बली ॥३१॥
धनुर्वेदो विधाता च ब्रह्मा विष्णुश्च शंकरः ।
हंसो मरीचिर्गोविन्दो रत्नगर्भो महामतिः ॥३२॥
व्यासो वाचस्पतिः सर्वदर्पितासुरमर्दनः ।
जानकीवल्लभः पूज्यः प्रकटः प्रीतिवर्धनः ॥३३॥

सम्भवोऽतीन्द्रियोवेद्योऽनिर्देशोजाम्बवत्प्रभुः ।
मदनो मथनो व्यापी विश्वरूपो निरञ्जनः ॥३४॥
नारायणोऽग्रणीः साधुर्जटायुप्रीतिवर्धनः ।
नैकरूपो जगन्नाथः सुरकार्यहितः स्वभूः ॥३५॥

जितक्रोधो जितारातिः प्लवगाधिपराज्यदः ।
वसुदः सुभुजो नैकमायो भव्यप्रमोदनः ॥३६॥
चण्डांशुः सिद्धिदः कल्पः शरणागतवत्सलः ।
अगदो रोगहर्ता च मन्त्रज्ञो मन्त्रभावनः ॥३७॥
सौमित्रिवत्सलो धुर्यो व्यक्ताव्यक्तस्वरूपधृक् ।
वसिष्ठो ग्रामणीः श्रीमाननुकूलः प्रियंवदः ॥३८॥
अतुलः सात्त्विको धीरः शरासनविशारदः ।
ज्येष्ठः सर्वगुणोपेतः शक्तिमांस्ताटकान्तकः ॥३९॥
वैकुण्ठः प्राणिनां प्राणः कमठः कमलापतिः ।
गोवर्धनधरो मत्स्यरूपः कारुण्यसागरः ॥४०॥

कुम्भकर्णप्रभेत्ता च गोपिगोपालसंवृतः ।
मायावी व्यापको व्यापी रैणुकेयबलापहः ॥४१॥
पिनाकमथनो वन्द्यः समर्थो गरुडध्वजः ।
लोकत्रयाश्रयो लोकचरितो भरताग्रजः ॥४२॥
श्रीधरः सद्गतिर्लोकसाक्षी नारायणो बुधः ।
मनोवेगी मनोरूपी पूर्णः पुरुषपुङ्गवः ॥४३॥
यदुश्रेष्ठो यदुपतिर्भूतावासः सुविक्रमः ।
तेजोधरो धराधारश्चतुर्मूर्तिर्महानिधिः ॥४४॥
चाणूरमर्दनो दिव्यश्शान्तो भरतवन्दितः ।
शब्दातिगो गभीरात्मा कोमलाङ्गः प्रजागरः ॥४५॥

लोकगर्भश्शेषशायी क्षीराब्धिनिलयोऽमलः ।
आत्मयोनिरदीनात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥४६॥
अमृतांशुर्महागर्भो निवृत्तविषयस्पृहः ।
त्रिकालज्ञो मुनिस्साक्षी विहायसगतिः कृती ॥४७॥
पर्जन्यः कुमुदो भूतावासः कमललोचनः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासो वीरहा लक्ष्मणाग्रजः ॥४८॥
लोकाभिरामो लोकारिमर्दनः सेवकप्रियः ।
सनातनतमो मेघश्यामलो राक्षसान्तकृत् ॥४९॥
दिव्यायुधधरः श्रीमानप्रमेयो जितेन्द्रियः ।
भूदेववन्द्यो जनकप्रियकृत्प्रपितामहः ॥५०॥

उत्तमः सात्विकः सत्यः सत्यसंधस्त्रिविक्रमः ।
सुव्रतः सुलभः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुधीः ॥५१॥
दामोदरोऽच्युतश्शार्ङ्गी वामनो मधुराधिपः ।
देवकीनन्दनः शौरिः शूरः कैटभमर्दनः ॥५२॥
सप्ततालप्रभेत्ता च मित्रवंशप्रवर्धनः ।
कालस्वरूपी कालात्माकालः कल्याणदःकविः
संवत्सर ऋतुः पक्षो ह्ययनं दिवसो युगः ॥५३॥
स्तव्यो विविक्तो निर्लेपः सर्वव्यापी निराकुलः ।
अनादिनिधनः सर्वलोकपूज्यो निरामयः ॥५४॥
रसो रसज्ञः सारज्ञो लोकसारो रसात्मकः ।
सर्वदुःखातिगो विद्याराशिः परमगोचरः ॥५५॥

शेषो विशेषो विगतकल्मषो रघुनायकः ।
वर्णश्रेष्ठो वर्णवाह्यो वर्ण्यो वर्ण्यगुणोज्ज्वलः ॥५६॥
कर्मसाक्ष्यमरश्रेष्ठो देवदेवः सुखप्रदः ।
देवाधिदेवो देवर्षिर्देवासुरनमस्कृतः ॥५७॥
सर्वदेवमयश्चक्री शार्ङ्गपाणी रघूत्तमः ।
मनो बुद्धिरहंकारः प्रकृतिः पुरुषोऽव्ययः ॥५८॥
अहल्यापावनः स्वामी पितृभक्तो वरप्रदः ।
न्यायो न्यायी नयी श्रीमान्नयो नगधरोध्रुवः ॥५९॥
लक्ष्मीविश्वम्भराभर्ता देवेन्द्रो बलिमर्दनः ।
वाणारिमर्दनो यज्वानुत्तमो मुनिसेवितः ॥६०॥

देवाग्रणीः शिवध्यानतत्परः परमः परः ।
सामगेयः प्रियोऽक्रूरः पुण्यकीर्तिस्सुलोचनः ॥६१॥
पुण्यः पुण्याधिकः पूर्वः पूर्णः पूरयिता रविः ।
जटिलः कल्मषध्वान्तप्रभञ्जनविभावसुः ॥६२॥
अव्यक्तलक्षणोऽव्यक्तो दशास्यद्विपकेसरी ।
कलानिधिः कलानाथो कमलानन्दवर्धनः ॥६३॥
जयी जितारिः सर्वादिः शमनो भवभञ्जनः ।
अलंकरिष्णुरचलो रोचिष्णुर्विक्रमोत्तमः ॥६४॥
आशुः शब्दपतिः शब्दागोचरो रञ्जनो रघुः ।
निश्शब्दः प्रणवो माली स्थूलः सूक्ष्मो विलक्षणः ॥६५॥

आत्मयोनिरयोनिश्च सप्तजिह्वः सहस्रपात् ।
सनातनतमस्स्रग्वी पेशलो जविनां वरः ॥६६॥
शक्तिमाञ्शङ्खभृन्नाथः गदापद्मरथाङ्गभृत् ।
निरोहो निर्विकल्पश्च चिद्रूपो वीतसाध्वसः ॥६७॥

शताननः सहस्राक्षः शतमूर्तिर्धनप्रभः ।
हृत्पुण्डरीकशयनः कठिनो द्रव एव च ॥६८॥
उग्रो ग्रहपतिः श्रीमान् समर्थोऽनर्थनाशनः ।
अधर्मशत्रू रक्षोघ्नः पुरुहूतः पुरुष्टुतः ॥६९॥
ब्रह्मगर्भो बृहद्गर्भो धर्मधेनुर्धनागमः ।
हिरण्यगर्भोज्योतिष्मान् सुललाटः सुविक्रमः ॥७०॥

शिवपूजारतः श्रीमान् भवानीप्रियकृद्वशी ।
नरो नारायणः श्यामः कपर्दीनीललोहितः ॥७१॥
रुद्रः पशुपतिः स्थाणुर्विश्वामित्रो द्विजेश्वरः ।
मातामहोमातरिश्वाविरिञ्चोविष्टरश्रवाः ॥७२॥
अक्षोभ्यः सर्वभूतानां चण्डः सत्यपराक्रमः ।
वालखिल्यो महाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः ॥७३॥
निदाघस्तपनोऽमोघः श्लक्ष्णः परबलापहृत् ।
कबन्धमथनो दिव्यः कम्बुग्रीवशिवप्रियः ॥७४॥
शङ्खोऽनिलः सुनिष्पन्नः सुलभः शिशिरात्मकः ।
असंसृष्टोऽतिथिः शूरः प्रमाथी पापनाशकृत् ॥७५॥

वसुश्रवाः कव्यवाहः प्रतप्तो विश्वभोजनः ।
रामोनीलोत्पलश्यामोज्ञानस्कन्धोमहाद्युतिः ॥७६॥
पवित्रपादः पापारिर्मणिपूरो नभोगतिः ।
उत्तारणो दुष्कृतिहा दुर्धर्षो दुस्सहोऽभयः ॥७७॥
अमृतेशोऽमृतवपुर्धर्मी धर्मः कृपाकरः ।
भर्गो विवस्वानादित्यो योगाचार्यो दिवस्पतिः ॥७८॥
उदारकीर्तिरुद्योगी वाङ्मयः सदसन्मयः ।
नक्षत्रमाली नाकेशः स्वाधिष्ठानः षडाश्रयः ॥७९॥
चतुर्वर्गफलो वर्णी शक्तित्रयफलं निधिः ।
निधानगर्भो निर्व्याजो गिरीशो व्यालमर्दनः ॥८०॥

श्रीवल्लभः शिवारम्भः शान्तिर्भद्रः समञ्जसः ।
भूशयो भूतिकृद्भूतिर्भूषणो भूतवाहनः ॥८१॥
अकायो भक्तकायस्थः कालज्ञानी महावटुः ।
परार्थवृत्तिरचलो विविक्तः श्रुतिसागरः ॥८२॥
स्वभावभद्रो मध्यस्थः संसारभयनाशनः ।
वेद्यो वैद्यो वियद्गोप्ता सर्वामरमुनीश्वरः ॥८३॥
सुरेन्द्रः करणं कर्म कर्मकृत्कर्म्यधोक्षजः ।
ध्येयो धुर्यो धराधीशः संकल्पः शर्वरीपतिः ॥८४॥
परमार्थगुरुर्वृद्धः शुचिराश्रितवत्सलः ।
विष्णुर्जिष्णुर्विभुर्वन्द्यो यज्ञेशो यज्ञपालकः ॥८५॥

प्रभविष्णुर्ग्रसिष्णुश्च लोकात्मा लोकभावनः ।
केशवः केशिहा काव्यः कविः कारणकारणम् ॥८६॥
कालकर्ता कालशेषो वासुदेवः पुरुष्टुतः ।
आदिकर्ता वराहश्च माधवो मधुसूदनः ॥८७॥
नारायणो नरो हंसो विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
विश्वकर्ता महायज्ञो ज्योतिष्मान् पुरुषोत्तमः ॥८८॥
वैकुण्ठः पुण्डरीकाक्षः कृष्णः सूर्यः सुरार्चितः ।
नारसिंहो महाभीमो वक्रदंष्ट्रो नखायुधः ॥८९॥
आदिदेवो जगत्कर्ता योगीशो गरुडध्वजः ।
गोविन्दोगोपतिर्गोप्ता भूपतिर्भुवनेश्वरः ॥९०॥

पद्मनाभो हृषीकेशो धाता दामोदरः प्रभुः ।
त्रिविक्रमस्त्रिलोकेशो ब्रह्मेशः प्रीतिवर्धनः ॥९१॥
वामनो दुष्टदमनो गोविन्दो गोपवल्लभः ।
भक्तप्रियोऽच्युतः सत्यः सत्यकीर्तिर्धृतिः स्मृतिः ॥९२॥
कारुण्यं करुणो व्यासः पापहा शान्तिवर्धनः ।
संन्यासी शास्त्रतत्वज्ञो मन्दराद्रिनिकेतनः ॥९३॥
बदरीनिलयः शान्तस्तपस्वी वैद्युतप्रभः ।
भूतावासो गुहावासः श्रीनिवासः श्रियः पतिः ॥९४॥
तपोवासो मुदावासः सत्यवासः सनातनः ।
पुरुषः पुष्करः पुण्यः पुष्कराक्षो महेश्वरः ॥९५॥

पूर्णमूर्तिः पुराणज्ञः पुण्यदः प्रीतिवर्धनः ।
शङ्खी चक्री गदी शार्ङ्गी लाङ्गली मुसली हली ॥९६॥
किरीटी कुण्डली हारी मेखली कवची ध्वजी ।
योद्धा जेता महावीर्यः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥९७॥
शास्ता शास्त्रकरः शास्त्रं शंकरः शंकरस्तुतः ।
सारथिः सात्त्विकः स्वामी सामवेदप्रियः समः ॥९८॥
पवनः संहतः शक्तिः सम्पूर्णाङ्गः समृद्धिमान् ।
स्वर्गदः कामदः श्रीदः कीर्तिदोऽकीर्तिनाशनः ॥९९॥
मोक्षदः पुण्डरीकाक्षः क्षीराब्धिकृतकेतनः ।
सर्वात्मासर्वलोकेशः प्रेरकः पापनाशनः ॥१००॥

सर्वव्यापी जगन्नाथः सर्वलोकमहेश्वरः ।
सर्गस्थित्यन्तकृद्देवः सर्वलोकसुखावहः ॥१०१॥
अक्षय्यः शाश्वतोऽनन्तः क्षयवृद्धिविवर्जितः ।

निर्लेपो निर्गुणः सूक्ष्मो निर्विकारो निरञ्जनः ॥१०२॥
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तः सत्तामात्रव्यवस्थितः ।
अधिकारी विभुर्नित्यः परमात्मा सनातनः ॥१०३॥
अचलो निर्मलो व्यापी नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
श्यामो युवा लोहिताक्षो दीप्तास्यो मितभाषणः ॥१०४॥
आजानुबाहुः सुमुखः सिंहस्कन्धो महाभुजः ।
सत्यवान् गुणसम्पन्नः स्वयंतेजाः सुदीप्तिमान् ॥१०५॥

कालात्मा भगवान् कालः कालचक्रप्रवर्तकः ।
नारायणः परंज्योतिः परमात्मा सनातनः ॥१०६॥
विश्वसृड्विश्वगोप्ता च विश्वभोक्ता च शाश्वतः ।
विश्वेश्वरो विश्वमूर्तिर्विश्वात्मा विश्वभावनः ॥१०७॥
सर्वभूतसुहृच्छान्तः सर्वभूतानुकम्पनः ।
सर्वेश्वरेश्वरः सर्वः श्रीमानाश्रितवत्सलः ॥१०८॥
सर्वगः सर्वभूतेशः सर्वभूताशयस्थितः ।
अभ्यन्तरस्थस्तमसश्छेत्ता नारायणः परः ॥१०९॥
अनादिनिधनः स्रष्टा प्रजापतिपतिर्हरिः ।
नरसिंहो हृषीकेशः सर्वात्मा सर्वदृग्वशी ॥११०॥

जगतस्तस्थुषश्चैव प्रभुर्नेता सनातनः ।
कर्ता धाता विधाता च सर्वेषां प्रभुरीश्वरः ॥१११॥

सहस्रमूर्तिर्विश्वात्मा विष्णुर्विश्वदृगव्ययः ।
पुराणपुरुषः स्रष्टा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥११२॥
तत्त्वं नारायणो विष्णुर्वासुदेवः सनातनः ।
परमात्मा परं ब्रह्म सच्चिदानन्दविग्रहः ॥११३॥
परंज्योतिः परंधामः पराकाशः परात्परः ।
अच्युतः पुरुषः कृष्णः शाश्वतः शिव ईश्वरः ॥११४॥
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरुग्रः साक्षी प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भः सविता लोककृल्लोकभृद्विभुः ॥११५॥

रामः श्रीमान् महाविष्णुर्जिष्णुर्देवहितावहः ।
तत्वात्मा तारकं ब्रह्म शाश्वतः सर्वसिद्धिदः ॥११६॥
अकारवाच्योभगवान् श्रीर्भूलीलापतिः पुमान् ।
सर्वलोकेश्वरः श्रीमान् सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥११७॥
स्वामी सुशीलः सुलभः सर्वज्ञः सर्वशक्तिमान् ।
नित्यः सम्पूर्णकामश्च नैसर्गिकसुहृत्सुखी ॥११८॥
कृपापीयूषजलधिश्शरण्यः सर्वदेहिनाम् ।
श्रीमान्नारायणः स्वामी जगतां पतिरीश्वरः ॥११९॥
श्रीशः शरण्यो भूतानां संश्रिताभीष्टदायकः ।
अनन्तः श्रीपती रामो गुणभृन्निर्गुणो महान् ॥१२०॥

॥ इति श्रीरामसहस्रनामस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

सीताराम स्तोत्रम्

कमल लोचनौ राम कांचनाम्बरौ कवचभूषणौ राम कार्मुकान्वितौ ।
कलुषसंहारौ राम कामितप्रदौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥१॥
मकरकुण्डलौ राम मौलिसेवितौ मणिकिरीटिनौ राम मञ्जुभाषिणौ ।
मनुकुलोद्भवौ राम मानुषोत्तमौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥२॥
सत्यसम्पन्नौ राम समरभीकरौ सर्वरक्षणौ राम सर्वभूषणौ ।
सत्यमानसौ राम सर्वपोषितौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥३॥
धृतशिखण्डिनौ राम दीनरक्षकौ धृतहिमाचलौ राम दिव्यविग्रहौ ।
विविधपूजितौ राम दीर्घदोर्युगौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥४॥
भुवनजानुकौ राम पादचारिणौ पृथुशिलीमुकौ राम पापनाङ्घ्रिकौ ।
परमसात्विकौ राम भक्तवत्सलौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥५॥
वनविहारिणौ राम वल्कलांबरौ वनफलाशिनौ राम वासवार्चितौ ।
वरगुणाकरौ राम वालिमर्दनौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥६॥
दशरथात्मजौ राम पशुपतिप्रियौ शशिनिवासिनौ राम विशदमानसौ ।
दशमुखान्तकौ राम निशितसायकौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥७॥
कमल लोचनौ राम समरपण्डितौ भीमविग्रहौ राम कामसुन्दरौ ।
दामभूषणौ राम हेमनूपुरौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥८॥
भरतसेवितौ राम दुरितमोचकौ करधृताशुगौ राम सूकरस्तुतौ ।
शरधि धारणौ राम धीरकवचिनौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥९॥
धर्मचारिणौ राम कर्मसाक्षिणौ धर्मकार्मुखौ राम शर्मदायकौ ।
धर्मशोभितौ राम कर्ममोदिनौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥१०॥
नीलदेहिनौ राम लोलकुन्दलौ कालभीकरौ राम वालिमर्दनौ ।
कलुषहारिणौ राम ललितभूषणौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥११॥
मातृनन्दनौ राम भ्राद्रबालकौ भ्रातृ सम्मतौ राम शत्रुसूदकौ ।
भ्रातृशेखरौ राम सेतुनायकौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥१२॥
शरधिबन्धनौ राम दलितदानवौ कुलविवर्धनौ राम बलविराजितौ ।
सोलजाजितौ राम बलविराजितौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥१३॥
राजलक्षणौ राम विजय काङ्क्षिणौ गजवरारुहौ राम पूजितामरौ ।
विजितमत्सरौ राम भजितवारणौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥१४॥
सर्वमानितौ राम सर्वकारिणौ गर्वभञ्जनौ राम निर्विकारणौ ।
दुर्विभासितौ राम सर्वभासकौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥१५॥
रविकुलोद्भवौ राम भवविनाशकौ कानकाश्रितौ राम पादकोशकौ ।
रविसुतप्रियौ राम कविभिरीडितौ रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥१६॥
राम राघव सीता राम राघव राम राघव सीता राम राघव ।
कृष्णकेशव राधा कृष्णकेशव कृष्णकेशव राधा कृष्णकेशव ॥१७॥

रामाष्टकम्

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम् ।
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम् ॥ १ ॥

जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम् ।
स्वभक्तभीतिभंजनं भजे ह राममद्वयम् ॥ २ ॥

निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम् ।
समं शिवं निरंजनं भजे ह राममद्वयम् ॥ ३ ॥

सदाप्रञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम् ।
निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम् ॥ ४ ॥

निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम् ॥
चिदेकरूपसंततं भजे ह राममद्वयम् ॥ ५ ॥

भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम् ।
गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम् ॥ ६ ॥

महावाक्यबोधकैर्विराजमनवाक्पदैः ।
परब्रह्म व्यापकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ७ ॥

शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम् ।
विराजमानदैशिकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ८ ॥

रामाष्टकं पठति यः सुकरं सुपुण्यं व्यासेन भाषितमिदं श्रृणुते मनुष्यः ।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीव्यासविरचितं रामाष्टकं संपूर्णम् ॥

राम भुजन्ग स्तोत्र

विशुद्धं परं सच्चिदानन्दरूपम् गुणाधारमाधारहीनं वरेण्यम् । महान्तं विभान्तं गुहान्तं गुणान्तं सुखान्तं स्वयं धाम रामं प्रपद्ये ॥
१ ॥ शिवं नित्यमेकं विभुं तारकाख्यं सुखाकारमाकारशून्यं सुमान्यं । महेशं कलेशं सुरेशं परेशं नरेशं निरीशं महीशं प्रपद्ये ॥ २
॥ शिवाय विष्णुरूपाय शिवरूपाय विष्णवे । शिवस्य हृदयम् विश्णु विष्णोश्च हृदयम् शिवः ॥ यदावर्णयत्कर्णमूलेऽन्तकाले शिवो
राम रामेति रामेति काश्याम् । तदेकं परं तारकब्रह्मरूपं भजेऽहं भजेऽहं भजेऽहं भजेऽहम् ॥ ३ ॥ श्रीरामरामरामेति रमे रामे
मनोरमे । सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने ॥ महारत्नपीठे शुभे कल्पमूले सुखासीनमादित्यकोटिप्रकाशम् । सदा
जानकीलक्ष्मणोपेतमेकं सदा रामचन्द्रम् भजेऽहं भजेऽहम् ॥ ४ ॥ क्वणद्रत्नमन्जीरपादारविन्दम् लसन्मेखलाचारुपीताम्बराढ्यम् ।
महारत्नहारोल्लसत्कौस्तुभाङ्गं नदच्चंचरीमंजरीलोलमालम् ॥ ५ ॥ लसच्चन्द्रिकास्मेरशोणाधराभम् समुद्यत्पतङ्गेन्दुकोटिप्रकाशम् ।
नमद्ब्रह्मरुद्रादिकोटीररत्न- स्फुरत्कान्तिनीराजनाराधितान्घ्रिम् ॥ ६ ॥ ' कोटीरोज्ज्वल-रत्न-दीपकलिका-नीराजनम् कुर्वते' । पुरः
प्राञ्जलीनाञ्जनेयादिभक्तान् स्वचिन्मुद्रया भद्रया बोधयन्तम् । भजेऽहं भजेऽहं सदा रामचन्द्रं त्वदन्यं न मन्ये न मन्ये न मन्ये
॥ ७ ॥ मोउन-व्याख्यान-प्रकटित-परब्रह्मतत्त्वं युवानं । वर्षिष्ठ-अन्तेवसद्-ऋषि-गणैरावृतं ब्रह्म-निष्ठैः ॥ आचार्येन्द्रं करकलित-
चिन्मुद्र-मानन्दरूपम् स्वात्मारामं मुदितवदनं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ यदा मत्समीपं कृतान्तः समेत्य प्रचण्डप्रतापैर्भटैर्भीषयेन्माम् ।
तदाविष्करोषि त्वदीयं स्वरूपं तदापत्प्रणाशं सकोदण्डबाणम् ॥ ८ ॥ निजे मानसे मन्दिरे संनिधेहि प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ।
ससौमित्रिणा कैकेयीनन्दनेन स्वशक्त्यानुभक्त्या च संसेव्यमान ॥ ९ ॥ स्वभक्താग्रगण्यैः कपीशैर्महीशै- रनीकैरनेकैश्च राम प्रसीद
। नमस्ते नमोऽस्त्वीश राम प्रसीद प्रशाधि प्रशाधि प्रकाशं प्रभो माम् त्वमेवासि दैवं परं मे यदेकं सुचैतन्यमेतत्त्वदन्यं न मन्ये ।
यतोऽभूदमेयं वियद्वायुतेजो- जलोर्व्यादिकार्यं चरं चाचरं च ॥ ११ ॥ नमः सच्चिदानन्दरूपाय तस्मै नमो देवदेवाय रामाय तुभ्यम्
। नमो जानकीजीवितेशाय तुभ्यं नमः पुण्डरीकायताक्षाय तुभ्यम् ॥ १२ ॥ नमो भक्तियुक्तानुरक्ताय तुभ्यं नमः
पुण्यपुञ्जैकलभ्याय तुभ्यम् । नमो वेदवेद्याय चाद्याय पुंसे नमः सुन्दरायेन्दिरावल्लभाय ॥ १३ ॥ नमो विश्वकर्त्रे नमो विश्वहर्त्रे
नमो विश्वभोक्त्रे नमो विश्वमात्रे । नमो विश्वनेत्रे नमो विश्वजेत्रे नमो विश्वपित्रे नमो विश्वमात्रे ॥ १४ ॥ शिलापि
त्वदन्घ्रिक्षमासङ्गिरेणु- प्रसादाद्धि चैतन्यमाधत्त राम । नरस्त्वत्पदद्वन्द्वसेवाविधाना- त्सुचैतन्यमेतेति किं चित्रमद्य ॥ १५ ॥ पवित्रं
चरित्रं विचित्रं त्वदीयं नरा ये स्मरन्त्यन्वहं रामचन्द्र । भवन्तं भवान्तं भरन्तं भजन्तो लभन्ते कृतान्तं न पश्यन्त्यतोऽन्ते ॥
१६ ॥ ' अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ स पुण्यः स गण्यः शरण्यो
ममायं नरो वेद यो देवचूडामणिं त्वाम् । सदाकारमेकं चिदानन्दरूपं मनोवागगम्यं परन्धाम राम ॥ १७ ॥
प्रचण्डप्रतापप्रभावाभिभूत- प्रभूतारिवीर प्रभो रामचन्द्र । बलं ते कथं वर्ण्यतेऽतीव बाल्ये यतोऽखण्डि चण्डीशकोदण्डदण्डः ॥ १८ ॥
दशग्रीवमुग्रं सपुत्रं समित्रं सरिद्दुर्गमध्यस्थरक्षोगणेशम् । भवन्तं विना राम वीरो नरो वा- ऽसुरो वाऽमरो वा जयेत्कस्त्रिलोक्याम् ॥
१९ ॥ सदा राम रामेति रामामृतं ते सदाराममानन्दनिष्यन्दकन्दम् । पिबन्तं नमन्तं सुदन्तं हसन्तं हनूमन्तमन्तर्भजे तं
नितान्तम् ॥ २० ॥ यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृत-मस्तकाञ्जलिम् । बाष्पवारिपरिपूर्ण-लोचनं मारुतिम् नमत
राक्षसान्तकम् ॥ सदा राम रामेति रामामृतम् ते सदाराममानन्दनिष्यन्दकन्दम् । पिबन्नन्वहं नन्वहं नैव मृत्यो- र्बिभेमि
प्रसादादसादात्तवैव ॥ २१ ॥ असीतासमेतैरकोदण्डभूषै- रसौमित्रिवन्द्यैरचण्डप्रतापैः । अलङ्केशकालैरसुग्रीवमित्रै- ररामाभिधेयैरलम्
देवतैर्नः ॥ २२ ॥ अवीरासनस्थैरचिन्मुद्रिकाढ्यै- रभक्ताञ्जनेयादितत्त्वप्रकाशैः । अमन्दारमूलैरमन्दारमालै- ररामाभिधेयैरलम्
देवतैर्नः ॥ २३ ॥ असिन्धुप्रकोपैरवन्द्यप्रतापै- रबन्धुप्रयाणैरमन्दस्मिताढ्यैः । अदण्डप्रवासैरखण्डप्रबोधै- ररामभिदेयैरलम् देवतैर्नः ॥
२४ ॥ हरे राम सीतापते रावणारे खरारे मुरारेऽसुरारे परेति । लपन्तं नयन्तं सदाकालमेव समालोकयालोकयाशेषबन्धो ॥ २५ ॥
नमस्ते सुमित्रासुपुत्राभिवन्द्य नमस्ते सदा कैकयीनन्दनेड्य । नमस्ते सदा वानराधीशवन्द्य नमस्ते नमस्ते सदा रामचन्द्र ॥
२६ ॥ प्रसीद प्रसीद प्रचण्डप्रताप प्रसीद प्रसीद प्रचण्डारिकाल । प्रसीद प्रसीद प्रपन्नानुकम्पिन् प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ॥ २७
॥ भुजङ्गप्रयातं परं वेदसारं मुदा रामचन्द्रस्य भक्त्या च नित्यम् । पठन् सन्ततं चिन्तयन् स्वान्तरङ्गे स एव स्वयम्
रामचन्द्रः स धन्यः ॥ २८ ॥ ॥इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितम् श्री रामभुजङ्गप्रयात स्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

रामचन्द्र स्तुति

नमामि भक्तवत्सलं कृपालु शील कोमलं
भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदं।
निकाम श्याम सुंदरं भवांबुनाथ मन्दरं
प्रफुल्ल कंज लोचनं मदादि दोष मोचनं॥१॥

प्रलंब बाहु विक्रमं प्रभोऽप्रमेय वैभवं
निषंग चाप सायकं धरं त्रिलोक नायकं।
दिनेश वंश मंडनं महेश चाप खंडनं
मुनींद्र संत रंजनं सुरारि वृंद भंजनं॥२॥

मनोज वैरि वंदितं अजादि देव सेवितं
विशुद्ध बोध विग्रहं समस्त दूषणापहं।
नमामि इंदिरा पतिं सुखाकरं सतां गतिं
भजे सशक्ति सानुजं शची पति प्रियानुजं॥३॥

त्वदंघ्रि मूल ये नरा: भजन्ति हीन मत्सरा:
पतंति नो भवार्णवे वितर्क वीचि संकुले।
विविक्त वासिन: सदा भजंति मुक्तये मुदा
निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकं॥४॥

तमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं
जगद्‌गरुं च शाश्व तं तुरीयमेव मेवलं।
भजामि भाव वल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं
स्वभक्त कल्प पादपं समं सुसेव्यमन्वहं॥५॥

अनूप रूप भूपतिं नतोऽहमुर्विजा पतिं
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्ज भक्ति देहि मे।
पठंति ये स्वतं इदं नरादरेण ते पदं
व्रजंति नात्र संशयं त्वदीय भक्ति संयुता:॥६॥

इस स्तोत्र का नित्य आदरपूर्वक पाठ करने से व्यक्ति को पद कि निसंदेः प्राप्ति होती हैं।

रामस्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम् ।
नवकञ्ज लोचन कञ्ज मुखकर कञ्जपद कञ्जरुणम् ॥१॥
कंदर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुन्दरम् ।
पटपीत पानहुँ तड़ित रुचि सुचि नौमि जनक सुतावरम् ॥२॥

भजु दीन बन्धु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकन्दनम् ।
रघुनन्द आनंदकंद कोशल चन्द दशरथ नन्दनम् ॥३॥
सिरक्रीट कुण्डल तिलक चारु उदार अङ्ग विभूषणम् ।
आजानुभुज सर चापधर सङ्ग्राम जित खरदूषणम् ॥४॥

इति वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मनरञ्जनम् ।
मम हृदयकञ्ज निवास कुरु कामादिखलदलमञ्जनम् ॥५॥
मन जाहि राचो मिलहि सोवर सहजसुन्दर सांवरो ।
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥६॥

एहि भाँति गौरि अशीस सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥७॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्षनः जात कहि ।
मञ्जुल मङ्गल मूल वाम अङ्ग परकन लगे ॥८॥

सियावर रामचन्द्र पद गहि रहुँ ।
उमावर शम्भुनाथ पद गहि रहुँ ।
महाविर बजरँगी पद गहि रहुँ । शरणा गतो हरि ॥



जटायुकृत राम स्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः । जटायुरुवाच ।

अगणितगुणमप्रमेयमाद्यं सकलजगत्स्थितिसंयमादिहेतुम् ।
उपरमपरमंपरात्मभूतंसततमहं प्रणतोऽस्मि रामचन्द्रम्॥ १ ॥
निरवधिसुखमिंदिराकटाक्षं क्षपितसुरेन्द्रचतुर्मुखदिदुःखम् ।
नरवरमनिशंनतोऽस्मिरामं वरदमहं वरचापबाणहस्तम् ॥ २ ॥
त्रिभुवनकमनीयरूपमीड्यं रविशतभासुरमीहितप्रदानम् ।
शरणदमनिशं सुरागमूले कृतनिलयं रघुनन्दनं प्रपद्ये ॥ ३ ॥

भवविपिनदवाग्निमधेयं भवमुखदैवतदैवतं दयालुम् ।
दनुजपतिसहस्त्रकोटिनाशं रवितनयासदृशं हरिं प्रपद्ये ॥ ४ ॥
अविरतभवभावनातिदूरं भवविमुखैर्मुनिभिः सदैव दृश्यम् ।
भवजलधिसुतारणांघ्रिपोतं शरणमहं रघुनन्दनं प्रपद्ये ॥ ५ ॥
गिरिशगिरिसुतमनोनिवासं गिरिवरधारिणमीहिताभिरामम् ।
सुरवरदनुजेन्द्रसेवितांघ्रिं सुरवरदं रघुनायकं प्रपद्ये ॥ ६ ॥

परधनपरदारवर्जितानां परगुणभूतिषु तुष्टमानसानाम् ।
परहितनिरतात्मनां सुसेव्यं रघुवरमंबुजलोचनं प्रपद्ये ॥ ७ ॥
स्मितरुचिरविकासिताब्जमतिसुलभं सुरराजनीलनीलम् ।
सितजलरुहचारुनेत्रशोभं रघुपतिमीशगुरोर्गुरुं प्रपद्ये ॥ ८ ॥
हरिकमलजशंभुरूपभेदात्त्वमहि विभासि गुणत्रयानुवृत्तः ।
रविरिव जल्पूरितोदपात्रेष्वमरपतिस्तुतिपात्रमीशमीडे ॥ ९ ॥

रतिपतिशतकोटिसुन्दराङ्ग शतपथगोचरभावनाविदूरम्।
यतिपतिहृदयेसदाविभांतंरघुपतिमार्तिहरं प्रभुं प्रपद्ये ॥ १० ॥
इत्येवं स्तुवतस्तस्य प्रसन्नोऽभूद्रघूत्तमः ।
उवाच गच्छ भद्रं ते मम विष्णोः परं पदम् ॥ ११ ॥
श्रृतोति य इदं स्तोत्रं लिखेद्वा नियतः पठेत् ।
स याति मम सारूप्यं मरणे मत्स्मृतिं लभेत् ॥ १२ ॥

इति राघवभाषितं तदा श्रुतवान् हर्षसमाकुलो द्विजः ।
रघुनन्दनसाम्यमास्थितः प्रययौ ब्रह्मसुपूजितं पदम् ॥ १३ ॥
॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे आरण्यकांडे जटायुकृतरामस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

महादेव कृत रामस्तुति

श्री महादेव उवाच ।

नमोऽस्तु रामाय सशक्तिकाय नीलोत्पलश्यामकोमलाय ।
किरीटहाराङ्गदभूषणाय सिंहासनस्थाय महाप्रभाय ॥ १ ॥
त्वमादिमध्यांतविहीन एकः सृजस्यवस्यत्सि च लोकजातम् ।
स्वमाययातेन नलिप्यसे त्वं यत्स्वे सुखेऽजस्त्ररतोऽनवद्यः॥ २ ॥

लीलां विधत्से गुणसंवृतस्त्वं प्रसन्नभक्तानुविधानहेतोः ।
नानाऽवतारैः सुरमानुषाद्यैः प्रतीयसे ज्ञानिभिरेव नित्यम् ॥ ३ ॥
स्वांशेन लोकं सकलं विधाय तं बिभर्षि च त्वं तदधः फणीश्वरः ।
उपर्यधो भान्वनिलोड्डपौषधीन्प्रकर्षरूपोवसि नैकधा जगत् ॥४॥

त्वमिह देहभृतां शिखिरूपः पचसि भक्तमशेषमजस्त्रम् ।
पवनपंचकरूपसहायो जगदखंडमनेन बिभर्षि ॥ ५ ॥
चंद्रसूर्यशिखिमध्यगतं यत्तेज ईश चिदशेषतनूनाम् ।
प्राभवत्तनुभृतामिह धैर्यं शौर्यमायुरखिलं तव सत्त्वम् ॥ ६ ॥

त्वं विरिञ्चिशिवविष्णुविभेदात्कालकर्मशशिसूर्यविभागात् ।
वादिनां पृथगिवेश विभासि ब्रह्म निश्चितमनन्यदिहैकम् ॥ ७ ॥
मत्स्यादिरूपेण यथा त्वमेकः श्रुतौ पुराणेषु च लोकसिद्धः ।
तथैव सर्वं सदसद्विभागस्त्वमेव नान्यद्भवतो विभाति ॥ ८ ॥

यद्यत्समुत्पन्नमनन्तसृष्टावुत्पत्स्यते यच्च भवच्च यच्च ।
न दृश्यते स्थावरजंगमादौ त्वया विनाऽतः परतः परस्त्वम्॥ ९ ॥
तत्त्वं न जानंति परात्मनस्ते जनाः समस्तास्तव माययातः ।
त्वद्भक्तसेवामलमानसानां विभाति तत्त्वं परमेकमैशम् ॥ १० ॥

ब्रह्मादयस्ते न विदुः स्वरूपं चिदात्मतत्त्वं बहिरर्थभावाः ।
ततोबुधस्त्वामिदमेव रूपं भक्त्या भजन्मुक्तिमुपैत्यदुःखः॥ ११ ॥
अहं भवन्नामगुणैः कृतार्थो वसामि काश्यामनिशं भवान्या ।
मुमूर्षमाणस्य विमुक्तयेऽहं दिशामि मंत्रं तव राम नाम ॥ १२ ॥

इमं स्तवं नित्यमनन्यभक्त्या श्रृण्वन्ति गायंति लिखंति ये वै ।
तेसर्वसौख्यंपरमं च लब्ध्वा भवत्पदं यान्ति भवत्प्रसादात्॥ १३ ॥
॥ इति श्रीमहादेवकृतस्तोत्र संपूर्णम् ॥

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

>> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY

BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

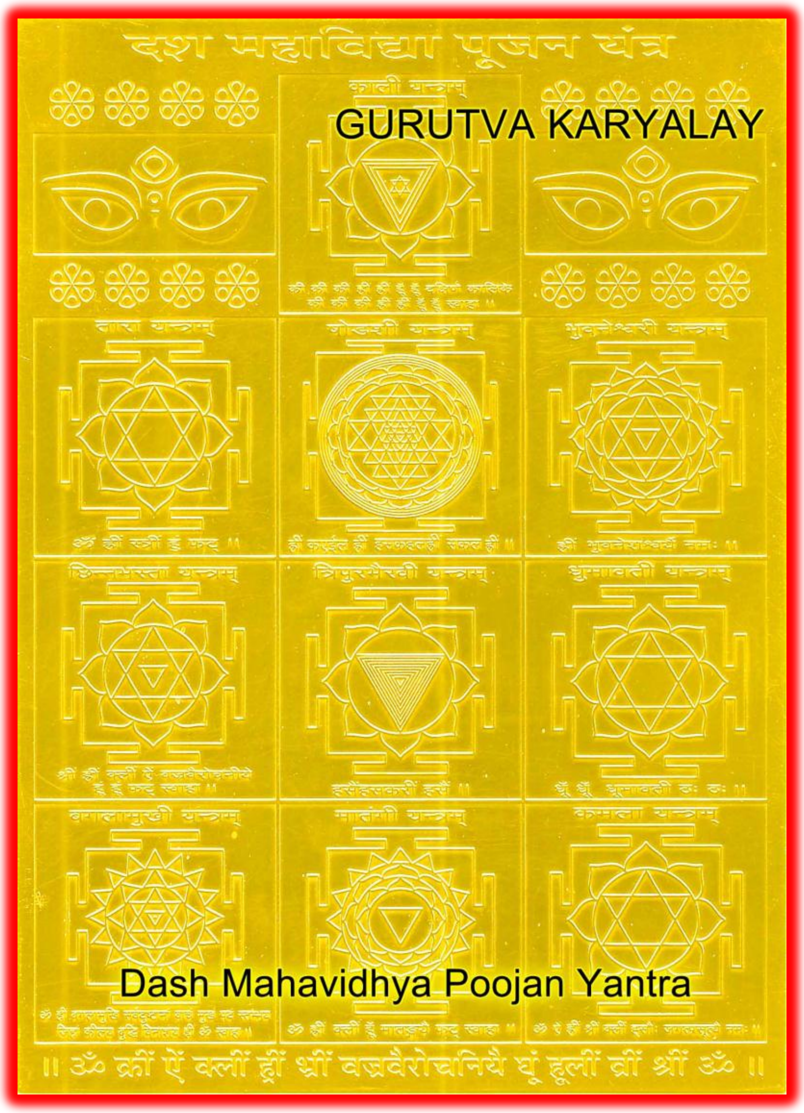
श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- ❖ श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- ❖ जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- ❖ जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- ❖ श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- ❖ विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- ❖ गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

दस महाविद्या पूजन यंत्र



दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

>> **Shop Online**

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
			
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
			
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
			
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
			
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र

गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	550	1” X 1”	370	1” X 1”	325
2” X 2”	910	2” X 2”	640	2” X 2”	550
3” X 3”	1450	3” X 3”	1050	3” X 3”	910
4” X 4”	2350	4” X 4”	1450	4” X 4”	1225
6” X 6”	3700	6” X 6”	2800	6” X 6”	2350
9” X 9”	9100	9” X 9”	4600	9” X 9”	4150
12” X12”	12700	12” X12”	9100	12” X12”	9100

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। **>> Shop Online | Order Now**

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

अप्रैल 2019 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	सोम	चैत्र	कृष्ण	एकादशी	06:04	धनिष्ठा	21:53	साध्य	20:28	कौलव	19:09	मकर	08:22
2	मंगल	चैत्र	कृष्ण	द्वादशी	08:26	शतभिषा	24:48	शुभ	21:18	तैतिल	08:26	कुंभ	-
3	बुध	चैत्र	कृष्ण	त्रयोदशी	10:48	पूर्वाभाद्रपद	27:24	शुक्ल	21:52	वणिज	10:48	कुंभ	20:48
4	गुरु	चैत्र	कृष्ण	चतुर्दशी	12:47	उत्तराभाद्रपद	29:35	ब्रह्म	22:08	शकुनि	12:47	मीन	-
5	शुक्र	चैत्र	कृष्ण	अमावस्या	14:20	रेवति	-	इन्द्र	22:05	मघा	14:20	मीन	-
6	शनि	चैत्र	शुक्ल	प्रतिपदा	15:27	रेवति	07:22	वैधृति	21:42	बव	15:27	मीन	07:23
7	रवि	चैत्र	शुक्ल	द्वितीया	16:08	अश्विनी	08:44	विषकुंभ	21:00	कौलव	16:08	मेष	-
8	सोम	चैत्र	शुक्ल	तृतीया	16:25	भरणी	09:42	प्रीति	20:00	गर	16:25	मेष	15:54
9	मंगल	चैत्र	शुक्ल	चतुर्थी	16:19	कृतिका	10:18	आयुष्मान	18:44	विष्टि	16:19	वृष	-
10	बुध	चैत्र	शुक्ल	पंचमी	15:50	रोहिणि	10:33	सौभाग्य	17:10	बालव	15:50	वृष	22:33
11	गुरु	चैत्र	शुक्ल	षष्ठी	14:57	मृगशिरा	10:25	शोभन	15:18	तैतिल	14:57	मिथुन	-
12	शुक्र	चैत्र	शुक्ल	सप्तमी	13:39	आद्रा	09:53	अतिगंड	13:08	वणिज	13:39	मिथुन	-
13	शनि	चैत्र	शुक्ल	अष्टमी	11:56	पुनर्वसु	08:58	सुकर्मा	10:39	बव	11:56	मिथुन	03:15
14	रवि	चैत्र	शुक्ल	नवमी-दशमी	09:49	पुष्य	07:39	धृति	07:52	कौलव	09:49	कर्क	-



15	सोम	चैत्र	शुक्ल	दशमी - एकादशी	07:20-04:33	मघा	28:0	गंड	25:28	गर	07:20	कर्क	06:00
16	मंगल	चैत्र	शुक्ल	द्वादशी	03:34	पूर्वाफाल्गुनी	25:50	वृद्धि	21:58	बव	15:05	सिंह	-
17	बुध	चैत्र	शुक्ल	त्रयोदशी	22:29	उत्तराफाल्गुनी	23:35	ध्रुव	18:24	कौलव	12:02	सिंह	07:17
18	गुरु	चैत्र	शुक्ल	चतुर्दशी	19:29	हस्त	21:25	व्याघात	14:53	गर	08:58	कन्या	-
19	शुक्र	चैत्र	शुक्ल	पूर्णिमा	16:41	चित्रा	19:29	हर्षण	11:31	विष्टि	06:03	कन्या	08:25
20	शनि	वैशाख	कृष्ण	एकम	14:17	स्वाती	17:57	वज्र	08:26	कौलव	14:17	तुला	-
21	रवि	वैशाख	कृष्ण	द्वितीया	12:26	विशाखा	17:00	व्यतिपात	27:37	गर	12:26	तुला	11:12
22	सोम	वैशाख	कृष्ण	तृतीया	11:15	अनुराधा	16:45	वरियान	26:5	विष्टि	11:15	वृश्चिक	-
23	मंगल	वैशाख	कृष्ण	चतुर्थी	10:51	जेष्ठा	17:16	परिग्रह	25:10	बालव	10:51	वृश्चिक	17:17
24	बुध	वैशाख	कृष्ण	पंचमी	11:16	मूल	18:34	शिव	24:53	तैतिल	11:16	धनु	-
25	गुरु	वैशाख	कृष्ण	षष्ठी	12:28	पूर्वाषाढ़	20:36	सिद्ध	25:9	वणिज	12:28	धनु	-
26	शुक्र	वैशाख	कृष्ण	सप्तमी	14:20	उत्तराषाढ़	23:13	साध्य	25:50	बव	14:20	धनु	03:14
27	शनि	वैशाख	कृष्ण	अष्टमी	16:41	श्रवण	26:12	शुभ	26:46	कौलव	16:41	मकर	-
28	रवि	वैशाख	कृष्ण	नवमी	19:14	धनिष्ठा	29:17	शुक्ल	27:47	तैतिल	05:57	मकर	15:46
29	सोम	वैशाख	कृष्ण	दशमी	21:46	शतभिषा	....	ब्रहम	28:41	वणिज	08:32	कुंभ	-
30	मंगल	वैशाख	कृष्ण	एकादशी	24:03	शतभिषा	08:14	इन्द्र	29:20	बव	10:57	कुंभ	-

अप्रैल 2019 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	सोम	चैत्र	कृष्ण	एकादशी	06:04	पापमोचनी एकादशी, मूर्ख दिवस
2	मंगल	चैत्र	कृष्ण	द्वादशी	08:26	महाद्वादशी, प्रदोष व्रत, भौम प्रदोष व्रत,
3	बुध	चैत्र	कृष्ण	त्रयोदशी	10:48	मासिक शिव चतुर्दशी व्रत/ शिवरात्रि व्रत, गंगा वरूणा संगम पर स्नान, दमनोत्सव, मधुश्रवा त्रयोदशी,
4	गुरु	चैत्र	कृष्ण	चतुर्दशी	12:47	श्राद्ध-तर्पण इत्यादि हेतु उत्तम चैत्री अमावस्या
5	शुक्र	चैत्र	कृष्ण	अमावस्या	14:20	व्रत-स्नान-दान श्राद्ध हेतु उत्तम चैत्री अमावस्या, आज के दिन गंगा स्नान से सहस्त्र गायों के दान का फल प्राप्त होता है 2075 (विरोधकृत) विक्रमीय समाप्त, अन्वाधान,
6	शनि	चैत्र	शुक्ल	प्रतिपदा	15:27	चैत्र मास शुक्ल पक्ष आरम्भ, चैत्र वासन्तिक नवरात्रारम्भ, विक्रम सम्वत् 2076 (परिधावी) प्रारम्भ, कलश स्थापन, ध्वजारोहण, वर्षपति पूजा, कल्पादि, आरोग्य व्रत, विद्या व्रत, नव सम्वत्सरोत्सव, गुड़ी पड़वा, उगादि, चंद्र दर्शन , वसंत ऋतू
7	रवि	चैत्र	शुक्ल	द्वितीया	16:08	गणगौर, गणगौरी व्रत, सौभाग्य शयन तृतीया, सायं दोलारुढ़ शिव गौरी पूजन, सरहुल (बिहार), मनोरथ तृतीया व्रत, अरून्धती व्रत-पूजन, मन्वादि, राष्ट्रीय चैत्र मासारम्भ, राष्ट्रीय शक सम्वत् 1941 प्रारम्भ,
8	सोम	चैत्र	शुक्ल	तृतीया	16:25	गणगौर, गणगौरी व्रत, सौभाग्य सुंदरी व्रत
9	मंगल	चैत्र	शुक्ल	चतुर्थी	16:19	वरद चतुर्थी, वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (चंद्र अस्त रात 08: 94 बजे)
10	बुध	चैत्र	शुक्ल	पंचमी	15:50	पंचमी, कल्पादि, डोलोत्सव, श्री सूर्य षष्ठी व्रत (सायान्हव्यापिनी षष्ठी में),
11	गुरु	चैत्र	शुक्ल	षष्ठी	14:57	स्कन्द षष्ठी व्रत, श्री अशोक षष्ठी व्रत (प.बं),
12	शुक्र	चैत्र	शुक्ल	सप्तमी	13:39	वासन्ती दुर्गा पूजारम्भ, मध्याह्न कालीन महानिशा पूजा, श्री दुर्गाष्टमी, भवानी उत्पत्ति, अशोक कलिका प्राशन, श्री महाष्टमी 8 व्रत, श्री अशोकाष्टमी, अन्नपूर्णा पूजन
13	शनि	चैत्र	शुक्ल	अष्टमी	11:56	सूर्योदय कालीन श्री दुर्गाष्टमी, भवानी उत्पत्ति, अशोक कलिका प्राशन, श्री महाष्टमी 8 व्रत, श्री अशोकाष्टमी, अन्नपूर्णा पूजन मध्याह्न कालीन श्री रामनवमी व्रत, श्री दुर्गानवमी, श्री राम-जन्म महोत्सव, तारा जयन्ती, चैत्र नवरात्र समाप्त, पुष्य नक्षत्र 08:58 बजे

						से
14	रवि	चैत्र	शुक्ल	नवमी-दशमी	09:49	सूर्योदय कालीन रामनवमी व्रत, श्री दुर्गानवमी, श्री राम-जन्म महोत्सव, तारा जयन्ती, चैत्र नवरात्र समाप्त, पुष्य नक्षत्र 07:40 बजे तक, सूर्य की मेष संक्रान्ति का सामान्य पुण्यकाल सूर्योदय से सूर्यास्त तक, खर (मीन) मास समाप्त, नवरात्र व्रत का पारण, श्री धर्मराज दशमी, रवि दशमी पर्व,
15	सोम	चैत्र	शुक्ल	दशमी - एकादशी	07:20-04:33	कामदा एकादशी व्रत,
16	मंगल	चैत्र	शुक्ल	द्वादशी	03:34	श्री विष्णु दोलोत्सव, मदन द्वादशी, प्रदोष व्रत, हरि दमनोत्सव, वामन द्वादशी, प्रदोष व्रत,
17	बुध	चैत्र	शुक्ल	त्रयोदशी	22:29	प्रदोष व्रत, श्री महावीर जयन्ती (जैन), अनंग त्रयोदशी व्रत,
18	गुरु	चैत्र	शुक्ल	चतुर्दशी	19:29	दमनक चतुर्दशी
19	शुक्र	चैत्र	शुक्ल	पूर्णिमा	16:41	स्नान-दान-व्रत इत्यादि हेतु उत्तम चैत्री पूर्णिमा, चांडक पूजा (प.बं), अन्वाधान, मन्वादि, सर्वदेव दमनकोत्सव, श्री हनुमान जयंती, वैशाख मासीय व्रत-यम-नियमादि प्रारम्भ,
20	शनि	वैशाख	कृष्ण	एकम	14:17	वैशाख कृष्ण पक्षारम्भ,
21	रवि	वैशाख	कृष्ण	द्वितीया	12:26	आशा द्वितीया
22	सोम	वैशाख	कृष्ण	तृतीया	11:15	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (चन्द्रोदय.रा.20.04),
23	मंगल	वैशाख	कृष्ण	चतुर्थी	10:51	-
24	बुध	वैशाख	कृष्ण	पंचमी	11:16	-
25	गुरु	वैशाख	कृष्ण	षष्ठी	12:28	-
26	शुक्र	वैशाख	कृष्ण	सप्तमी	14:20	श्री शीतलासप्तमी व्रत,, कालाष्टमी, भानु सप्तमी
27	शनि	वैशाख	कृष्ण	अष्टमी	16:41	श्री शीतलाष्टमी व्रत, अष्टका, कालाष्टमी
28	रवि	वैशाख	कृष्ण	नवमी	19:14	चण्डिका नवमी व्रत
29	सोम	वैशाख	कृष्ण	दशमी	21:46	-
30	मंगल	वैशाख	कृष्ण	एकादशी	24:03	वरुथिनी एकादशी व्रत सबका,

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
					
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
					
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं। >> Shop Online | Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2350 >>Order Now

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऎश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

>> **Shop Online** | **Order Now**

अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित किया जाता हैं इसलिए कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं। >> Order Now

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

अमोद्य् महामृत्युंजय
कवच
दक्षिणा मात्र: 10900

राशी रत्न एवं उपरत्न



सभी साईज एवं मूल्य व क्वालिटि के असली नवरत्न एवं उपरत्न भी उपलब्ध हैं।

विशेष यंत्र

हमारें यहां सभी प्रकार के यंत्र सोने-चांदि-ताम्बे में आपकी आवश्यक्ता के अनुसार किसी भी भाषा/धर्म के यंत्रो को आपकी आवश्यक डिजाईन के अनुसार २२ गेज शुद्ध ताम्बे में अखंडित बनाने की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के रत्न एवं उपरत्न व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं। ज्योतिष कार्य से जुडे बधु/बहन व रत्न व्यवसाय से जुडे लोगो के लिये विशेष मूल्य पर रत्न व अन्य सामग्रीया व अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Shop Online:- www.gurutvakaryalay.com

अप्रैल 2019 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
07	प्रात: 05:50 से सुबह 08:05 तक	20	प्रात: 05:40 से रात 10:18 तक
09	प्रात: 05:48 से सुबह 09:05 तक	22	प्रात: 05:40 से संध्या 06:46 तक
10	प्रात: 05:46 से सुबह 08:51 तक	27	प्रात: 05:37 से रात 02:40 तक
त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)			
20	संध्या अगले दिन रवि प्रातः 05:37 तक	30	रात्र 11:26 से प्रातः 05:28 तक
21	प्रात: 05:37 से दोपहर 01:58 तक		
रवि पुष्यामृत योग			
14	से प्रात: 05:21 से रात 01:02 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
03	सुबह 10:56 से रात्र 11:57 तक (पाताल)	18	रात 07:26 से अगले दिन प्रातः 06:04 तक(पाताल)
09	प्रातः 01:14 से संध्या 04:07 तक (स्वर्ग)	21	रात 11:53 से अगले दिन दोपहर 11:25 तक (स्वर्ग)
12	दोपहर 01:24 से रात्र 12:53 तक (स्वर्ग)	25	रात 12:46 से देर रात 01:40 तक(पाताल)
15	संध्या 05:46 से अगले दिन प्रातः 04:24 तक (पृथ्वी)	29	प्रातः 08:50 से रात्र 10:05 तक (स्वर्ग)

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- रवि-पुष्यामृत योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित शुभ फल प्राप्त होते हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach …………………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach …………………………………...	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ……………………	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ……………………………	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ………………………………	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach ……………………………………….	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach ……………………………………….	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………...	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach …………………………………….	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach ………………………………	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ……………………………………….	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ……………………………….	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ……………………………………..	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach ……………………………	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach …………….	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach …………………………….	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach …………………………………….	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ………………………………	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ……………………………...	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach …………………….	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach …………………………….	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ……………………………….	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach ……………………………….	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach …………….	3250	शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ……………………………………….	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ………………………….	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach …………...	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach ……………………………	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ……………………………………….	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach …………………………….	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ……………………………………..	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach …………………….	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach …………………………………….	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ……………………….	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach …………………………..	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ………………………..	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ……............................	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach …….................................	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ….........................	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach …............................	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………..	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) ………….	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach …….................................	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) …………………….	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ….........................	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..…………………..…...	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ….......................	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..………………...…………	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……...	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach …..	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………..	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach …….................................	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach …..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) …………………….	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..…………………..…...	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach …..	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..………………...…………	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……...	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach …..................................	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..…………………………...	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach …...	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ………………………………...	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………...	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach ……………………………..	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach …...	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………..	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach ………………………………..	820

वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach ………………………………..	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach ………………………………….	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach ………………………………….	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach ………………………………	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah …………………………	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah ………………………………….	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach ……………………………….	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak ……………………………………	640





उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	**(बैंकोक** पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजवंत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

YANTRA LIST		EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- ❖ पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ❖ लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- ❖ नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ❖ पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- ❖ प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- ❖ प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ❖ अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ❖ ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ❖ पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- ❖ यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ❖ पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- ❖ अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

अप्रैल 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA KARYALAY * BHUBANESWAR *

GURUTVA JYOTISH

Monthly

APR -2019